अल्पमोली संस्करण

यूरोप-यात्रा

एक प्राकृतिक चिकित्सक की

लेखक

विट्ठलदास मोदी
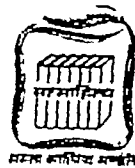
सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन

१९६१

प्रकाशक

मार्तण्ड उपाध्याय

मंत्री सस्ता-साहित्य मंडल,

नई दिल्ली-१

पहली बार : १९६१

अल्पमोली संस्करण

मूल्य : डेढ रुपया

मुद्रक

के० जे० शर्मा

इलाहाबाद लॉ जर्नल प्रेस

इलाहाबाद

प्रकाशकीय

प्रस्तुत पुस्तकके लेखकने कुछ समय पूर्व यूरोपकी यात्रा की थी और तीन महीने घूमकर वहाके कई देशोको देखा था। प्राकृतिक चिकित्सकके नाते प्राकृतिक चिकित्सकोंसे उनका मिलना और उनकी सस्थाओको देखना स्वाभाविक था, लेकिन उनकी दृष्टि उतने तक ही सीमित नही रही। उन्होने और भी बहुत-कुछ देखा।

इस पुस्तकमे उन्होने अपनी यात्राका सविस्तर विवरण प्रस्तुत किया है। निजी अनुभूतिया होनेके कारण ये विवरण बडे ही सजीव और रोचक बन पडे है, शिक्षाप्रद तो है ही।

हम आशा करते हैं कि पाठकोको इस पुस्तकसे बहुत-सी नई बातें मालूम होगी और वे इसे लाभदायक पायगे। इसका अधिकाधिक प्रसार हो, इसलिए इसे सस्ते मूल्यमे निकाला जा रहा है।

—मंत्री

दो शब्द

मैंने प्राकृतिक चिकित्साकी प्रगतिका अध्ययन करने, प्राकृतिक चिकित्सा सम्बन्धी सस्थाओ, शिक्षणालयोको देखने और प्राकृतिक चिकित्साके विशेषज्ञोसे मिलनेके लिए सन् १६५५ मे यूरोपके कुछ देशोकी यात्रा की थी। इस सम्बन्धके सारे अनुभव कलमवद करने की कोशिश मैंने इस पुस्तकमे की है। पर आदमी जो देखना चाहता है, वही तो उसे दिखाई नही देता, और भी बहुत-कुछ वह देखता है और इन सबकी अनुभूति उसे होती है। इस यात्रामे जिन विषयोकी जो अनुभूतिया मुझे गहराईसे हुई वे स्वत कलमकी नोकपर आ गई और कागजपर उतर गई। इनमे कई बडी मजेदार हैं और मेरा खयाल है कि वे पाठकोके लिए बडी रोचक सिद्ध होगी।

इस पुस्तक के बारे मे और क्या लिखू। आप स्वय पढिये। मेरी आशा है कि यह आपको पसद आयगी और आपको आनददायक सिद्ध होगी।

आरोग्य-मदिर
गोरखपुर

विषय-सूची

यूरोप-यात्रा

: १ :

यात्राकी प्रेरणा और प्रस्थान

लदनसे प्रकाशित होनेवाला मासिक 'हेल्थ फॉर ऑल' बीस वर्षोसे पढता आ रहा हू। उसमे प्रतिमास छपनेवाले तीन-चारसौ प्राकृतिक चिकित्सकोके पते और उनकी बढती सख्या देखकर मुझे आश्चर्य होता रहा है। यहा तो लाख कोशिश करनेपर भी पढे-लिखे युवक रोटीका निश्चित जरिया न समझकर प्राकृतिक चिकित्सा सीखना नही चाहते, फिर क्षेत्रफलमे उत्तरप्रदेशसे भी छोटे इग्लैडमे इतने प्राकृतिक चिकित्सक कैसे पलते है ? जब इग्लैडके एक कलमी दोस्तसे यह पता चला कि इग्लैड-के अधिकाश प्राकृतिक चिकित्सकोने अमरीकाके प्राकृतिक चिकित्सा सिखानेवाले कालेजोमे और कुछने स्काटलैड के प्रसिद्ध प्राकृतिक चिकित्सक थामसनके कालेजमे शिक्षा पाई है और दोनो जगह ही शिक्षा चार वर्षतक होती है तो मेरा आश्चर्य और बढ गया। मैंने इग्लैडके अनेक प्राकृतिक चिकित्सकोसे पत्र-व्यवहार द्वारा सपर्क स्थापित किया, उनसे वहाकी प्राकृतिक चिकित्साकी स्थितिके सम्बन्धमे जानकारी प्राप्त की और धीरे-धीरे इग्लैडकी यात्रा करने और इन मित्रोसे मिलकर इग्लैडमे प्राकृतिक चिकित्साके विकासका अध्ययन करनेकी इच्छा बलवती होती गई। इस इच्छाने तब और जोर पकडा जब 'हेल्थ फॉर ऑल' के संपादक डाक्टर स्टैनली लीफने इग्लैड आनेके लिए मुझे निमन्त्रित किया। उनका चिकित्सालय, जिसमे सौ रोगी बराबर रहते है, देखनेकी इच्छा तो थी ही, मैं उनका कालेज भी देखना चाहता था, इसलिए मैं अपनी यात्रासबधी सभावनाओपर विचार करने लगा।

जब यह ज्ञात हुआ कि इग्लैंडके अलावा फ्रासमे भी जलोपचारक हैं और जर्मनीमे कूनेके तो नही, पर उनके समकालीन प्राकृतिक चिकित्सक फादर क्नाइपके ऐसे कई अनुयायी है, जो सफलतापूर्वक चिकित्सालय चला रहे है और स्विट्जरलैंडके जूरिख स्थानमे विर्चर वेनर भी एक अच्छे आहारशास्त्री हैं, जिनका एक अच्छा चिकित्सालय है, तो इन लोगोसे मिलने और इनके चिकित्सालय देखनेकी भी इच्छा हुई ।

इस प्रकार यात्राके लिए मेरे सामने आकर्षणके कई विषय थे । यह आकर्षण अपनी चरम सीमापर तक पहुचा जब प्राकृतिक चिकित्सा-की विधिवत् शिक्षाके लिए एक शिक्षणालयका आरम्भ करनेकी इच्छा मेरे मन मे पैदा हुई । इसका आरम्भ करनेके लिए कुछ शिक्षणालयोको देखना और उनके पाठ्यक्रमका अध्ययन करना आवश्यक था, अत मैंने साहस कर नवम्बर, १९५४ मे पासपोर्टके लिए लिख दिया और दिसबरमे पासपोर्ट आ भी गया । कही जाना टालता न जाऊ, अत मैंने अपनेको बाधनेके लिए यात्राकी तिथि भी निश्चित कर दी ।

मैंने तुरन्त अपने मित्र श्रीगौरीशकर तोशनीवालको, जो बम्बईमे रहते हैं, लिखा कि जिस तरह भी हो अप्रैलमे साउथ हैम्प्टन जानेवाले किसी जहाजमे मेरे लिए जगह ले दें । पहले तो उन्हे किसी इटली जानेवाले जहाज मे जगह मिल रही थी, फिर साउथ हैम्प्टन जानेवाले मालके जहाजमे, पर मैं तो यह यात्रा जहाजी जीवनका भी अध्ययन करनेके लिए करनेवाला था, अत माल ढोनेवाले जहाजमे जगह कैसे लेता और उसमे समय भी तो ज्यादा लगता । आखिर उन्हे एम० एस० वटोरी जहाजमे जो १५ मईको बबईसे छूटनेवाला था, कोई छोडी हुई जगह मिल गई । मैं जगह चाहता था टूरिस्ट क्लासमे, पर मिली फर्स्ट क्लासमे । टूरिस्ट क्लासके साठ पौंड लगते, फर्स्ट क्लास के लिए अस्सी पौंड देने पडे । एक महीनेके विलब और बीस पौंड अधिकको मैंने अपने आलस्य या अज्ञानका जुर्माना समझा और १५ मईको जहाज पकडनेके लिए बबई पहुच गया ।

पासपोर्टके अलावा और भी कागज चाहिए थे, पर उनके लिए मुझे बहुत चिंता नही करनी पडी। जिस एजेसीने मेरे लिए जहाजका टिकट खरीदा था वह मुझे सारी हिदायते भेजती रही। बहुत-से कागज तो उसने मुझे भेजकर दस्तखत करा मगाये और सारे कार्य स्वय कर लिये। जहाज-का टिकट बेचकर कमीशन कमानेवाली मभी एजेंसिया यात्रीकी यह महायता करती है।

: २ :

वंबईसे काहिरा

ववई तीन-चार दिन खूव घूमा, साथ ले चलनेका कुछ सामान कम था, वह इकट्ठा किया और पद्रह तारीखको बारह बजे वदरगाहपर आ गया। वहा वडी भीड थी—पाच-छ सौ यात्री और इसके चौगुने उन्हे विदा देने आये हुए लोग। पहले डाक्टरी जाचके लिए लवी कतार लगी, पर डाक्टर जाच क्या करता था, कार्डपर मुहर लगाता जाता था, अत यह काम शीघ्र ही पूरा हो गया। इसी तरहकी मुहरे दो-तीन जगह और लगी। फिर सामान कस्टम अफसरके पास गया। डर था कि कही ट्रक न खोलने पडे, पर उसने दो-चार सवाल पूछकर शीघ्र ही छुट्टी दे दी और मेरा कैमरा देखकर बोला, "कैमरा ले जानेकी रसीद ले लीजिये, नही तो आप दूसरा कैमरा साथ न ला सकेंगे।"

दो वजे जहाजमे आ बैठा। वहुत-से मित्रोंसे नीचे ही विदाई लेनी पडी। वडी मुश्किलसे चार साथ आ सके। जहाजवाले यात्रियोंके सिवा किसी दूसरेको ऊपर जाने देना नही चाहते। जहाज देखकर तो मैं हैरान हो गया। जहाज क्या है, किसी रईसका मकान—चारो तरफ सजावट, सफाई और रास्तोपर मोटे कालीन, कैबिन वहुत छोटा पर साफ-सुथरा, वढिया कुर्सी, टेवुल, हाथ घोनेका वेसिन, उसपर साबुन और तौलिया, गरम और ठडा पानी, सोनेके लिए साफ मुलायम विस्तर, चार तरहकी रोशनी, आलमारी, जहाजमे पिंगपाग खेलनेकी जगह अलग, तैरनेका वढिया लवा-चौडा हौज, जिमनासियम, पुस्तकालय, भोजनालयमे तीनसौ आदमियोंके एक साथ वैठनेका प्रवध और साफ कपडे पहने सेवाका सारा

प्रबंध करनेवाले स्टुअर्ड। मैंने पढ रखा था कि अमरीकामे इतने बडे मकान होते हैं कि पाच-सातसौ परिवार मजेमे रह लेते हैं। सभवत उनका प्रबंध भी इसी प्रकार चलता होगा।

छ. वजे माइक्रोफोनपर घोपणा हुई—"मेहमान अव जहाजसे उतरने-की कृपा करे, जहाज चलनेवाला है।" मेहमान उतरने लगे। मेरे मित्र भी उतरने लगे, तभी मेरे एक मित्रकी पत्नीने मुझे एक पैकेट दिया।

"क्या है?"

"यह न पूछिये, न इसे यहा खोलिये। पाच-सात दिन वाद आपको इसकी जरूरत पड सकती है। मैं जानती हू कि आप प्राकृतिक चिकित्सक हैं, पर जहाजके भोजनकी एकरसता शायद आपमे इसकी माग पैदा कर दे।"

कुछ खानेकी चीज होगी, यह तो समझमे आया, पर जव इन लोगोने फल, मिठाई और मेवोसे मेरा केबिन भर दिया है तो इनके अलावा और हो क्या सकता है? इस पैकेटमे तरकारियोमे डालनेके मसालोका चूरा था। अनेक मित्रोने उसका व्यवहार जहाजके भोजनालयमे दिलचस्पीसे किया और ऐसा उपहार देनेवालेकी समझपर आश्चर्य किया।

जहाज साढे छ वजे छूटा—बैंड वजने लगा, जहाज किनारा छोडने लगा। नीचे हजारो और ऊपर सैकडोकी तादादमे रग-विरगे रूमाल हिलने लगे। सवका हृदय आर्द्र हो गया, कुछकी इस आर्द्रताने आखोसे राह पाई। ऐसे दृश्य रेलवे स्टेशनपर भी उपस्थित होते है, पर रेलवेके यात्री इतनी लबी यात्रावाले नही होते, जितनी जहाजके, अत बिछुडनेवालोका दु:ख यहा घनीभूत हो उठता है। बैंड बद हुआ कि नीचेसे आवाजे आने लगी—"फिर वजाये।" बैंडवाले उत्साहमे आ गये और उन्होने एक करुण राग छेडी। नीचेके लोग हमारी आखोसे ओझल होने लगे और धीरे-धीरे जहाज भी उनकी आखोसे ओझल हो गया।

जहाजमे पहला काम था लोगोका परिचय प्राप्त करना। इसमे

कोई विशेष कठिनाई नही हुई। आदमीकी दुनिया तो जान-पहचानसे ही बनती है। सभी एक-दूसरेसे परिचित होनेके लिए उत्सुक थे। पुरुषोंसे परिचय तो बात-की-बातमे हो जाता है, स्त्रियोंसे परिचित होनेमे कुछ देर लगती है, पर वे भी तो अपना दायरा बढाना चाहती है, अत एक-दूसरेके द्वारा लोग उनसे भी परिचित होने लगे। एक-जैसे विचारके लोगो-की टोलिया बनने लगी। मेरा वक्त जिनके साथ कटा वे थे बिहार सरकारकी मासिक पत्रिका 'जनजीवन'के सपादक श्रीब्रजकिशोर नारायण और इलाहाबाद म्यूजियमके क्यूरेटर श्रीसतीशचद्र काला। कभी-कभी कराचीसे निकलनेवाली एक सिने पत्रिकाके सपादक भी हमारे टबुलपर आ जाते थे। उर्दू शायरीके शौकीन थे, उन्हे बेशुमार शेर याद थे। बातचीतमे दो-तीन वाक्योंके बाद कोई-न-कोई शेर सुना ही देते थे।

यात्रियोमें छात्रोकी सख्या अधिक थी, कुछ व्यापारी थे और कुछ घुमक्कड। छात्रोमें जहा डाक्टरी, इजीनियरिंग आदिमें विशेषता प्राप्त करनेके लिए जानेवाले थे वहा इन विषयो या किसी अन्य विषयकी प्रारभ-से ही शिक्षा लेनेके लिए जानेवाले भी थे। हिंदुस्तानके सभी प्रातोंके लोग तो थे ही, ऐंग्लोइडियन, अग्रेज, जर्मन, अरब, यहूदी भी थे। छात्र पदाकाक्षी थे, अत वे सारे वातावरणको जानदार बनाये रखते थे। वे अपना समय विशेषत खेलोमे, बातचीतमे और पढनेमे लगाते थे। यहा शराबखानेमे बैठनेवालो, सिगरेट फूकते रहनेवालो और ताश खेलते रहनेवालोकी भी कमी नही थी। हर दूसरे दिनकी शामका वे इतजार करते थे जब बॉल-डास होता है और शराब कमाल दिखाती थी। जहाजपर शामको एक दिन सिनेमा दिखाया जाता है और दूसरे दिन नाच होता है।

जहाज पद्रह तारीखको चलकर सत्रह तारीखको कराची पहुचा। कराची शहर देखा। पहले मैंने देखा नही था। देखनेवाले बताते है कि इसकी श्री जैसे नष्ट हो गई है। फिर जहाज अदन ठहरा। अदन भी मैंने देखा। एशियाके दो देशोंके शहरोमें सभवत बहुत अतर नही

होता—थोडे अमीर और बहुत-से गरीब, एक ही तरहका तौर-तरीका। जहाजके रुकते ही लोग अदन शहरमे पहुचे और बाजारोमें भर गये। यहा लोगोने घडियां, कैमरे, कलमे और वे सब चीजे खरीदी, जिनपर हिंदुस्तान और पाकिस्तानकी सरकारोने ड्यूटी लगा रक्खी हैं। ये चीजे यहा प्राय दो-तिहाई दामोमें मिल जाती हैं।

जहाज चले एक सप्ताह हो गया, पर इसकी सुख-सुविधासे सामजस्य स्थापित करनेमे अधिक कठिनाई हो रही है।

जहाज स्वेजमें पहुचनेवाला है। वहासे काहिराकी यात्रा करनी है। उम्मीद है, मिस्रके विगत वैभवके दर्शन होगे तथा उसकी हजारो वर्ष पुरानी सभ्यतासे परिचय।

आज तो यहा जहाजपर ईद मनाई जा रही है। साढे दस बजे नमाज पढी गई है और सभी हिंदू-मुसलमान-ईसाई एक-दूसरेसे गले मिल रहे हैं।

: ३ :

प्राचीन सभ्यताके केंद्र मिस्रमें

जहाज स्वेजमें २४ मईकी रातको पहुचनेवाला था। उसके पहले एक नोटिस लगी कि "स्वेजमे काहिरा और वहासे पोर्टसईदकी यात्रा होगी तथा वहाके दर्शनीय स्थान दिखाये जायगे। यात्री स्वेजमे उतार लिये जायगे और जहाज जब पोर्टसईद चौबीस घटेके बाद पहुचेगा तब वहा उन्हे जहाजपर पहुचा दिया जायगा। खर्च होगा साढे नौ पौंड।" साढे नौ पौंड कम नही होते—लगभग १२५ रुपये, पर अब जहाजपरकी आरभिक चहल-पहल, मिलना-जुलना कम हो गया था और दस दिनोंके जहाजके एकरस जीवनसे ऊब भी पैदा हो गई थी, इसलिए मैंने सोचा चलो, चौबीस घटे जमीनपर तो बीतेंगे, साथ ही मिस्रकी प्राचीन सभ्यताके प्रतीक वहाके पिरामिड और स्फिक देखनेकी भी बडी इच्छा थी। पिरामिडोंके बारेमें तो बचपनसे ही पढता आ रहा हू। आज भी इस सबधके लेख देखकर पढ जाता हू और हमेशा यह चीज रहस्यमय और गौरवशाली लगी है। मैंने सोचा, जुआ ही सही और १२५ रुपयेकी बाजी लगा दी।

जहाजके स्वेजमें पहुचते ही यात्रा करानेवाले एजेट जहाजमें आ पहुचे और पासपोर्ट वगैरह देखनेकी आरभिक कार्रवाई होने लगी। रातके आठ बजे हमे जहाजसे उतारा गया। तृतीयाकी रात्रि थी—अधेरी रात। जहाजसे पानीतक करीब पचास फुट नीची सीढी लटक रही थी जिसका सिरा मोटरबोटवाले पकडे हुए थे। हवा कुछ तेज थी, जिससे मोटरबोट बुरी तरह हिल रही थी। यात्री उतरने लगे और मोटरबोटवाले हाथ पकडकर उन्हे उतारने लगे। मैं जल्द ही उतर गया और उतरने-

वालोका तमाशा देखने लगा। सीढीपर लगी वल्वोकी कतार और जगमग करती जहाजपरकी रोशनी दीपावलीका-सा आभास दे रही थी। डेकपरके सैकडो यात्री मोटरवोटपर उतरनेवाले यात्रियोका लड-खडाना-सभलना देखकर मुस्करा रहे थे। कुल यात्रियोंके, जो पैंतीस थे, उतरनेमे आधा घटा लगा। उन्हे मोटरवोट लेकर वढ चली। जहाजकी रोशनी दूर हो गई और मोटरवोट अधकारके घेरेमें आ गई। उसकी रास्ता देखनेकी आख विल्लीकी आख-सी लग रही थी, जो कभी जलती, कभी वुझती रास्ता खोज रही थी। इस समय हल्की ठडक हो गई थी, जो चलती हवासे मिलकर वडी अच्छी लग रही थी।

नौ वजे मोटरवोट किनारेपर पहुची। हम लोग फाटकपर आये। वहा खडी पुलिस हमें गौरसे देख रही थी। पुलिसका एक आदमी तो लगता था जैसे किंगकागका भाई हो, पूरा जिन्न। मेरा सिर तो उसके पेटके पासतक ही पहुचा। क्या यहा ऐसे आदमी वहुत होगे ?

घाटसे निकलनेपर काहिराके लिए यात्रा कारसे शुरू हुई। कारे काली साफ समतल सडकपर भागने लगी। आरभके कुछ मकान तो हिंदुस्तानके-से थे, पर वे शीघ्र ही समाप्त हो गये और हम लोग एक नये वसे शहरमे आ गये—छोटी-छोटी दोमजिली अमरीकी शैलीकी इमारते, वडे-वडे मैदान, सडकके दोनो तरफ वृक्ष। यह सव कुछ पद्रह मिनटमे ही समाप्त हो गया और हमारी कारे निर्जन स्थानमे दौडने लगी।

सवासौ मीलकी यात्राकर हम रातके वारह वजे काहिरा पहुचे। काहिरा ववईका दूसरा भाई ही है—अधिक सुकुमार, अधिक सुदर। सुकुमार इसलिए कि इसकी प्राय सभी इमारते नई है, और सुदर इसलिए कि इसकी हर खास सडकपर दोनो तरफ वृक्ष है और जगह-जगह पार्क। सारा काहिरा जाग रहा था। सडको, वाजारो और दुकानोमे खूब चहल-पहल थी। काहिरामें वहुतसे नाइट क्लव है। ये एक तरहके थियेटर है, जहा नाच-गाना होता रहता है। ये रातको एक-दो वजे वद होते है, तभी काहिराके लोग सोते है

और गो कि सूरज सुबह पाच बजे ही निकल आता है, पर ये दस बज उठते हैं।

हमें एक होटलमें उतारा गया और सुबह सात बजे फिर कारसे यात्रा शुरू हुई। हमें बताया गया कि हम पिरामिड देखने जा रहे हैं। कारने नील नदी पार की—पुलके दोनो ओरके फाटक दो-दो शेर बना रहे थे। ये काले पत्थरके बने थे, जो बैठे दूरतक देख रहे थे।
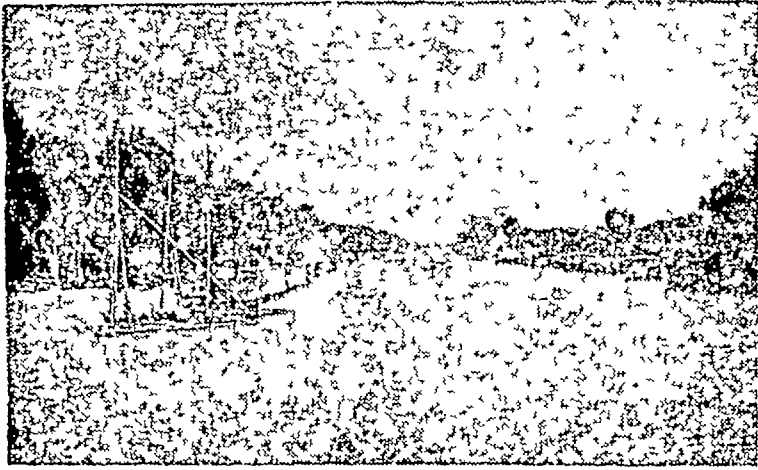
नील नदी

पुलसे एक मीलकी दूरी तय करनेके बाद हमे कारोंसे उतारा गया और अब यात्रा ऊटोपर शुरू हुई। आधे घटेके बाद ऊट ऊचाईपर चढने लगे और हमें पिरामिड दिखाई देने लगा—पहले एक, फिर तीन। मिस्रमें कुल ग्यारह पिरामिडें हैं, जिनमेंसे तीन हमारे सामने थे। सबसे बडा ४८० फुट ऊचा है और तीस एकड जमीन घेरे हुए है। पिरामिड चौकोर होते हैं जो जडके ऊपरसे छोटे होते हुए सिरेपर केवल चोटीसे रह जाते हैं। यह सबसे बडा पिरामिड दस वर्षोंमें बना था। दस वर्ष इसके लिए पत्थर

इकट्ठा करनेमे लगे थे और दस वर्ष ही इसकी नीव रोपनेमे। यह पिरामिड सौ-सौ, दो-दोसौ मनके पत्थरोका बना है। आश्चर्य होता है कि इतने वडे पत्थर जब क्रेन नही थे तो लाये कैसे गये होगे। ये पिरामिड सालके केवल अगस्त, सितवर और अक्तूबर महीनोमे वनते थे, जव नील-मे वाढ रहती थी और ये पत्थर नावोद्वारा पिरामिडतक पहुचा दिये जाते थे। ऊपर पहुचानेके लिए वने पिरामिडको बालूसे ढकते जाते थे और पत्थर बालूपरसे घसीटकर ऊपर पहुचाते थे।

जो वडा पिरामिड हम देख रहे थे वह चोपसका बनवाया हुआ है। यह ईसासे ६३० वर्ष पहले बना था। पिरामिड एक तरहकी कब्र है—राजा और उसके परिवारवालोकी कब्र। राजा या रानीके मरनेपर जो कुछ भी उसका होता था उसके साथ कब्रमे ऐसी दशामे रख दिया जाता था कि सव कुछ ठीक रहे। शवपर कोई ऐसा मसाला लगा दिया जाता था कि वह सडे नही और उसे आदमीकी शक्लके एक काठके बक्समे रक्खा जाता था, फिर उसे एक खालिस सोनेके वक्समे, फिर ऐसे ही दूसरे और तीसरे वक्समे, फिर सोनेके पत्तरसे मढे काठके एक चौकोर वक्समे और तव उस वक्सको एक-एक कर दो बक्सोमे। वक्सोपर तस्वीरे उत्कीर्ण होती थी। दूसरे और तीसरे वक्सोका वजन पाच-पाच मन होगा। आखिरी वक्स बीस फुट लबा और इतना ही चौडा तथा ऊचा होगा। हर वक्सके पास मनो सोना और जेवरात, राजाके वैठनेका सिहासन, उसकी खाट, कपडे, चप्पले, छडिया, हथियार, शृगारका सामान, खाने-पीनेके बर्तन आदि रखे जाते थे। यही नही, देवी-देवताओकी मूर्तिया, फल-तरकारियोके वीज तथा अन्न भी रखते थे। कल्पना यह थी कि मरकर आदमी दूसरा जीवन शुरू करता है और उसके शुरू करनेके लिए इन सामग्रियोकी जरूरत होती है। इस प्रकार राजा या रानीके साथ करोडोकी सम्पत्ति गाड दी जाती थी और रास्ता वद कर दिया जाता था। पत्थर-पर-पत्थर रख दिये जाते थे और फिर सीमेंट-

जैमी किसी चीजसे प्लास्टर कर ऊपरसे सारे पिरामिडपर सगमरमर-सा कोई कीमती पत्थर जड दिया जाता था।

जवतक राजा या उमके वशज रहे, पिरामिडोकी रक्षा होती रही, फिर लोग भूल ही गये कि इनमे क्या है। कुछ आक्रमणकारियोने इन्हे तोडनेकी कोशिश की, पर वे सफल नही हुए। ज्यादा-से-ज्यादा इनपर जडे पत्थर उखाडकर ले जा सके, जिन्हे उन्होने अपने महलके फर्श या दीवारोपर जडवा लिया।

भीतर धन है, इसका पता वहुत पहले चल गया था, पर खुदाई पचास वर्ष पहले ही शुरू हो सकी और धीरे-धीरे सारा सामान सुरक्षित निकल आया। इनमें ईमाके तीन हजार सातसौ वर्षसे पहले मिस्रमें पनपी सभ्यताका इतिहास है। फिर तो सभी पिरामिडोके अदर पहुचा गया और सव जगह सामान मिला और सभीमे रक्खे शव। शव जरा भी नही सडे है, उनका चमडाभर सूख गया है। ये शव, जिन्हे ममी कहते है, और इनके साथ रक्खा सामान काहिराके अजायवघरमे सुरक्षित है, जहा देश-विदेशमे इन्हे देखने आनेवाले यात्रियोकी भीड लगी रहती है।

इस पिरामिडसे एक फर्लांगकी दूरीपर दूसरा पिरामिड है और उससे थोडे फासलेपर तीसरा। दूसरे पिरामिडकी वगलमें एक मूर्ति है, जिसे स्फिक कहते है। इसका मुह है मनुष्यका—बुद्धिका प्रतीक, सिर स्त्रीका—सौंदर्यका प्रतीक और शरीर सिहका—शक्तिका प्रतीक। शरीर इतना वडा है जितना पाच-सात हाथियोका मिलाकर होगा। शेर वैठा हुआ है, दोनो पजे सामने है और वह सिर उठाकर सामने देख रहा है। जैसा वडा शरीर है वैसे ही लवे-चौडे और ऊचे चवूतरेपर यह स्थित है। अवतक यह मिट्टीसे दवा पडा था, केवल पद्रह वर्ष पहले मिट्टी हटानेपर यह दिखाई देने लगा है। ठीक इसकी वगलमे सूर्य-मदिर है। छत इसकी ढह चुकी है, केवल कुछ खभे खडे है, जो चौकोर है। ये पत्थरोको जोडकर वनाये गए है, पर दो पत्थरोके वीचमे मुश्किलसे एक सूतकी जगह होगी।

पता नही, किस मसालेसे जोडकर दो पत्थरोको एक-सा किया गया था।

पिरामिडोमे मिली चीजे बताती है कि मिस्रकी सभ्यता भी भारत-जितनी ही पुरानी है। भारतकी पुरातत्त्वसबधी चीजोको देखनेसे भारतका
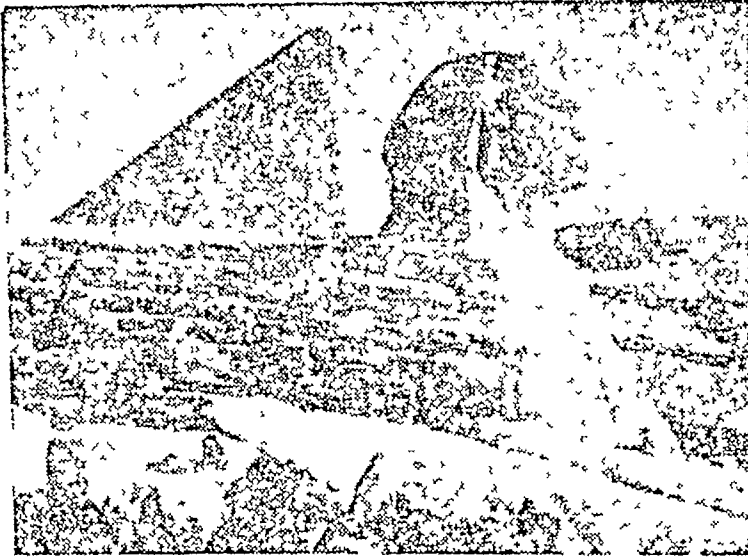
पिरामिडके सामने स्फिक्स

दार्शनिक दृष्टिकोण स्पष्ट हो जाता है जिसने कलाको बडी सजीवता प्रदान की थी। मिस्रमे कुछ चित्र भी मिले है जो केवल सिरके है—वे केवल चित्र है, भाव उनमे कम-से-कम है। अजता, एलोरा और नालदाके चित्रो, मूर्तियो तथा स्थापत्य-कलामे एक कमनीय सौंदर्य है, पर मिस्रने केवल विस्तारको महत्त्व दिया है। यहाकी मूर्तियोमे गठन है, तज्जनित सौंदर्य भी, पर भाव नही, इसलिए वे सजीव नही लगती, न लगता है कि वे अभी बोल उठेगी और न उनके बीच आदमी यह अनुभव करता है कि वह जीवनके बीच है। यहा केवल आश्चर्य होता है, कुछ श्रद्धाजनित भाव पैदा होते है, पर सौंदर्यकी भावना जाग्रत नही होती। एलोराकी मूर्तियोके सामने घटो खडे रहनेकी इच्छा होती है, उन्हे बार-बार देखने-

को जी चाहता है, पर इन्हे देखकर मनुष्य जल्द ही अघा जाता है, यहासे चल देना चाहता है।

इन पिरामिडोके मूलमे मनुष्यका लोभ ही तो है। जीवनभर वह लोभसे आक्रात रहा और लोभको लेकर ही वह मरा। सोना मिस्रमे कही नही होता। मिस्रके लोग अन्य देशोको जीतकर ही सोना एकत्र करते
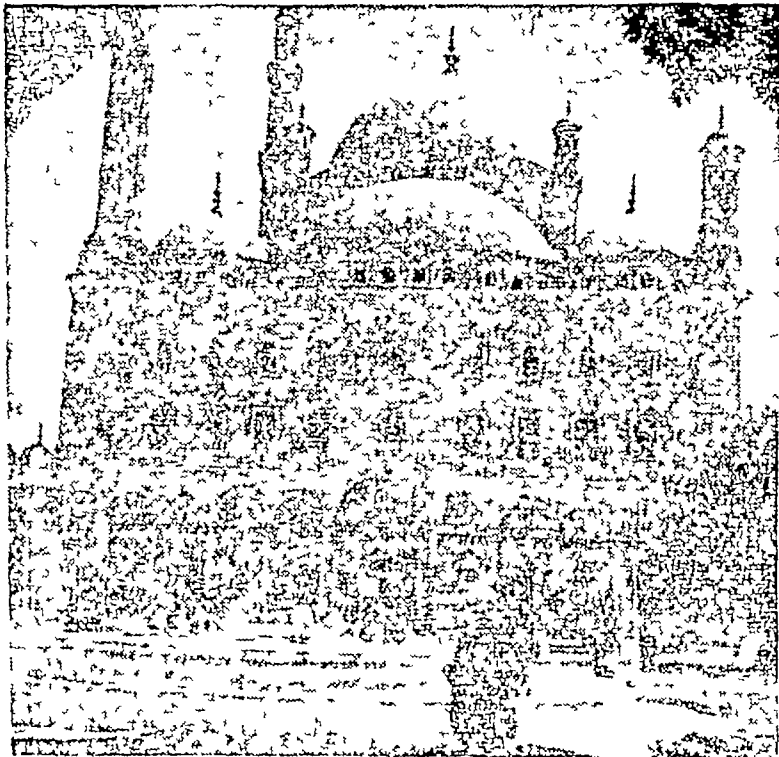
मुहम्मद अलीकी मस्जिद

थे, फिर मरते वक्त इसे कैसे छोडते ? साथ ले जानेकी, दूसरोको उससे महरूम करनेकी उन्होने अच्छी तरकीब निकाली। फिर भी यह सब कुछ देखने

लायक था। मनुष्य कबसे बनता, बिगडता, सभ्य-असभ्य कहलाता रहा है।

पिरामिडोके अलावा काहिरामे हमने मुहम्मद अलीकी मस्जिद देखी जो आठसौ वर्ष पहले बनी थी और आज भी नई-सी लगती है। इसकी इमारत बहुत विशाल है। इसको बनानेमे उस समय बारह लाख पौंडकी कीमतका मिस्री सिक्का लगा था। अदर नमाज पढनेका कमरा तीनसौ फुट लबा और इतना ही चौडा है। फर्शपर कीमती कालीन बिछे है।
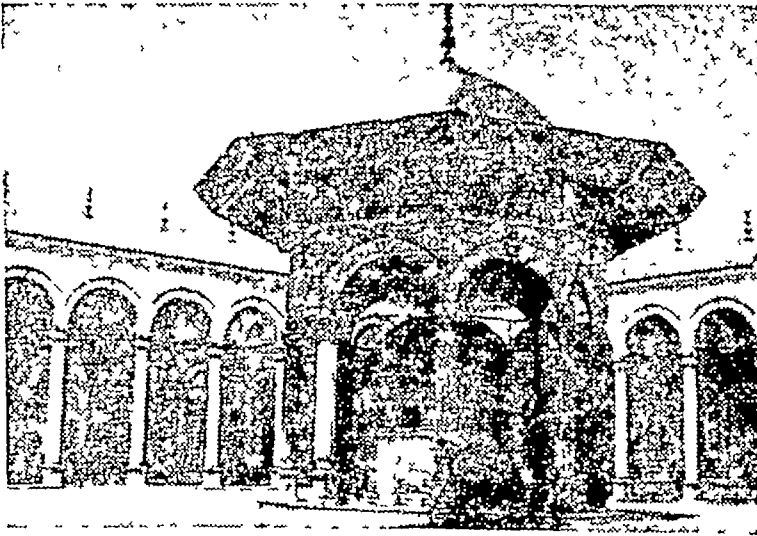
मुहम्मद अलीकी मस्जिदके अदरका एक दृश्य

छतसे खूबसूरत भाड और फानूस लटक रहे है, जिनकी सख्या एक हजार है। कभी इनमे तेल जलता था, पर अब बिजलीके बल्ब जलते है। हमें दिखानेके लिए रोशनी की गई—दिनमे यहा जो अधेरा हो रहा था वह दूर हो गया, फर्शके कालीन ज्यादा खूबसूरत लगने लगे और दीवारोपर सोनेके अक्षरोंमे लिखी कुरानकी आयते सोने-सी लगने लगी।

यहा फारूक खान्दानका मकवरा भी वडा सुदर है। यह छोटा, पर ताजमहलकी शैलीपर वना है। इसमे कई कब्रे है और उनपर छोटा-सा खूवसूरत वुर्ज। कब्रे अलग-अलग तरहकी है। ये कब्रे मरनेके पहले ही वनवा ली जाती थी। सगमरमरकी इन कब्रोके भीतर शव लिटानेके लिए जगह छोड दी जाती थी। शाह फारूकने भी अपनी कब्र वनवा रक्खी है।
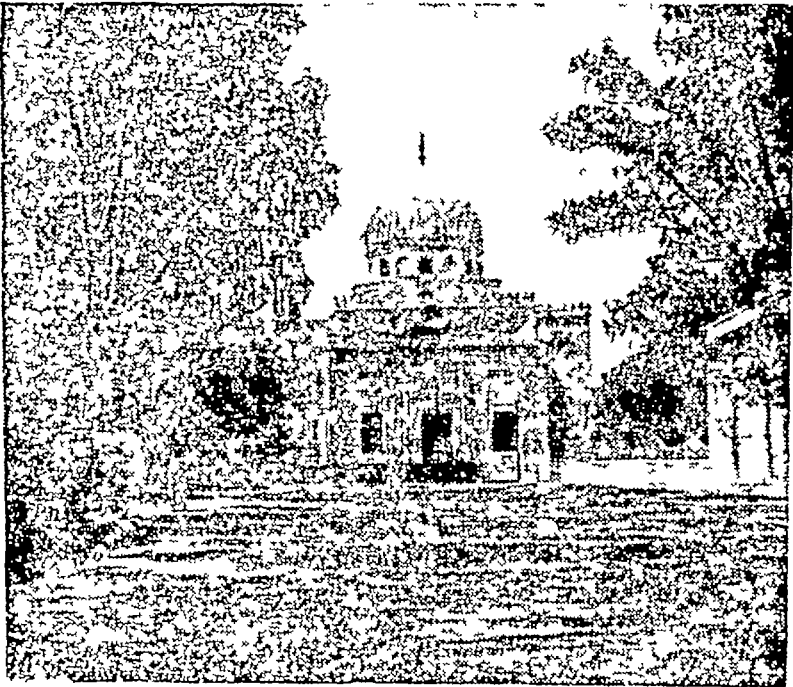
फारूक खान्दानका मकवरा

ये विचारे गद्दीसे हटा दिये गये है। पता नही, यह उन्हे नसीव होगी या नही।

इन्ही शाह फारूकके दो महलोंके पाससे भी हम गुजरे। एकको तो

चहारदीवारी ही डेढ मील लबी है। फाटकपर फौजका पहरा था, पता नही, अदर क्या होता है। आदमी कितने वडे-वड़े खयाली और जमीनपर महल वनाता है, पर वे कितनी जल्दी ढहते और कितनी जल्दी छोडने पडते है।

यह सव देखकर हम एक वजे होटल वापस आये। वहा भोजन किया, कुछ देर आराम और दो वजे हम पोर्टसईदके लिए चल पडे।

: ४ :

पोर्टसईद पहुंचे

कारोने शहर छोडा और वे खेतोंके बीच आ गई। नीलकी एक नहर सडकके साथ बहने लगी। नहरमें जगह-जगह किश्तिया और छोटे-छोटे जहाज थे। इस नहरकी वजहसे दोनो तरफ दूर-दूरतक हरियाली है। नहर केवल पद्रह वर्ष पहले बनी है और नील नदी केवल बीस वर्ष पहले बाधी गई है वरना वह केवल काहिराको तबाह करनेके लिए थी। नीलके सिवा मिस्रमे कुछ है भी नही। इतने बडे देशमें नदिया अधिक न होनेके कारण अधिकतर तो रेगिस्तान है, पर नहरे बहुत अधिक भागको हरा बना रही है। सडकके दोनो तरफ चीडकी किस्मके पेड सारी १२० मीलकी सडकपर खडे थे।

सडकसे यहाका ग्राम्य जीवन दिखाई दे रहा था। खेतोमें बैल और ऊटोंसे जुताई हो रही थी। गावोंके मकान हिंदुस्तानके मकानोसे अच्छे है। कपडे भी किसानोके तनपर पूरे है। ये गलेसे लेकर पैरतक घेरदार लबा लबादा पहनते है। स्त्रिया भी कुछ वैसी ही चीज पहनती है, पर उनके सिरपर ओढनी होती है। स्त्रियोंके कपडे काले होते है और पुरुषोंके सफेद।

केवल शहरकी स्त्रिया पर्दा करती है। यो तो उनके मुहपर बुर्का रहता है, पर वे उसे प्राय हटाये ही रहती है, न भी हटाये तो वह हटा-सा ही रहता है, क्योकि वह बहुत पतले सूतकी जालीका होता है। सारा मुह स्पष्ट दिखाई देता है। जालीमे करीब एक इच चौडी पट्टी होती है, जो नाक और आखके नीचेके हिस्सेको ढकती है। पुरुष अग्रेजी लिबास पहनते

है। उनकी देखा-देखी कुछ स्त्रिया फ्राक जितनी नीची स्कर्ट और सिरपर फेज टोपी पहनती है। ये पुरुषोके साथ बैठकर सिगरेट पिया करती है। सडकके पास गावके बाजार भी कई आये, जहा खरबूजे, तरबूज, खजूर, टमाटर और अन्य खाद्य सामग्री बिक रही थी।

करीब सौ मील चलकर नहर सडकसे हट गई। सडकके दोनो ओर रेगिस्तान चलने लगा तभी इस्माइलिया शहर आया। इस शहरका नाम स्वेजसबधी खबरोके साथ पत्रोमे आया करता है। यहीं अग्रेजोकी फौजी छावनी है, जिसके बलपर वे स्वेजपर अपना कब्जा जमाये हुए है और प्राण-पणसे यह कब्जा बरकरार रखनेको उद्यत है। इस्माइलिया शहर भी इन अग्रेजोके ही अधिकारमे, उनकी जो आबादी है, उसके उपयोगके लिए है।[1] यह शहर छोटा पर बडा साफ-सुथरा है। यहा भी काहिराकी भाति सडको-के दोनो तरफ पेड है। पेड करीनेसे कटे हुए है—किसी सडकके गोल तो किसीके चौकोर और किसीके आयताकार।

इस्माइलियाके बाद स्वेज नहर हमारे साथ चलने लगी। यह सीमेट-की बनाई गई है, जिससे पानी नीचेकी रेतमे न चला जाय और इतनी गहरी है कि एक जहाज आसानीसे बीचसे जा सके। छोटे दो भी जा सकते है या आ-जा सकते है, पर बडे जहाजोके लिए रास्ता एक ही ओरका है। यह रास्ता प्रथम महासमरके पहले बना था। इसके पहले हिंदुस्तानसे इग्लैड जानेवाले जहाज अफ्रीकाकी परिक्रमा करके जाते थे और रास्तेमे साढे तीन महीने लगते थे जबकि अब केवल पद्रह-बीस दिन लगते है।

छ बजे हमारी कारे पोर्टसईद पहुची। जहाज किनारेपर ही लगा था। वहासे सडकतक एक पुल-सा बना दिया गया था, जिसपरसे होकर

---

[1] स्वेजपर अब पूरी तरह मिस्रका अधिकार है। उसका राष्ट्रीय-करण हो गया है।

जहाजपर आसानीसे पहुचा जा सकता था, पर मैं तुरत जहाजपर नही गया। पोर्टसईदमे घूमता रहा। यह भी नया शहर है, बहुत बडा बाजार और नई अमरीकी शैलीकी इमारते। यो तो मैंने काहिरा और इस्माइलियामे भी चमडेकी चीजे बिकते देखी थी, पर यहा अधिक थी। यहा ऊटके चमडेके अटैची केस वगैरह बहुत आते है, जो अच्छे बने होते है।

सात बजे जहाजपर मै आ गया। वहासे सारा पोर्टसईद बिजलीकी रोशनीमे जगमगाता दिखाई दे रहा था। साढे सात बजे भोजनकी घटी बजनेपर मै भोजनालयमे चला गया और इसी बीच जहाज चल पडा।

: ५ :

जिब्राल्टरसे लंदन

जहाजके पोर्टसईद छोडते ही गर्मी कम होने लगी और जिब्राल्टर पहुचनेपर तो हमे ऊनी कपडे निकालने पडे। अब जहाजकी यह यात्रा तीन-चार दिनोमे ही समाप्त होनेको थी। जहाजपर खेलोकी प्रतियोगिताए होने लगी थी और नित्य उनके फल जहाजके सूचनापट्टपर लगा दिये जाते, जिनकी लोग उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा करते रहते।

यात्राके तीन दिन बाकी रहनेपर फैन्सी ड्रेस प्रतियोगिता हुई। लोगोने तरह-तरहके स्वाग बनाये—भविष्यवक्ता, समुद्री डाकू, मोतीकी पुत्री, पान-बीडीवाला, हज्जाम आदि। कराचीकी एक महिला दुलहन बनी और उन्होने अपनी किसी सहेलीको दूल्हा बनाया। ताज्जुब होता था कि दूल्हा-दुलहनके उपयुक्त इन्हे इतना सही लिबास कहासे प्राप्त हो गया। कुल चालीस स्वाग थे, जिनमेसे तीन श्रेष्ठ स्वागोको जहाजके कप्तानने इनाम दिये।

दूसरे दिन शामको कप्तानने हमे भोज दिया। भोज तो रोज ही होता रहता था, पर आजकी विशेषता यह थी कि जो जिस देशका था उसके टेबुलपर उसी देशका झडा लगा हुआ था। कुल बीस-पचीस देशोके झडे रहे होगे। अपने टेबुलपर हम चारो भारतीय थे। अपने मध्यमे अपना राष्ट्रीय झडा देखकर हमे बडी खुशी हुई। हमने उसे प्रणाम किया और यह महसूस किया कि हम यहा देशके नामसे ही जाने जाते है और हमे प्रत्येक कार्य और व्यवहार अपने देशके गौरवके अनुरूप ही करना चाहिए।

दूसरे दिन सुबह ही जहाज साउथैम्पटन पहुचनेवाला था। दो हफ्ते

जहाजमे रहते-रहते वह अपना घर-सा लगने लगा था, सगी-साथी सगे-से। थोडा दु ख-सा हो रहा था कि अब इन सबको शीघ्र ही छोडना पडेगा।

जहाजके कर्मचारियोसे भी आत्मीयताका सबध जुड गया था। वास्तवमें ये सारे पोलिश कर्मचारी बडे ही कर्तव्यपरायण हैं, बडी मेहनतसे काम करते हैं और इनके व्यवहारमें बडी मधुरता होती है। शुरूसे आखीरतक ये हमें अपना प्रिय मेहमान मानते रहे हैं और हर यात्रीकी हर सुविधाका प्रेमपूर्वक ध्यान रखते रहे हैं।

पोलैंडसे ये अपना जहाज लेकर बबईके लिए चलते हैं। आनेसे जानेतकका भोजनका सारा सामान तथा सभी अन्य आवश्यक सामग्री ये पोलैंडसे ही लेकर चलते हैं। कर्मचारियोमे पोलैंडवासियोंके अतिरिक्त कोई अन्य देशीय नही है। तीनसौ कर्मचारियोमें पाच-सातको छोडकर कोई अग्रेजी नही जानता और दस-पाच ऐसे भी है जो अग्रेजीके टूटे-फूटे शब्दोंके सहारे अपना काम चला लेते हैं। आपसमे ये पोलिशमे ही बात करते हैं। पोलिश यात्री पाच-सात ही होगे, पर भोजनके समय बजनेवाले रेकार्डोंमे एक-तिहाई ये पोलिश रेकार्ड जरूर बजाते है और एक-तिहाई अग्रेजी तथा एक-तिहाई हिंदुस्तानके फिल्मी गानोंके रेकार्ड।

३ जूनको सुबह जहाज साउथैम्पटन पहुच गया। जहाजपर बराबर समाचार आते रहे हैं कि इग्लैंडमें रेलकी जबरदस्त हडताल है। लोगोमें बडी घबराहट थी कि साउथैम्पटनसे लदन कैसे पहुचा जायगा, पर आज सुबह समाचार मिला कि साउथैम्पटनसे बसका इतजाम रहेगा। किराया लदनतकका २२ शिलिंग होगा। रेलसे किराया केवल ११ शिलिंग होता। लोगोने खैर मनाई कि लदन पहुचनेका इतजाम तो हो गया। दूना किराया लगनेपर भी यात्राका समुचित प्रबध हो जाना क्या कम था?

जहाजके साउथैम्पटन पहुचते ही इग्लैंड सरकारके पुलिस कर्मचारी जहाजमे दाखिल हुए और उन्होने हमारे पासपोर्ट देखे। फिर लोग जहाजपरसे धीरे-धीरे उतरने लगे और किनारेपर खडे सैकडो दर्शकोमेंसे अपने

मित्रोको खोजने लगे, जो उन्हे लिवाने आये थे। जिस किसीको कोई साथी मिल जाता वह खुशीसे नाच उठता।

जहाजपरसे हमारा उतरना ही काफी नही था, हमारा सामान भी उतरना था। हम बदरके प्रतीक्षागृहमे आये। इतना बडा प्रतीक्षागृह देखकर तबीयत खुश हो गई। साफ और सुदर इतना कि किसी नवाबका महल भी क्या होगा। जगह-जगह बैठनेको गद्दीदार बेचे, एक तरफ लिखनेका कमरा, दूसरी तरफ नाश्तेके सामानकी दुकाने जिनपर औरते दौड-दौडकर काम कर रही थी और लोगोको गरमागरम चाय और काफी दे रही थी। प्रतीक्षालयके बीचमे तीन-चार बैंक, टिकटघर, डाकखाना और टेलीफोनघर थे।

लगभग तीन घटेमे सामान उतरा और उसके कस्टम अधिकारियोके सामने पहुच जानेपर हम अपने सामानके पास आये और सामान ढूढ-ढूढकर कस्टमके अधिकारियोको दिखाने लगे। उन्होने हमे एक सूची दी और पूछा—

"देखिये, इस सूचीकी चीजे तो आपके पास नही है?"

सूचीमे सिगरेट, कपडे, खानेका सामान, कैमरा और जवाहरात थे। ये वे चीजे है जिनपर सरकार यहा बहुत कडा कर लगाये हुए है।

मैने कहा—"केवल कैमरा है।"

"दिखाइये।"

मैने कैमरा निकाला।

"इसे यहा बेचेगे तो नही?"

"इसकी कीमत यहा और भारतमे एक ही है, फिर बेचनेकी क्या बात है?"

"खैर, जब आप इग्लैड छोडे तो कस्टमवालोको इसे दिखाकर नोट करा दे, मै आपके कैमरेका नबर नोट किये लेता हू।"

इस प्रकार कस्टमसे छुट्टी मिली और हम लोग बसपर आ बैठे। हमारा सामान साथकी एक लारीपर लदा और बस लदनकी ओर बढ चली।

: ६ :

लंदनमें

सुवहने ही वदली थी, कुछ वूदावादी भी हो रही थी, पर इस समय वादल छटकर धूप निकल आई थी। शीघ्र ही वस साउथैम्पटनमे निकलकर गावोंसे गुजरने लगी। चारो तरफ हरियाली थी। चरागाहो-

लदनके वाहर गावका एक मकान
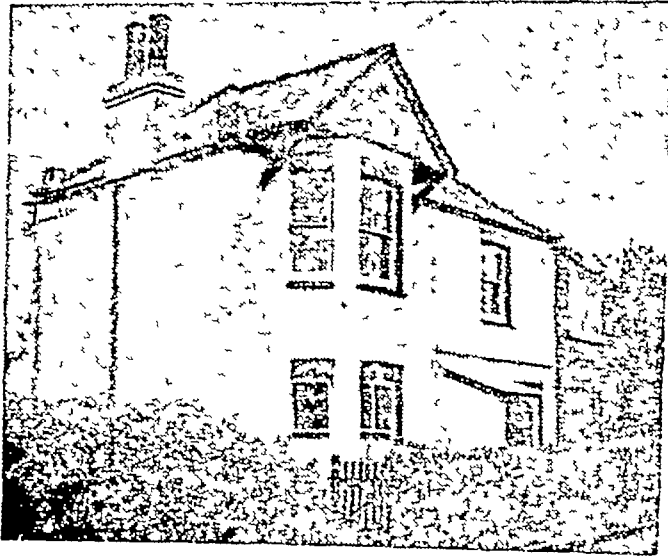
में स्वस्थ सुदर गाये और घोडे चर रहे थे। पोखरोमे वतखे तैर रही थी। मैं वडे मौकेपर इग्लैड पहुचा था। अभी एक महीने पहलेतक किसी पेड-

पर एक पत्ती भी नही थी, पर बसतने इन्हे इस समय हरा बना दिया था। पृथ्वी भी हरियालीसे पटी पडी थी, पर हर जगह लगता था कि खास सफाई की गई है और पेड-पौधोको बहुत सवारकर रक्खा गया है। सडकपर नामको भी कूडा न था। मैंने सोचा, बड़ा अच्छा हुआ कि हम बससे आये कि लदनका बाहरी भाग अभी ही देखनेको मिल रहा है।

पैसठ मीलकी यात्रा पूरी कर शामके छ बजे बस वाटरलू स्टेशनपर ठहरी। यहा भी लोग यात्रियोकी प्रतीक्षा कर रहे थे। मेरे उतरते ही मुझे किसीने पुकारा तो मुझे विश्वास नही हुआ कि यहा कोई मेरा भी परिचित हो सकता है, पर जब आगे बढकर लदनकी साहित्यपरिपद्के मत्री मित्रवर श्रीनारायणस्वरूप शर्माने मेरा हाथ पकड लिया तो मै देखता-का-देखता रह गया। उनके साथ उनके दो-तीन मित्र और थे। सबसे परिचय हुआ और मुझे लगा कि मै अपने घरमे और अपनोके बीच-मे ही हू।

कुछ देरमे सामान भी आ गया। शर्माजीको तुरत बी० बी० सी०के एक प्रोग्राममे जाना था। वे मुझसे अगले दिन मिलनेका वादा कर विदा हुए और मै एक टैक्सीमे बैठ अपने गतव्य स्थान इडियन वाई० एम० सी० ए०की ओर चला। टैक्सीके रुकनेपर मैंने टैक्सीवालेसे पूछा, "भाई, जगह तो यही है न?"

"लदनमे ग्रेट रसल स्ट्रीट एक ही है और यही है। आप अदर जाकर और पूछ लीजिये।"

मैंने जाकर पूछा। जगह यही थी और यहा मेरे लिए जगह रिजर्व थी। जो सज्जन मुझे कमरा बता रहे थे वे मुझसे मेरा पता पूछकर बोले, "तो आप हिंदुस्तानसे आये है, पर मै तो आपके शत्रु-देशके लिए काम करता हूं।"

"मैंने आपका मतलब नही समझा।"

उन्होने अपनी टाईपर लगा अर्धचद्र दिखा दिया। मैने समझ लिया कि ये यहा पाकिस्तानके राजदूतावासमे या पाकिस्तानसे सवद्ध किसी दफ्तरमे काम करते है।

"पाकिस्तान हमारा शत्रु नही है, वह हमारा भाई है। आपसमे कुछ गलतफहमी हो सकती है, पर हमारे सबध प्रतिदिन अच्छे होते जा रहे है और वह दिन दूर नही है जब हमे सारा ससार बडे-छोटे भाईके रूपमे ही देखेगा।" मैने कहा।

वह सज्जन शरमा गये। बोले, "ऐसी ही आशा मै भी करता हू।"

भोजनका समय हो गया था और सुबहसे अबतक कुछ ठीक खानेको नही मिला था। मैने उक्त सज्जनसे कहा, "यहा नजदीकके किसी शाका-हारी भोजनालयका पता बतानेकी कृपा करे।"

उन्होने 'लदन गाइड' निकाली और चटमे एक पता कागजपर लिखकर मुझे दे दिया और गतव्य स्थानतक पहुचनेका रास्ता भी बता दिया। दस कदमपर ट्यूब स्टेशन था। यहा ट्यूब उस रेलगाडीको कहते है जो जमीनके नीचे सुरगमे चलती है। लदनके अधिकाश भागमे ये रेलगाडिया बिजलीसे चलकर बहुत तेजीसे पहुचती है। मैने स्टेशनपर दो आनेका टिकट लिया और प्लेटफार्मकी ओर चला। प्लेटफार्मपर एक सीढी ले जा रही थी, जो स्वय नीचेकी ओर जा रही थी। सैकडो व्यक्ति सीढीपर खडे थे, कुछ प्लेटफार्मपर जल्द पहुचनेके लिए सीढीके साथ खुद भी उतर रहे थे। इस सीढीके सहारे उतरते कुछ डर-सा लगा, पर जब सभी इस-पर है तो डरना क्या? प्लेटफार्मपर पहुचा और जल्द ही गाडी आ गई। मै गाडीमे चढकर तीन मिनटमे ही अपने गतव्य स्टेशनपर पहुच गया। वहा लोगोसे पूछता वेगो रेस्ट्रा पहुचा। बडेसे कमरेमे डेढ-दोसौ स्त्री-पुरुष भोजन कर रहे थे। मै भी एक टेबुलके निकट जा बैठा और भोजन-की सूची देखने लगा। मुझे बडा आश्चर्य हुआ जब मैने देखा कि इस सूचीमे अडा भी शामिल है। मैने व्यवस्थापकसे इस सबधमे पूछनेकी

सोची, पर इस समय काम चलानेके लिए मैंने वेटरेससे कहा, "मेरी सहायता कीजिये और इस सूचीमेसे मेरे लिए ऐसा भोजन ले आइये जो पूर्णत. शाकाहार हो" और मैंने उसे अपना मतव्य समझा दिया। वह भोजन ले आई। कुछ उबले और तले आलू, उबली तरकारिया और अतमे फल और क्रीम। तृप्त होकर मैंने भोजन किया। भोजनके अतमे बिल आया। सुनकर ताज्जुब न करे, इस एक बारके भोजनके मुझे साढे सात शिलिंग अर्थात् छ रुपये देने पडे, ऊपरसे एक शिलिंग टिप। मैंने व्यवस्थापकके पास जाकर पूछा, "आपके यहा तो ऐसे लोग भी है जो शाकाहारमे अडा और दूध शामिल नही करते।"

"है, पर थोडे। हम यह भोजनालय उन शाकाहारियोके लिए चलाते है, जो मास-मछलीका व्यवहार नही करते, पर दूध और अडेका प्रयोग करते है। कभी-कभी दूध और अडेका प्रयोग न करनेवाले शाकाहारी भी हमारे यहा भोजन करते है और हम उनके इच्छानुसार भोजन बनवा देते है।"

"आप भोजनकी किस पद्धतिके अनुसार चलते है?"

"हम स्विट्जरलैडके बिर्चर बेनरकी पद्धति अपनाते है। उन्हीके यहा शिक्षा पाया हुआ भोजनशास्त्री हमारे भोजनालयका मुख्य रसोइया है।"

"आपके यहा नित्य कितने व्यक्ति भोजन करते है?"

"सातसौसे लेकर ग्यारहसौतक।"

"आपने अपने भोजनके सबधमे साहित्य भी प्रकाशित किया है?"

"जी हा, हमने किया है, पर वह मै आपको फिर दे सकूगा। यह लीजिये 'वेजिटेरियन न्यूज' पत्रिका। आप चाहे तो इसके सपादकसे मिले, वे आपको इग्लैडमे हुई शाकाहारकी प्रगतिके सबधमे आवश्यक सूचनाए दे सकेंगे।"

देर हो रही थी। मै अपने स्थानपर वापस आया। कमरेमे आराम-देह बिस्तर बिछा था—साफ चादरे, तकिया और उम्दा कबल। नीद

आ रही थी, पर इस समय रातके साढे नौ बजे भी सूरजकी रोशनी कमरेमे आ रही थी। मैंने खिडकियोपर परदे खिसकाकर अंधेरा किया और बिस्तरपर लेट गया। सोचने लगा रेल, जहाज और वायुयानने किस तरह दूरीका प्रश्न दूरकर सारी पृथ्वीको एक बना दिया है, और इसी बीच पता नही कब मैं निद्रादेवीकी गोदमें चला गया।

: ७ :

लंदनके विभिन्न स्थान

मैं सुबह बाहर जानेके लिए तैयार ही हुआ था कि भाई नारायणस्वरूप शर्मा पधारे। उन्हें दुःख था कि शामको उन्हें मुझे जल्द ही छोडकर जाना पडा, पर आज शनिवार था और कल रविवार। ये दो दिन उन्होंने मेरे लिए निश्चित कर दिये थे। उनके आते ही मैंने मित्रवर नारायणजी-को फोन कर दिया कि हम आपके पास शीघ्र आ रहे हैं, आप तैयार रहें। भाई नारायणजी अंग्रेजीके महान् कवि कीट्सके घरके पास ठहरे थे। अत. पहले हमने कीट्सका स्थान देखनेका निश्चय किया। यह घर कीट्सके समयमें ही ज्यों-का-त्यों रक्खा गया है। उनके व्यवहारका सारा सामान उसी प्रकार सुरक्षित है और कई कमरोमें उनकी कविताओंकी पाडु-लिपियां, उनके लिखे पत्र तथा उनकी रचनाओंके आधारपर बनाये गए कलापूर्ण चित्र सजाये गये हैं। वातावरण बडा ही शात है। सब कुछ देखकर अंग्रेजोंके अपने कविको दिये गये सम्मानके प्रति श्रद्धा होती है। लोग चुपचाप कमरोमें जाते थे, निस्पद सब चीजोंको धीरे-धीरे देखते थे। प्रश्नोंका उत्तर देनेके लिए मार्ग-दर्शक भी था, वह भी बड़े शात-भावसे पूछी बातोंका उत्तर देता था।

कीट्सके स्मृति-स्थलसे निकलकर हम लोग हैंपस्टेड हीथ गये। यह हाईसौ एकडका वन उन लोगोंके लिए जवाब है, जो लदनको घना बसा हुआ धुएँसे भरा शहर समझते हैं। इस वनके अलावा भी लदनमें और बहुतसे बडे-बडे पार्क हैं। छ सौ चालीस एकडका हाइड पार्क तो लंदनके बीचमें ही है। इन पार्कोंको देखकर आश्चर्य होता है कि शहरके बीचकी

इतनी कीमती जगह किस तरह इतन बडे-बडे पार्कोंके लिए छोडी गई होगी,
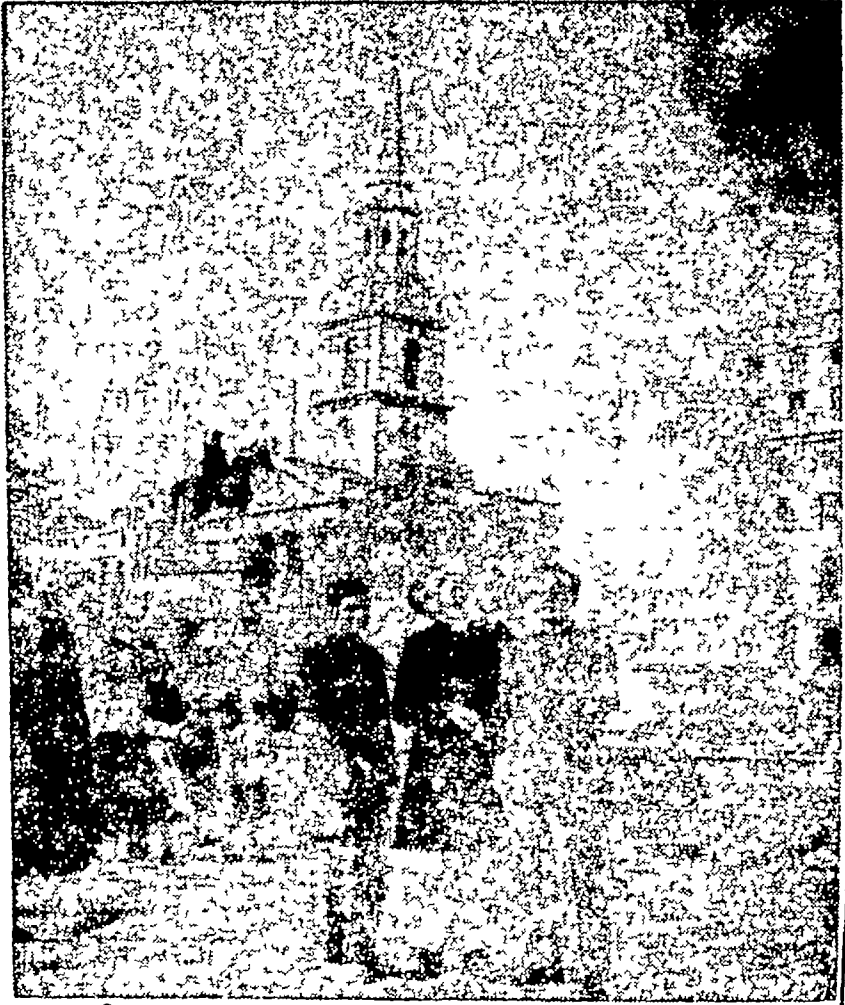
लदनका विशाल चौक ट्रफलगर स्क्वायर

पर यहा जहा लोग व्यक्तिगत स्वास्थ्यपर ध्यान देते है वहा यह भी जानते

है कि सामूहिक रूपसे जनस्वास्थ्यका ध्यान रक्खे बगैर आदमी स्वस्थ नही रह सकता ।

हैंपस्टेड हीथसे हम रीजेट पार्क गये । पार्क देखकर तबीयत खुश हो गई । पार्कके बीचमे बडी-सी झील है, जिसमे लोग नावे चलाते रहते है । हमने भी एक नाव किरायेपर ली। साथमे बी० बी० सी० के हिन्दी विभागके इचार्ज श्रीकिरणजी भी थे और इलाहाबाद म्यूजियमके क्यूरेटर श्रीकालासाहब भी थे । नौका-विहारके साथ नारायणजीकी कविताए सुननेको मिली। उनके मधुर कठसे प्रभावित होकर अनेक नौकारोही अपनी नावे हमारी नावके साथ-साथ चलाने लगे।

लदनमे देखनेको चीजे बहुत है। अजायबघर तो इतने है कि महीनो देखनेपर भी खतम न हो। ब्रिटिश म्यूजियम देखनेमे एक दिन लग गया, वह भी सरसरी तौरपर ही देखा गया। दुनियाभरकी चीजे है। एस्किमोसे लेकर अफ्रीकाके आदिम निवासियोतकका जीवन देखनेको उपलब्ध है—उनके कपडे, बर्तन, हथियार, औजार, पशु, नावे सभी साकार उपस्थित है। मिस्रके अजायबघरमे मिस्रका जो सामान नही है वह यहा मौजूद है और ऐसी तरकीब और सजावटके साथ रक्खा गया है कि सब चीजे स्वय समझमे आ जाती है। भारतीय विभागमे हिन्दुस्तानके सारे डाक टिकट, अनेक प्राचीन ग्रथोकी पाडुलिपिया और प्राचीन अनमोल चित्र है।

टावर ऑव लदनमे प्राचीन महल है, जिनसे कभी जेलका भी काम लिया गया है। स्कूलके बच्चे टोलियोमे जाते है और वहाके गाइड उन्हे इस तरह सब कुछ दिखाते है, बीच-बीचमे रोककर इस तरह समझाते है कि अग्रेजी राज्यका सारा इतिहास उनकी समझमें आ जाता है। यही राजघरानेकी तलवारे, मुकुट आदि भी देखनेको मिले। एक मुकुटपर कोहेनूर हीरा टका हुआ देखनेको मिला, जो स्वय एक इतिहास है। देखकर जीमे कसक-सी हुई कि कभी यह हमारा था।

मैडम तुसोदकी प्रदर्शनी लदनकी अपनी चीज है। यहा दुनियाके ऐतिहासिक, अनैतिहासिक व्यक्तियोकी हजारो मोमकी मूर्तिया देखनेको मिलती है, अपने पूरे-पूरे लिवासमे। कितने ही प्रसिद्ध चित्रोको साकार किया गया है। यहा आपको लेनिनसे हिटलरतक सभी प्रसिद्ध राजनैतिक व्यक्ति ही देखनेको नही मिलेगे, वल्कि कवि, चित्रकार, खिलाडी, अभिनेता,
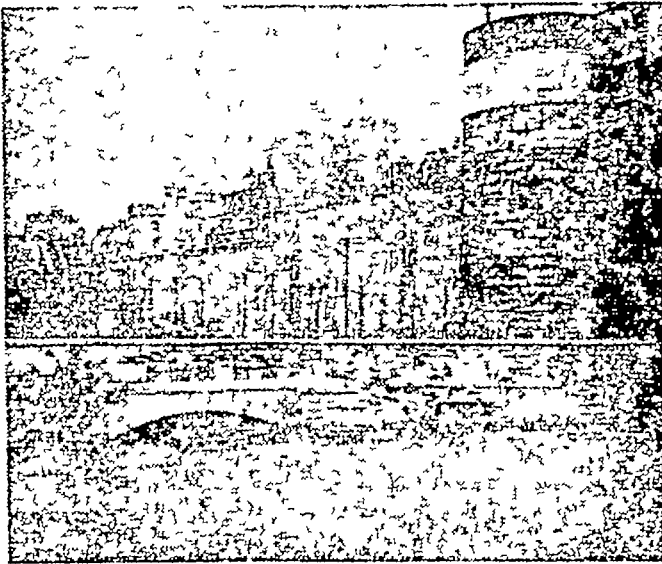
टावर ऑव लदन

वकिंघम पैलेसमे हुआ राजदरबार भी देखनेको मिलेगा और नेलसनका अतिम समय भी। एक लोमहर्षक विभाग भी है, जहा यूरोपमे किस तरह मृत्युका दड पाये लोग मृत्युके घाट उतारे जाते थे दिखाया गया है। सूली है, फासी है और आजकी विजलीमे मृत्यु बुलानेकी भी पद्धति है। यह भाग वडा भयावह है।

यहा भारतके दो ही नेता हैं—गाधी और जवाहरलाल। जिन्नासाहब भी हैं। पता नही, इन तीनोंके साथ क्यो ईमानदारी नही बरती गई।
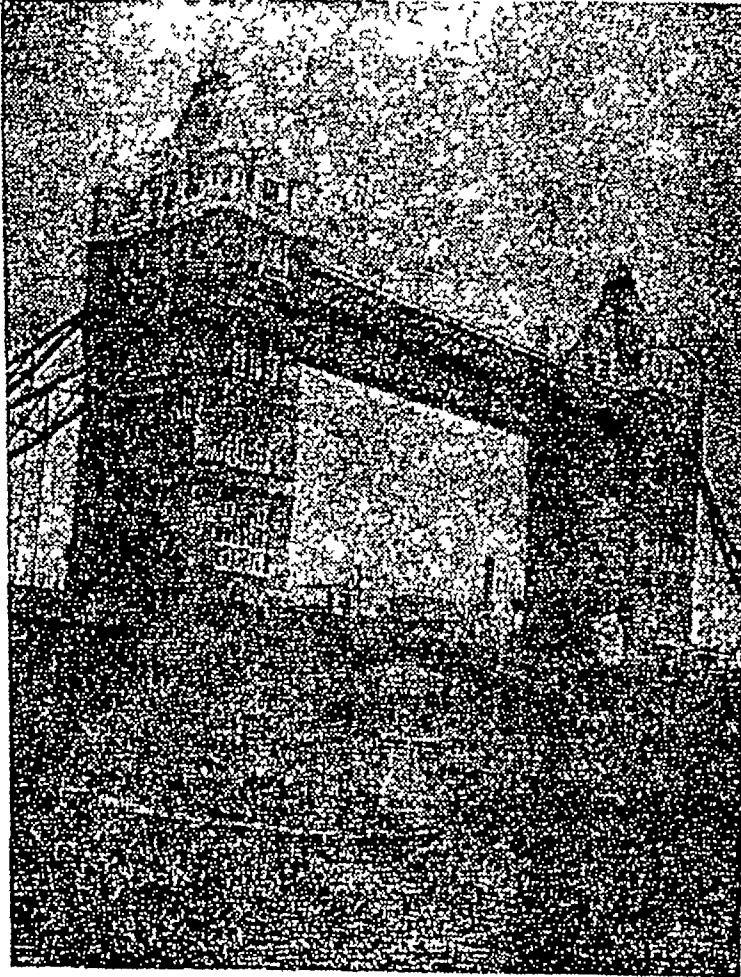
टेम्स नदीपर लंदन-पुल

जवाहरलालजी बहुत दुबले बीमार-से लगते हैं, गाधीजी मुश्किलसे पहचानमे आते हैं और जिन्नासाहब भी पूरे नही उतरे हैं। कालासाहब मेरे साथ ही

थे। ये मूर्तिया देखकर हमे बडा दुख हुआ। वहाके अधिकारीसे हमने अपनी राय बताई और कालासाहवने दूसरे दिन ब्रिटिश म्यूजियमके अधिकारीसे मिलकर मूर्तिया हटाने या ठीक मूर्तिया बिठानेकी प्रार्थना की।

इतने वैभवशाली होते हुए भी लदनके लोग आपसमें या किसीसे बात नही करते। बसमे, ट्यूबमें लोग साथ बैठे चले जायगे, पर किसीसे कोई बात नही करेगा। रेलकी इतनी बडी हडताल हुई, पर कोई किसीसे चर्चा करता दिखाई नही दिया। एक दिन मैं ट्यूबके नक्शेमें आर्चवे स्टेशन देख रहा था, पर वह मिल नही रहा था। पास खडे एक सज्जनसे मैंने पूछा, "क्या आप इस नक्शेमे मुझे आर्चवे बता सकेंगे?"

"आइये, मैं वही चल रहा हू।"

रास्ता यहा लोग बडे कर्तव्यभावसे बताते हैं। मैं उनके साथ हो लिया। उन्होंने पूछा, "आप भारतीय है?"

"जी हा।"

"हमारा भी कलकत्ता, बबई और मद्रासमें आफिस है।"

"तो आप भारत गये होंगे?"

"गया तो नही, पर अभी वहासे कुछ मित्र आये थे। उन्हे हमने लदन घुमाया, तीन दिन रहे, रातको बारह बजेतक घूमते थे और बहुत सुबह ही फिर निकल पडते थे। लगता है, वे बहुत थककर गये है।"

फिर उनसे बहुत-सी बातें होती रही। मैंने कहा, "ताज्जुब है, आप इतनी बात कर रहे है?"

उनसे कुछ दोस्ती-सी जुड गई थी। बोले, "हम विदेशीसे तो बात कर भी लेते है, पर अग्रेज तो अग्रेजसे कभी बात नही करेगा। मेरे आफिसका व्यक्ति भी मेरी बगलमे बैठा हो तो वह मुझसे एक शब्द भी नही बोलेगा।"

स्टेशन आ गया था, हम उतरे। मैंने उन्हे धन्यवाद दिया और हाथ मिलाकर हमने अपनी-अपनी राह ली।

: ८ :

लंदनके जीवनकी कुछ विशेषताएं

धन्यवाद यहा कदम-कदमपर देना पडता है। फलवालेसे फल लीजिये, फल मिल जाय तव धन्यवाद दीजिये। पैसे दीजिये, यदि कुछ पाना है तो उसके मिलनेपर धन्यवाद दीजिये। वात करनेकी रीति ही यहा लडाईके वाद वदल गई है। 'कृपाकर मुझे एक पौंड सेव दें' कहना काफी नही है, आपको कहना होगा कि 'यदि आप एक पौंड सेव दे सके तो आपकी वडी कृपा होगी।' और फिर मिलनेके वाद धन्यवाद देना बाकी ही रह जाता है, पर धन्यवाद देनेके वाद आपको कुछ मिलता भी है—मुस्कराहट। मुस्कराहट यहा वडी सस्ती है, कोई काम विना मुस्कराहटके नही होता, कोई बात विना मुस्कराहटके नही कही जा सकती। रास्ता किसीको दे दीजिये, मीठी और लवी मुस्कराहट मिल जायगी और कोई आपसे टकरा जायगा तो आपसे बिना माफी मागे आगे नही वढेगा।

काम ये बडी तेजीसे करते है, सारा लदन दौडता-सा प्रतीत होता है। सच मानिये, लोग फुटपाथपर दौडते ही चलते है। ट्रेन, वस पकडनेको तो पूरी तरह भागते है, पर क्यूका वडा ध्यान रखते है। हर भोजनालय, चायघर, डाकघर, अखवारवालेके यहा क्यू लगी रहती है—सिनेमामे तो लगती ही रहती है, पर लबी-लवी क्यू पाच मिनटमे खत्म हो जाती है। स्टेशनपर टिकट बेचनेवालेके हाथ विजलीकी तरह चलते है। टिकट लीजिये, पैसे विना गिने उठाइये और जल्द-से-जल्द क्यूसे निकल जाइये। पैसे ही क्यो, नोट भी यहा नहीं गिने जाते। वैंकमे मैंने चेक देकर नोट लिये

और उन्हे गिनने लगा तो नोट देनेवालीके चेहरेकी मुस्कराहट जाकर आकृति रूखी हो गई। उसने ढगसे मेरा धन्यवाद भी स्वीकार नही किया। बात मेरी समझमे नही आई तो एक अन्य साथीने बताया कि नोट गिननेका यहा रिवाज नही है। आपको विश्वास करना होगा कि आपको नोट अच्छे और पूरे मिले है।
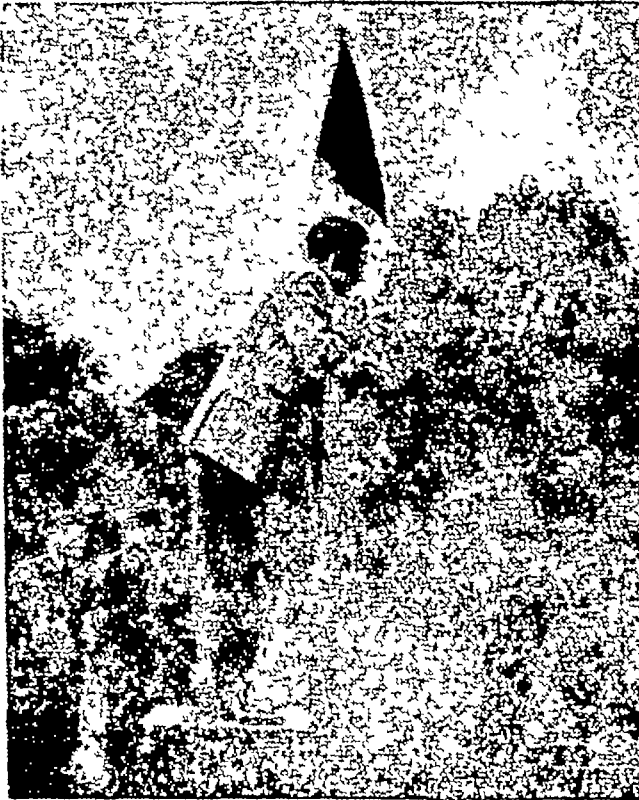
हाइडपार्ककी एक सभाका दृश्य

इस तरहकी ईमानदारी यहा कही भी देखी जा सकती है। स्टेशन-पर, ट्रेनमे, होटलमे कही भी आपकी कोई चीज गायब नही होगी। जो

चीज आप भूलकर जहासे गये है, खोजन आनेपर वही या कही रास्तेसे हटाकर रखी मिल जायगी। सभवत इनकी इस ईमानदारीका कारण

कार्ल मार्क्स और उनके परिवारकी कब्र

इनकी समृद्धि और वेकारीका अभाव है।

सग्रहकी प्रवृत्ति तो इनमे है ही नही। जितना प्रत्येक व्यक्ति कमाता

है उतना साधारणत वह खर्च भी कर देता है। चिकित्सा मुफ्त होती है, लडके-लडकियोकी शादीमे कुछ खर्च नही होता, बेकारी और बुढापेमें खानेको सरकार देती है, फिर जोडें क्यो ? धन यहा एक मुट्ठीमे न रहकर हाथ बदलता रहता है।

आम तौरसे यहाके लोग बडे ढगसे रहते हैं। ठीक कपडे पहनते ह और घर खूब सजाकर रखते हैं। सजावटमे फूलका खूब इस्तेमाल करते हैं। घरके पास थोडी-सी जगह हुई तो उस जगहमे फूल लगाकर सारे घरमे खूबसूरती पैदा करते हैं। बडी-बडी दुकानोतकको सजानेमे फूलके गुलदस्तो और गमलोका उपयोग होता है।

सबसे अधिक आकृष्ट किया मुझे यहाके लोगोकी श्रमके प्रति श्रद्धाने। छोटे-मोटे कामोके लिए अथवा सामान उठानेके लिए कोई कुली नही लेगा, स्टेशनतकपर अपना सामान लोग खुद ढोते हैं और जो काम करते हैं, मेहनत और पूरी ताकतसे करते हैं। काम करते समय इनको इसका ध्यान नही रहता कि काम ये दूसरेका कर रहे हैं या अपना। जिस कामको हाथमें लेते हैं अपनी पूरी शक्ति लगाकर करते हैं। सभवत इनकी यह शक्ति ही इस छोटेसे देशको दुनियाके बडे-से-बडे देशोंके समकक्ष स्थान दिलाती रही है।

: ६ :

डा० लीफके परीक्षा-गृहमें

मैं लदन तीन जूनकी रातको सात बजे पहुचा था, पर डाक्टर स्टैनली लीफको बारह तारीखके पहले फोन न कर सका। उनकी सेक्रेटरी-से बातें हुईं—उन्होने मुझे दूसरे दिन ग्यारह बजे बुलाया। अभी रास्तोंसे परिचित नही था, अत कुछ पहले ही पहुचनेके विचारसे मैं अपने स्थानसे सवा दस बजे ही चल दिया। डा० लीफ ट्यूब लाइनके मार्बेल आर्च स्टेशन-के बिल्कुल निकट ही एक इमारतमे सप्ताहमे दो दिन बैठते हैं। इमारत मुझे तुरत मिल गई। मैं पद्रह मिनट पहले ही पहुच गया था, अत इधर-उधर टहलता रहा और ग्यारह बजे मैंने लीफसाहबके फ्लैटके दरवाजेपर लगी घटी बजाई। एक युवकने मुस्कराते हुए दरवाजा खोला। युवकका चेहरा डा० लीफके चित्रमे मिलता था, पर यह तो मै समझ ही सका कि यह डा० लीफ नही हो सकते। वह डा० लीफके पुत्र थे।

"आप मिस्टर मोदी हैं?"

"जी हां।"

"चलिये, अभी डाक्टर लीफ आपसे मिलेंगे।"

उन्होंने मुझे एक कमरेमें लाकर बिठा दिया। वहा तीन स्त्रिया बैठी थी, जो सभवत डा० लीफसे चिकित्सा करा रही थीं। कमरेमें एक तरफ टेबुलके सामने डा० लीफकी सेक्रेटरी बैठी थी, जो बार-बार आते टेली-फोनका जवाब दे रही थी। कमरा बडे करीनेसे सजा था और कुशादा था। एक तरफ डा० लीफका किसी फ्रासीसी चित्रकारका बनाया चित्र लगा था। दो मिनट बाद ही डा० लीफ आये। ऊचे, कद्दावर, मुखपर गभी-

रता और शाति, ऐसा व्यक्तित्व जो दूसरोको शीघ्र ही आकृष्ट कर लेता है। आते ही उन्होने मेरी तरफ हाथ बढाया। मैने भी उठकर उनसे हाथ मिलाया। बोले, "मुझे क्षमा करे, अभी मै आपको पाच मिनटमे बुलाता हू।" इस पाच मिनटमे उन्होने दो मरीजोंमे बात की और फिर मुझे अपने कमरेसे लिवाने आये तो एक स्त्रीने पूछा—"क्या मै उपवासमे विटामिनकी गोलिया ले सकती हू?"

"नही, न उपवासमे, न और कभी।"

मै डाक्टर लीफके परीक्षागृहमे था। डा० लीफने मुझे बिठाया और आरोग्य-मदिर तथा हिदुस्तानमे प्राकृतिक चिकित्साकी प्रगतिके बारेमे पूछते रहे। फिर बोले, "बात तो आपको और मुझे भी बहुत करनी है, पर यह जगह तो बात करनेकी नही है। आप चपनी आये, वहा बाते होगी, पर बताइये, आप मुझमे क्या चाहते है?"

"मै आपका कालेज देखना चाहता हू और उसके पाठ्यक्रमका अध्ययन करना चाहता हू।"

"तो आप कालेज बुधवारको आये, आपके लिए इसकी सुविधा कर मुझे खुशी होगी। हा, यह तो बताये, डा० सिघवा हिदुस्तानसे लौट कैसे आये?"

डा० सिघवाके बारेमे मैने भी सुना था कि वह डा० थामसनके कालेजसे ग्रैजुएट होकर कलकत्ता आये थे, पर प्रैक्टिस न चल सकनेके कारण एक महीनेके अदर ही इग्लैड लौट गये।

"वह कलकत्ता-जैसे बडे शहरमे प्रैक्टिस करना चाहते थे, पर हिंदुस्तान तो गावोका देश है। कलकत्तामे भी वे प्रैक्टिस जमा सकते थे, पर उसके लिए धीरज चाहिए था।"

"वह तो कहते थे कि वहाके प्राकृतिक चिकित्सक दवाका प्रयोग करते है, इजेक्शन देते है।"

"हिदुस्तानके अधिकाश प्राकृतिक चिकित्सक कूने और जस्टके अनु-

यार्यी हैं और वे उन्ही सिद्धातोंके अनुसार रोगियोंकी चिकित्सा करते हैं, उनमें तो दवाका कही विधान नही है।"

"पर डा० सिधवा कहते थे कि वहा उमी चिकित्सककी चलती है, जो दवा देता है।"

"यह वात ठीक है कि दवा देनेवाले डाक्टरोकी हर जगह और वहा भी वहुत चलती हैं, पर वे डाक्टर हैं, प्राकृतिक चिकित्सक नही।"

"डा० सिधवाने तो वताया था कि अपनेको प्राकृतिक चिकित्सक कहनेवाले भी दवाका प्रयोग करते हैं।"

"तो मुझे आपको यह कहते दुःख होता है कि यह वात डा० सिधवाके मस्तिष्ककी उपज है।"

"मुझे इस सवधमे आपसे वहुत कुछ कहना-सुनना है। मैं जानता हू कि हिंदुस्तान प्राकृतिक चिकित्साके लिए वहुत उर्वर भूमि है। आप रविवारको चपनी आये। उस दिन मुझे छुट्टी रहती है। आपसे सभी वातें समझूगा और यहाके वारेमें आप जो जानना चाहेंगे वह वताऊगा।"

मैंने उस समय डा० लीफसे विदा ली और उनकी प्रतीक्षामें बैठे रोगी उनके कमरेमें दाखिल हुए।

उनकी सेक्रेटरीने मुझे चपनी और ब्रिटिश कालेज ऑव नेचरोपैथीका पता लिखकर दिया और दोनों जगह पहुचनेका समय भी निश्चित कर दिया।

: १० :

ब्रिटिश कालेज ऑव नेचरोपैथी

शुक्रवारको छ वजे मै ब्रिटिश कालेज ऑव नेचरोपैथी पहुचा। लदनका यह हिस्सा, जहा कालेज है, ज्यादा साफ है। घर सभी एकमजिला है और आवादी घनी नही है। कालेजका दरवाजा खोला मिसेज स्टाला लीफने। वह वडे प्रेमसे मिली और तुरत कालेज दिखाने चल पडी। वह है तो वृद्धा, पर उनकी फुर्ती देखकर मै हैरान था। भाग-भागकर सव कुछ दिखाती और वताती जा रही थी—लेक्चरके कमरे, उनका सामान, रोगियोकी परीक्षा एव चिकित्साका स्थान। सभी कुछ वहुत साफ-सुथरा और तरतीवसे था। फिर वापस आकर मै उनसे वात करने लगा। पढानेकी पद्धति, कोर्सकी कितावो आदिपर मैने वहुतसे प्रश्न किये, पर स्टाला लीफ तो कालेजकी प्रवधकर्त्री है, अत उन्होने मुझसे कहा कि मै अभी आपको यहाके अध्यापकोसे मिलाऊगी, आपको वे तथा यहाके रजिस्ट्रार सव वातोकी जानकारी करा सकेगे। इसी समय उन्होने कालेजके एक विद्यार्थीको वुलाकर मुझसे परिचय कराया। वोली, "श्रीधीरूशाह आपकी सहायता इस सबधमे मुझसे अधिक कर सकेगे।" मुझे अध्यापकोसे मिलानेका काम भी उन्होने श्रीधीरूशाहको ही सौपा। श्रीशाह अफ्रीकासे आकर यहा प्राकृतिक चिकित्साका अध्ययन कर रहे है। हिंदी मजेकी वोल लेते है, अत मेरे लिए उनसे अच्छा पथ-प्रदर्शक कौन हो सकता था ?

श्रीशाहने वताया कि कालेजमे मैट्रिक पास विद्यार्थियोको लेते है और चार वर्पका कोर्स है। पढाई प्रात और सायकाल होती है, जिससे

विद्यार्थी दिनमें काम करके रोटी कमा सके और बचे समयमे पढ सके। यही पद्धति यहा इग्लेडके अधिकाश शिक्षणालयोमे है। माता-पिता बच्चो-के वडे होनेपर उन्हे कमाने-खाने और पढनेके लिए छोड देते है। यहा जीवन ही ऐसा है कि मनुष्य अपना ही खर्च चला सकता है। इसी कारण अधिकाश स्त्रियोको भी काम करना पडता है। कालेजकी पढाईकी यह पद्धति मुझे अच्छी जान पडी।

शाह मुझे चायघरमे ले गये। वहा मुझे चोकरदार आटकी रोटी, बिस्कुट और दूधके साथ चाय दी गई—चायके लिए भूरी चीनी थी। वहा दो स्त्री-पुरुष काम कर रहे थे। वे मुझे नया देखकर बात करने लगे। मुझे यह देखकर बडा आश्चर्य हुआ कि ये भोजनालयमे काम करनेवाले भोजनके सबधमें काफी जानकारी रखते है और भोजनमे फल-तरकारियो-के स्थानको खूब समझते है।

थोडी देरमे हम ऊपर गये। वहा डा० थामस डमरसे भेट हुई। वह कोई पैंतीस वर्षके वडे ही उत्साही इकहरे बदनके युवक है। उनसे मेरा परिचय हुआ तो उन्होने भी डा० सिधवाके कथनके आधारपर हिंदुस्तानके प्राकृतिक चिकित्सकोद्वारा दवाका प्रयोग किये जानेकी बात कही। इतनेमें ही दो प्रोफेसर और आ गये। वे भी सिधवाके ही वाक्य दुहरा रहे थे। मैंने उन्हे बताया कि भारतमें कूनेकी पद्धति ही सर्वाधिक चलती है। हम रोगियोको सुबह-शाम ठडे पानीका कटिस्नान और मेहनस्नान देते है और भोजनमे रोटी, सब्जी और फल चलता है। चिकित्सामे हम उपवास और योगासनोको विशेष स्थान देते है। ठडे पानीकी बात सुनकर एक डाक्टर सिकुड-से गये। उन्हे ठडे पानीके प्रयोगकी बातसे बडा आश्चर्य हुआ। मैंने उन्हे बताया कि यह आपका गर्मीका मौसम तो हमारे यहांके उत्कट जाडेके मौसम-जैसा है। गर्मीमे तो हमारे यहां पसीना चलता रहता है। इसपर डा० डमरने कहा, "आपके यहा परिस्थिति भी तो भिन्न है, जिससे बहुत साधारण चिकित्सासे ही रोगी अच्छे हो जाते है।"

"अच्छे ही नही होते, वहुवा हमारी आशासे भी जल्द अच्छे होते है।"

"यहा तो लोग परेशानी और जल्दीमें रहते है। आए दिन उन्हें इजेक्शन और टीके लगते है। उनकी चोटका असर लोगोंके दिमागपर रहता है। दवा भी लोग जहरीली-से-जहरीली खाते रहते है, जिससे उन्हें लाभ पहुचानेमें वडी कठिनाई होती है।"

"पर यहा सभी प्राकृतिक चिकित्सकोकी ठीक चलती है। यहा प्राकृतिक चिकित्सापर लिखकर तो कोई नही कमा-खा सकता, पर प्रैक्टिस आसानीसे चल जाती है।" एक दूसरे डाक्टर वोले।

"आपने कौन-सी कितावे पाठ्य पुस्तकके तौरपर स्वीकार की है ?" मैंने डा० हमरसे पूछा।

"डा० लिडल्हार, टिल्डन, शेल्टन आदिकी।"

"ये मिल जाती है ?"

"मिलती तो नही, वर्षोंसे छपी नही। पहले जिन्होने इन्हें लिखा था उनमे वडा जोश था। वे किसी तरह छपवा लेते थे। ये कितावे छपे तो केवल विद्यार्थियो या प्राकृतिक चिकित्सकोंके कामकी होगी। वे विकेंगी कितनी ? और लडाईके वाद तो यहा छपाई और कागजकी कीमत इस कदर वढ गई है कि किसीके लिए भी उतना रुपया फसाना मुश्किल है। केवल डा० शेल्टनकी कितावें मिलती है। वे अपनी पुस्तकें स्वय छापते और वेचते हैं।"

"तव तो कितावे छापनेके लिए भी एक कोष कायम करना होगा।" मैंने सलाहके तौरपर कहा।

"साधारण जनताके लिए लिखी गई कितावे तो खूव चलती है, पर गभीर कितावें तो कोई सस्था ही छाप सकती है, इसके सिवा कोई दूसरा उपाय नहीं है। आस्टियोपैथीपर सवसे अच्छी किताव 'आस्टियोपैथी एक्सप्लेंड' है, पर इसे अस्टियोपैथोकी सस्था ही छापती और वेचती है।

कम छापी गई है, अत मूल्य १५ गिनी अर्थात् १९५ रु० है। कोई कैसे खरीदेगा ?"

"तो आप विद्यार्थियोको क्या पढनेको कहते है ?"

"वे हमारे लेक्चरोपर निर्भर रहते है।"

इतनेमे ही घटा बजा। डा० डमरने मुझे एक फुलसकेप साइजकी टाइप की हुई फाइल दी। बोले—"आप इसे तबतक देखे, मै अभी पढाकर आधे घटेमे आता हू।"

मै वह फाइल पढने लगा। कोई २६ पाठ है। प्राकृतिक चिकित्सा-सबधी सिद्धात, उपवास, भोजन, जलोपचार आदिपर एक सर्वागीण पुस्तककी विषयानुक्रमणिका इसे कहा जा सकता है। सभी प्राचीन और अर्वाचीन प्राकृतिक चिकित्सकोका इसमे हवाला दिया गया है। मुझे लगा कि हम भी अपने कालेजका पाठ्यक्रम कुछ इसी प्रकारका बना सकते है।

डा० डमर जब वापस आये तो मैने उन्हे इस पाठ्यक्रमपर बधाई दी और इस पाठ्यक्रमकी प्रतिलिपिकी माग की। उन्होने दो-एक दिनमे प्रतिलिपि देनेका वादा किया। डा० डमरसे और भी बाते हुई। इन लोगोका ध्यान आस्टियोपैथीपर अधिक है। मैने कालेजके दो श्यामपट्टोपर भी देखा कि आस्टियोपैथीके पाठ पढाते वक्त शरीरकी कुछ अस्थियो और मासपेशियोकी आकृति बनाई गई है। कमरेके एक ओर शरीरकी हड्डियोका पूरा ढाचा था।

मैने दो-तीन दिन कालेज जाकर उसकी शिक्षा-पद्धति समझनेके लिए शिक्षकोके पढाते वक्त कक्षामे बैठनेका निश्चय किया।

जिन तीन प्रोफेसरोसे बाते हुई, वे सभी अपने-अपने विषयके पडित है और अपने विषयपर विश्वासपूर्वक बात करते है। डा० डमर विशेष प्रतिभाशाली और उद्भट विद्वान् लगे। इनकी प्रैक्टिस भी यहा खूब चलती है, पर कालेजमे यह पढाने अवश्य जाते है। बडे मिलनसार है और प्राकृतिक चिकित्साके प्रचारमे विशेष योग देते है।

: ११ :

डा० लीफका चिकित्सालय

रविवारको मै चपनी गया। सुवह ९ बजकर ३४ मिनटपर मार्वल आर्च स्टेशनके पास बस मिली, जो १०-५५ पर वर्कमस्टेड पहुची। मेरे साथ मेरे मित्र श्रीवटुक थे। चपनी लदनसे ३५ मील दूर एक गावमें है। यहाके गाव बडे सुदर होते है, अत गाव देखनेकी इच्छासे वे मेरे साथ थे।
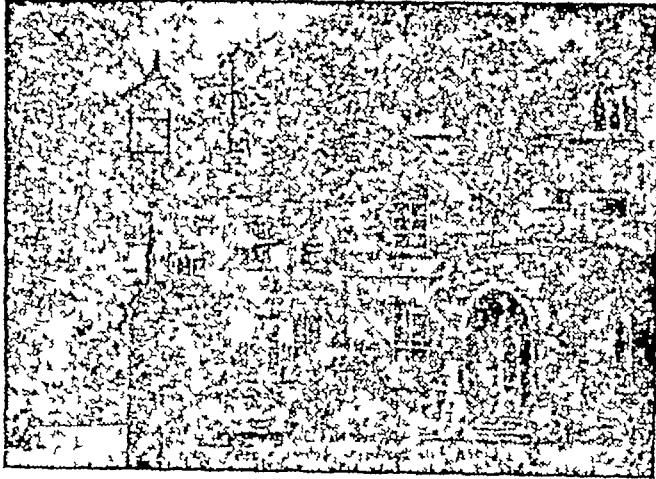
चपनीका चिकित्सालय

वह वर्षोसे 'आरोग्य'के पाठक है, इसलिये प्राकृतिक चिकित्सासे भी परिचित है। वर्कमस्टेडपर हमारी बस रुकी। वहा डा० लीफने अपनी कार भेज दी थी। उसपर तीन मील चलकर हम चपनी पहुचे। लदन छोडनेके

बाद सारा रास्ता वडा सुदर दीख पडा । बीच-बीचमे गाव क्या, छोटे-छोटे कस्बे ही आते है और चारो तरफ खेत है । ऊची-नीची जमीन हरियाली-से भरी हुई है । सब कुछ वडा साफ है । किसी सडकपर कागजका एक टुकडा भी नही था । खेत जैसे सवारकर रक्खे गये है और चपनीके पास तो आबादी और भी कम है । दूर-दूरतक हरियाली-ही-हरियाली है । हमारी कार चपनी पहुचकर रुक ही रही थी कि डा० लीफ एक ओरसे आये । मैने श्रीवटुकका उनसे परिचय कराया । उन्होने मुस्कराते हुए हमसे हाथ मिलाया और अपना चिकित्सालय दिखाने ले चले । चिकित्सालय दोसौ एकडके हरे-भरे उपवनमे है और यहा सौ रोगियोके रहनेका स्थान है, जो हमेशा भरा रहता है ।

चिकित्सालयके अहातेमें रोगियोंके रहनेके काठके कुछ सुंदर घर

इग्लैड और भारतकी आर्थिक स्थितिमे वडा अतर है, जो यहा और वहाकी सभी चीजोमे दीख पडता है । यहाके गावके घर भी वडे सुदर और

सभी सुविधाओंसे पूर्ण हैं। फिर चिकित्सालय तो हर जगह अच्छा ही बनाया जाता है। डा० लीफका चिकित्सालय भी बहुत ही बढिया है। सब कुछ ऐसा है, जैसा हमारे यहाके शौकीन रईसको भी नसीब नही होता। चिकित्सालयके अदरके रास्तोपर सुरुचिपूर्ण ढगसे कीमती कालीन बिछाये गये है। रोगियोके लिए छोटे-छोटे पर आरामदेह कमरे है। उनके बैठने-का कमरा, भोजन करनेका कमरा, धूपमे बैठनेके लिए शीशेकी दीवारोका कमरा, सब अलग-अलग है। चिकित्सालय भी इसी इमारतमे है। स्त्रियो और पुरुषोंके लिए चिकित्साके अलग-अलग स्थान है। स्त्रियोंके लिए नर्सें है और पुरुषोंके लिए पुरुष परिचारक।

चपनीके चिकित्सालयके पीछेका दृश्य

चिकित्साके कमरे एक गलीके दोनो ओर है—ठडा, गरम-ठडा कटिस्नान लेनेका कमरा, भाप-नहानका कमरा, गरम नहानका कमरा, बिजलीकी चिकित्साका कमरा, अस्थि-चिकित्साका आस्टियोपैथी कमरा, एनिमा और अन्न-प्रक्षालनका कमरा। चिकित्साके और सब काम तो

डा० लीफके सहकारी कर लेते है, पर अस्थिचिकित्साका काम केवल डा० लीफ करते है। सुबह वह रोगियोको सात बजेसे देखना शुरू करते है। रोगी उनके कमरेमे एक-एक कर जाते है। ग्यारह बजे यह काम खत्म करके वह अस्थि-चिकित्साका काम दो घटे स्वय करते है।

चिकित्सालय देखनेमे एक बज गया। अब हमें डा० लीफ भोजनके कमरेमे ले गये और फिर ढाई बजेसे पाच बजेतक बात करनेका समय निश्चित किया।

भोजनमे सलाद था---कच्चा टमाटर, खीरा, मूली, प्याज, उबला चुकन्दर और सलादकी पत्तिया। सलादमे डालनेके लिए जैतूनका तेल और क्रीम। बटुकजीने नमक न देखकर नमककी माग की। टेबुलपर ही एक शीशी रक्खी थी, जिसमे काली मिर्चका सफूफ-सा भरा लगता था। उन्हे बताया गया कि यह काली मिर्च नही है, सेलरीके सागका नमक है, आप इसका नमककी तरह उपयोग करे। थोडा मैंने भी लिया। नमक अच्छा था। वह नमकीन होनेके साथ-साथ कुछ कटु भी था।

सलादके बाद भुने आलू मिले और चोकरदार आटकी रोटीके टोस्ट और मक्खन। इसके बाद कटोरीमे दही और फल था। यह चीज बटुकजी-को बहुत पसद आई। बगलमे बैठी भोजन करती एक स्त्रीसे वह बोले, "अबतक मै खरगोशका खाना खा रहा था, पर यह चीज अच्छी है।" वह मुस्कराई। मैंने कहा, "मेरे मित्रको आप बडा न समझे, ये बिल्कुल बच्चे है, इन्हे केवल मीठी चीजे पसद आती है।"

"प्राकृतिक भोजन तो धीरे-धीरे ही पसद आता है। कुछ दिन बाद इन्हे यहाकी हर चीज स्वादिष्ट लगेगी।"

भोजनके बाद ढाई बजेतकका समय हमारे पास था। यह समय बितानेके लिए मै डा० लीफके पुस्तकालयमे चला गया।

: १२ :

डा० लीफका जीवन और कार्य

ढाई बजे डा० स्टैनली लीफ मुझे पुस्तकालयमें ही मिले और अपने कमरेमें ले गये। इसी कमरेमे वह रोगियोको देखते है। कमरा काफी बड़ा है। एक तरफ रोगियोको सुलाकर परीक्षा करनेका टेबुल है और उसीके पास वजन लेनेकी मशीन, दूसरी तरफ परीक्षाके कुछ यत्र और पीछेकी
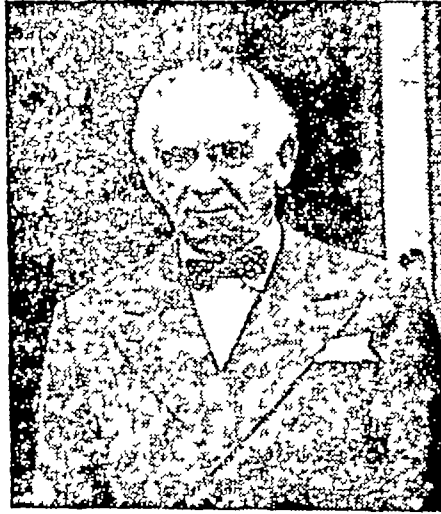
डा० स्टैनली लीफ

तरफ डा० लीफकी कुर्सी। मुझे बिठाकर मुस्कराते हुए डा० लीफने मुझसे कहा, "मुझसे जो कुछ आप पूछना चाहे इस समय पूछ सकते है।"

डा० लीफकी इस मुस्कराहटमे बडी आत्मीयता थी। इसन दो देशोकी दूरी मिटा दी और मैंने अपनेको डा० लीफके वहुत निकट पाया। मैंने सोच रक्खा था कि मै डा० लीफसे कुछ सैद्धातिक ही प्रश्न करूगा, पर उनके 'जो कुछ चाहू पूछ सकता हू' के निमत्रणने मेरे मनमे उनकी जीवनी जाननेकी उत्सुकता पैदा कर दी।

डा० लीफ सन् १८९२ मे रूसके एक गावमे पैदा हुए थे। जव यह छोटे थे तभी इनके माता-पिताने व्यापारके लिए रूस छोड दिया और दक्षिण अफ्रीका चले आये। यही डा० लीफका बचपन बीता और यही उन्होने अपनी शिक्षा पाई। यह माईनिग इजीनियर हो गये। बचपनसे ही शिकारका शौक था और वदूक चलानेके प्रति रुचि। अत प्रथम महायुद्ध (१९१४-१८) मे यह सेनामे भर्ती हो गये, पर यह दो वर्ष ही काम कर पाये थे कि युद्धमे घायल हो गये और सेनासे हटा दिये गये। घर आकर यह भयकर रूपसे वीमार पड गये और इन्हे किसी उपचारसे कोई लाभ नही हुआ। इसी बीच इन्हे अमरीकाके प्राकृतिक चिकित्सक मैकफैडनकी स्वास्थ्यसबधी एक पुस्तक मिली, जिसमे तदुरुस्तीके नियमोका विवेचन किया गया था। इस पुस्तकका इनपर विशेष प्रभाव पडा और उसके अनुसार चलकर इन्होने स्वास्थ्य प्राप्त किया। फिर तो प्राकृतिक चिकित्साके सबधमे इनकी अधिकाधिक जाननेकी इच्छा हुई और यह अमरीका जाकर मैकफैडनके प्राकृतिक शिक्षणालयमे भर्ती हो गये। दो वर्ष वहा पढकर एक अस्थि-चिकित्सा (आस्टियोपैथी) के कालेजमे प्रविष्ट हुए और वहा भी दो वर्ष पढकर वहाकी डिग्री प्राप्त की।

"तो आप भी उन प्राकृतिक चिकित्सकोमे है, जिनकी वीमारीने उन्हे प्राकृतिक चिकित्सक वनाया।"

"हा, मेरी बीमारीने मुझे बताया कि वीमारी तो प्रकृतिके नियमोके उल्लघनका फल है और स्वस्थ कुदरत ही कर सकती है। स्वस्थ होनेपर मैंने इस सत्यका प्रचार करनेकी ठानी और ठीक तरह यह प्रचार कर

सकू, इसके लिए मैने प्राकृतिक चिकित्साकी शिक्षा प्राप्त की।"

"इस प्रचार-कार्यका क्षेत्र आपने इग्लैड क्यो चुना ?"

"मै मैकफैडनका प्रिय शिष्य था। उन्होने मुझे इग्लैड जानेकी सलाह दी और प्रोत्साहन भी।"

"यहा आपने अपना कार्य किस प्रकार आरभ किया ?"

"जहातक मुझे स्मरण है, मैने व्याख्यान-मालाओद्वारा जनताका ध्यान प्राकृतिक चिकित्साकी ओर आकृष्ट करनेकी कोशिश की। लोग मुझसे स्वास्थ्यसबधी सलाह लेने आने लगे, इसलिए मुझे एक स्थायी स्थानकी जरूरत हुई और मैने ब्रिस्टिलके एक कमरेमे अपना कार्य आरभ किया। एक वर्ष बाद मै लदन आ गया और यहा रोगियोको रोगमुक्तिका कुदरती इलाज बताने लगा।"

"यह चिकित्सालय कब खुला ?"

"चिकित्सालय स्थापित करनेका मेरे मनमे कोई विचार नही था, पर जो लोग मुझसे चिकित्सा कराते थे उनकी ही राय हुई कि चिकित्सा चलानेका ठीक वातावरण उपस्थित करनेके लिए मै एक चिकित्सालय खोलू। फलत सन् १९२६ में चिकित्सालय खुला।"

यह चिकित्सालय लदनके निकट ही था, पर स्थान छोटा होनेके कारण बडी जगहकी तलाश हुई। चपनी इन्हे प्राकृतिक चिकित्साके लिए अनुकूल स्थान दिखाई दिया—दोसौ एकड भूमि, बढिया कोठी, पर इतने रुपये डा० लीफके पास नही थे कि इतनी जमीन खरीद सके। सारा कार्य यह अपने पुराने रोगियोकी ही सलाहसे कर रहे थे। उन्हे भी यह जगह पसद आई और उन्होने डा० लीफको सारे रुपये कर्जके रूपमें दिये। इस प्रकार चपनीका चिकित्सालय खुला, जो बढकर आज सौ-सवासौ रोगियोको स्थान देने लायक हो गया है। यहा लगभग इतने ही रोगी बराबर रहते है और उनकी सेवाके लिए डा० लीफ और उनके पचहत्तर सहायक

हैं। इस सख्यामे वे कार्यकर्त्ता भी शामिल है, जो बाग, तरकारीके खेत और भोजनालयका काम देखते है।

डा० लीफका काम इग्लैडके लिए एक बडी देन कहा जायगा और हर बडा काम करनेवालेके सबधमे मेरी उत्सुकता उसका प्ररणास्रोत जाननेकी होती है। यह जाननेके लिए मैने उनसे पूछा, "आपके काममे आपकी पत्नीसे आपको कितना सहयोग मिला ?" मेरा खयाल था कि सभवत इसी प्रश्नसे कोई सूत्र निकले।

"स्टालाने मेरा बहुत साथ दिया, पर अब जो है उनका प्राकृतिक चिकित्साकी ओर कोई झुकाव नही है।"

फिर डा० लीफने अपनी सतानोके सबधमे बताया—"मेरे दो सताने है। पुत्र पीटर प्राकृतिक चिकित्साका चार वर्षका कोर्स समाप्त करनेके बाद अब मेरे साथ ही काम करता है, दूसरी पुत्री है, वह भी प्राकृतिक चिकित्साको पसद करती है। वह अभी केवल १८ वर्षकी है।"

मैने 'हेल्थ फॉर ऑल'के सबधमे जिज्ञासा की तो डा० लीफने बताया, "प्रैक्टिस आरभ करनेके कुछ वर्ष उपरात व्याख्यान देने और भ्रमणका समय कम मिलने लगनेपर मैने एक पत्र निकालनेकी सोची और 'हेल्थ फॉर ऑल' प्रकाशित किया। पत्रिकाके प्रकाशनमे मुझे बडी मेहनत करनी पडी। प्रति मास बहुतसे लेख लिखनेके अलावा इसका सारा काम देखना पडता था। आज भी इसके लिए मुझे बहुत काम करना पडता है, पर मुझे इस बातका सतोष है कि इसके द्वारा होनेवाले प्राकृतिक चिकित्साके प्रचारके कारण आज इग्लैडमे कई सौ प्राकृतिक चिकित्सक और दर्जनो चिकित्सालय मजेमे चल रहे है और जनता प्राकृतिक चिकित्साकी ओर अधिकाधिक आकृष्ट होती जा रही है।"

"कालेजके सबधमे तो आपने कुछ बताया ही नही।"

"कालेज दूसरे महायुद्धके पहले ही खुला था। युद्धके समय उसे बद करना पडा। युद्धके बाद फिर शुरू हुआ। अबतक लगभग एकसौ स्नातक

कालेजसे निकल चुके है, जो इग्लैडमे ही या दूसरे देशोमे जाकर सफलता-पूर्वक प्रैक्टिस कर रहे है।"

"पर ब्रिटेनमे तो सभीको मुफ्त दवा मिलती और चिकित्सा होती है, फिर लोग प्राकृतिक चिकित्साकी ओर क्यो आकृष्ट होते है?"

यह काम भी यहा मशीनकी ही तरह होता है, आदमीसे आदमीका कोई लगाव नही रहता, पर रोगकी अवस्थामे रोगी चिकित्सकका अधिक सपर्क चाहता है और प्राकृतिक चिकित्सक रोगीको समझे बगैर, उससे सपर्क स्थापित किये बिना, चिकित्सा कर ही नही सकता, अत प्राकृतिक चिकित्सकको रोगी मिलनेमे कठिनाई नही होती।"

"ब्रिटेनमें प्राकृतिक चिकित्साका साहित्य तो अच्छा नही निकल रहा है?"

"लोग केवल साधारण व्यक्तियोको ध्यानमे रखकर ही लिखते है। मैने प्राकृतिक चिकित्सापर एक बडी पुस्तक शुरू कर रक्खी है। एक वर्षमे वह प्रकाशित हो जायगी। देखू उसके सबधमे आपकी क्या राय होती है?"

मै ज़रा झेप-सा गया, पर तत्काल ही मैने कहा, "इसका फैसला तो अभी हुआ जाता है। आप लिखते किसके लिए है—साधारण पाठक या प्राकृतिक चिकित्साके विद्यार्थीके लिए?"

डा० लीफ इस प्रश्नपर जरा देरतक मुस्कराये और फिर बोले, "दोनोंके लिए।"

"दोनोको आप सतुष्ट कर सकेगे?"

डा० लीफके पास इस प्रश्नका उत्तर नही था। उत्तरमे वह मुस्करा-कर रह गये।

डा० लीफका चिकित्सालय मैने देखा था, उसके कुछ रोगियोसे बात भी की थी और निश्चय किया था कि उनकी चिकित्सा समझनेके

लिए इनके चिकित्सालयमे एक सप्ताह रहूगा। अत. मैंने इनकी चिकित्सा-पद्धतिके बारेमे कोई प्रश्न नही किया। मुझे चुप होते देख डा० लीफने प्रश्नोंकी झडी लगा दी। हिंदुस्तानमें प्राकृतिक चिकित्साके आगमनके इतिहाससे आजतकके प्रचार और विकासके सबधमे पूछ गये। इन्हें बडा सतोष हुआ और बोले, "हिंदुस्तानसे हमे बडी आशाए है।"

पाच बज रहे थे, बसके आनेका समय निकट आ गया था। हम उठ खडे हुए। डा० लीफ दूरतक मुझे पहुचाने आये। लौटे तो मुडकर मैंने देखा डा० लीफ बच्चोकी तरह दौड़े अपने घरकी ओर जा रहे है। डा० लीफका सारा काम जितना प्रेरक था उसके अनुपातमे इस ६३ वर्षके जवानका दौडना कम आश्चर्यजनक नही था।

: १३ :

डा० डमरके साथ

मै 'ब्रिटिश कालेज ऑव नेचरोपैथी' कई दिन गया। शिक्षण-पद्धति समझनेके लिए कई कक्षाओमें बैठा भी। कई प्रोफेसरोसे बात की। इनमे डा० थामस जी० डमर मुझे अधिक प्रतिभाशाली प्रतीत हुए। इनसे भी बाते हुई और कई बार हुई। मुझसे बात करनकी इनकी इच्छा भी बढ चली और इन्होने मुझे स्वय अपने घर बात करनेके लिए आनेको निमत्रित किया। मेरे साथ श्रीशाह थे। उन्होने डा० डमरका पता नोट कर लिया और दूसरे दिन शामको हम लोग डा० डमरके घरके लिए निकले, पर उनके घरके निकट आकर हम भटक गये, अत जहा आठ बजे डा० डमरके घर पहुचना था, वहा हम आठ बजे रास्तेमें ही रहे। फिर वही रास्तेसे उन्हे फोनकर उनके घरका ठीक रास्ता समझा और हम लोग उनके घर साढे आठ बजे जा पहुचे। डा० डमर हमारी प्रतीक्षा कर ही रहे थे। उन्होने दरवाजा खोला और अपने छोटे पर सुरुचिसे सजे कमरेमें हमें लिवा ले गये। बाते शुरू हुई। मैने कहा, "प्राकृतिक चिकित्साका कोई अच्छा-सा इतिहास भी तो होना चाहिए, जिससे प्राकृतिक चिकित्साके विद्यार्थी उसके उन्नायकोसे परिचित हो सके तथा ससारमे हुई इसकी प्रगति और विकाससे परिचित हो सके।"

"चाहिए तो जरूर, पर है नही। कही-कही कुछ लिखा गया है, उसे जोडकर कुछ बन सकता है।"

"और प्राकृतिक चिकित्साके साहित्यका इतिहास तो होगा ही नही।"

"हा, ऐसी कोई चीज मेरे देखनेमे नही आई, पर प्राकृतिक चिकित्सा-पर एक पुस्तक मै फ्रासीसी भाषामे लिख रहा हू। उसके आरभमे मैने प्राकृतिक चिकित्साका इतिहास जोडा है।" यह कहकर उन्होने अपनी पुस्तककी पाडुलिपि निकाली और इतिहासपर लिखे पृष्ठ मेरे सामने कर दिये, जो तीन थे। निश्चय ही मुझे इससे सतोष नही हो सकता था। मै तो चाहता था कि कोई वृहत् इतिहास हो जिसमे प्राकृतिक चिकित्साके उन्नायकोका जीवन पूरी तरह वर्णित हो और उनकी रचनाओका विशद परिचय हो।

"क्या फ्रेचमे प्राकृतिक चिकित्साका साहित्य है?"

"नही, बिल्कुल नही। एक प्रकाशकने गाधीजीकी 'आरोग्यकी कुजी' का अनुवाद प्रकाशित किया है और उन्होने ही मुझसे प्राकृतिक चिकित्सासे परिचित करानेवाली एक छोटी पुस्तिका चाही है। यदि उसे वहाके लोगोने पसद किया तो वे फिर मुझसे कोई बडी पुस्तक लिखवायेगे।"

"आप अग्रेजीके किन लेखकोको अधिक महत्त्व देते है?"

"लिडल्हारकी पुस्तके ठीक है, पर आजकी जरूरतके हिसावसे वे भी पीछे पड गई है। आज अमरीकाके डाक्टर शेल्टन बहुत अच्छा लिख रहे है। उनकी पाच-छ बडी-बडी पुस्तके निकल चुकी है।"

"डाक्टर केलागकी कृतिया आपको कैसी जचती है?"

"बहुत ठीक है।"

"उनकी 'रैशनल हाइड्रोथिरैपी' को आप क्या प्राकृतिक चिकित्सा कहेगे?"

"क्यो, क्या बात है?"

"उसमें जल-चिकित्साको ऐसा उलझा दिया गया है कि वह औषध-वादकी उलझनसे कम नही है।"

"पर उस हजार पृष्ठोके ग्रथका सार किया जाय तो एक ही पृष्ठ होगा। हमे तो सारसे मतलब है।"

"और उनकी न्यू डायटेटिक्स ?"

"वह तो बिल्कुल डाक्टरी है।"

"भोजनपर आप कौन-सी किताब पसद करते हैं ?"

यहा डा० डमर अटक गये। किसी किताबका नाम लेते नही बन पडा। बोले, "हैरी बेंजामिनकी ठीक है।"

डा० डमर

"उन्होने तो सारे विचार डा० हेसे लिये है।"

"तो भी ठीक ढगसे और सरलतासे रक्खे है। हा, राबर्ट मैकेरीसनकी पुस्तक 'न्यूट्रिशन एण्ड नेशनल हेल्थ' अच्छी है। एक और छोटी-सी पुस्तक बहुत पहले छपी थी 'सेंसिबुल फूड फॉर ऑल', वह भी अच्छी थी। उसके लेखक है एडगर सैक्सन।"

भोजनपर बात चल पडी, अत श्रीशाहने भोजनके मिश्रणका प्रश्न सामने रक्खा तो डा० डमरने कहा, "केवल मास श्वेतसारके साथ नही लेना चाहिए, और सर्व तो ठीक है। प्रोटीनमें दालें और गेहू करीब-करीब

बराबर ठहरते है। घनीभूत प्रोटीन मास-अडेमे ही होता है।" फिर उन्होने अपना भोजन बतलाया कि "मै सुबह फल, भिगोई हुई किशमिश और कुछ गिरीवाले मेवे, दोपहरको फल या केवल सलाद खाता हू और शामको रोटी-मक्खन और सब्जी।" फिर भोजन बनानेके सबधमे बात चल पडी—कहा, कैसे लोग क्या बनाते है। बात बढी जा रही थी तो मैने उसको मोडनेके ढगसे पूछा—"डाक्टर, आपके लदनके लोगोके जीवनमे जब इतनी तेजी है तो आप इनकी प्राकृतिक चिकित्सा करेगे कैसे?"

"यहाके लोग यो भागते नजर आते है कि लगता है, सारे-के-सारे पागल हो गये है, पर किसके पीछे—यह समझमे नही आता।"

"फिर इनकी क्या सहायता होगी?"

"हम इन्हे जीवनके प्रति दृष्टिकोण देना चाहते है और आराम करनेकी विधि सिखाना चाहते है।"

"इनपर प्राकृतिक चिकित्सा काम करती है?"

"हा, करती है और आस्टियोपैथी बहुत मददगार होती है। इन्हे एक तरह बैठे-बैठे या टढे होकर या किसी अगपर विशेष जोर डालकर काम करना पडता है। वैसी दशामे शरीरकी हड्डियोके स्वाभाविक ढाचेमे अतर पड जाता है, फलत विविध रोग उत्पन्न होते है। हड्डियोको ठीक तरह बैठाना और शरीरका शोधन करना रोगमुक्तिमे सहायक होता है।"

"क्या हर रोगीको आस्टियोपैथीकी जरूरत होती है?"

"अधिकाशको होती है। देशके उद्योगीकरणका यह अभिशाप है कि आदमी अपनी ठीक आकृति भी बनाये नही रह सकता। आपका देश भी तो उद्योगीकरणकी ही ओर जा रहा है।"

"हा, बबई, कलकत्ता, मद्रासकी दशा तो आपके लदन-जैसी ही है, पर हमारा देश कृषि-प्रधान है। वहा लोग गावोमे रहते है।"

"गाववालोको तो थोडेसे नहान और भोजनपरिवर्तनसे ही लाभ पहुच जाता है।"

"कभी-कभी ऐसे रोगी मिलते है, जोठीक हो जानेपर भी उठ नही पाते। उनकी जीवनी-शक्ति बढ नही पाती। रोग थोडा-बहुत उन्हे लगा ही रहता है। कुछ भी भोजन दो, कसरतें कराओ, पर वे अपनी जगह ही रहते है। आपको भी ऐसे रोगी मिले होगे। आप उनके सबधमें क्या करते है ?

"हमने उनके लिए उपाय पा लिया है—वह है जडी-बूटिया। इनकी तो यहा शहरके हर रोगीको जरूरत होती है। आखिर जडी-बूटिया क्या है ? उनमें भी तो सूरजकी शक्ति और पृथ्वीकी शक्ति इकट्ठी रहती है। अनेक बूटिया नाडियोको शात करती है और शरीरको आराम मिलता है। फिर अन्य चिकित्सा ठीक काम करती है।"

"आप कितनी तरहकी जडी-बूटियोका प्रयोग करते है ?"

"एकसौ बीस, पर वे सभी ऐसी है, जिनमें विष बिल्कुल नही है। एक तरहसे सभी भोजनका काम दे सकती है।"

"यह तो ठीक है कि विष न होनेपर वे रोगको दबायेंगी नही, उसके निष्कासनमे ही सहायक होगी, पर फिर भी एक रोगके लिए एक बूटी—यह दवा ही तो हुई। रोगी समझेगा कि दवा रोगको दूर कर रही है; फिर वह अपना जीवन कैसे सुधारेगा ?"

"यहा ऐसे बहुत लोग है, जो केवल जडी-बूटियोसे रोगियोकी चिकित्सा करते है। हम उन्हे औषधोपचारक ही समझते है, प्राकृतिक चिकित्सक नहीं। हम अपने रोगियोको प्राकृतिक चिकित्साके सिद्धात बताते है और बताते है कि वे जडी-बूटिया केवल रोग-निवारणमें शरीरकी सहायिका सिद्ध होगी।"

"फिर एकसौ बीस तरहकी जडी-बूटिया ? आप उनका उपयोग कैसे करते-है ? किसका प्रयोग किस रोगीपर किया जाय, इसका निर्णय कैसे करते है ?"

"इसकी मेरी अपनी विधि है। मै बूटी और रोगी शरीरकी विद्युत्शक्तिको तौलता हू और उसीके अनुसार बूटीका चुनाव करता हू।"

"डाक्टर, हमारे यहा तो आयुर्वेद जडी-बूटियोसे ही भरा है। भारत-मे उत्तरसे दक्षिण और पूरबसे पश्चिमतक प्रत्येक ऋतुमें पैदा होनेवाली प्रत्येक लता, पौधे और पेडकी पत्ती, जड, छाल, फूल और फलका गुण-दोष विशद रूपसे वर्णित है, पर वे अपने प्रभावके लिए ही उपयोगमे लाई जाती है। शरीरकी रोग-निवारिणी शक्तिको उनकी सहायतासे बढानेके दृष्टि-कोणमे उनपर कभी विचार नही किया गया।"

"उनमेंसे जो सात्त्विक है, उनका प्रयोग आप अवश्य कीजिये।"

"होमियोपैथी और बायोकेमिस्ट्रीके बारेमे आपकी क्या राय है? कुछ प्राकृतिक चिकित्सक भी यहा यह चलाते सुने जाते है।"

"होमियोपैथी तो दवा ही है। बायोकेमिस्ट्री कुछ कामकी है, पर उसमे भी तो केवल खनिज लवणोका उपयोग होता है, जिनका शरीरसे सामजस्य नही हो सकता। उसका उपयोग भी न करना ही ठीक है।"

"आपने कहा है कि हम यहा लोगोको जीवनका दृष्टिकोण दे रहे है—इससे आपका क्या तात्पर्य है?"

"हम उन्हे शरीर और आत्माकी भिन्नता, आत्माकी उच्चता बताना चाहते है। मै आपको इस दर्शनके बारेमे क्या बताऊ? यह तो आप भारतीयोकी ही चीज है। मेरे मनमे भारतीय दर्शन और आत्मवादके प्रति बडी श्रद्धा है।"

बात करते-करते ग्यारह बज गये थे। अब मैंने डा० डमरसे विदा मागी। बातें बडे ही मैत्रीपूर्ण वातावरणमे हुई थी। हम दोनोंने एक दूसरे-को आश्वासन दिया कि हमारी मैत्री चलेगी और इसी प्रकार पत्रोद्वारा

विचार-विनिमय होता रहेगा। डा० डमरने आरोग्यके लिए भी कभी-कभी लिखनेका आश्वासन दिया। [illegible]

में और श्रीशाह डा० डमरके घरसे निकले और भारतमें प्राकृतिक चिकित्साके विस्तारकी सम्भावनाओंपर विचार करते अपने स्थानपर

एडिनबराकी यात्रा

लदनमे मैं डा० स्टैनली लीफसे मिल चुका था, और भी अनेक प्राकृतिक चिकित्सकोंसे मिला था, और प्राकृतिक चिकित्साके सबधमे जो लदनमे देखने योग्य था, वह भी मैंने अपने हिसाबसे देख लिया था, अत अब मैंने लदनसे बाहर निकलनेका विचार किया।

ब्रिटेनमे मोटे तौरपर प्राकृतिक चिकित्सकोंके दो ग्रुप हैं। एक डा० स्टैनली लीफके इर्द-गिर्द इकट्ठा है, जो कमोवेश बरनर मैकफैडनसे प्रभावित है। दूसरा ग्रुप एडिनबराके डा० थामसनका है। दूसरा ग्रुप छोटा है और प्राकृतिक चिकित्साके मूल रूपको अधिक कट्टरपनसे मानता है। डा० थामसनकी अपनी विचारधारा है, जो किसी प्राकृतिक चिकित्सकसे नही मिलती। ये प्राकृतिक चिकित्साके प्रचार और उसे उचित सम्मान दिलानेके लिए अधिक प्रयत्नशील रहते हैं। एलोपैथोसे तो इनका आए दिन झगडा होता रहता है। एलोपैथोसे विवाद कर प्राकृतिक चिकित्साकी श्रेष्ठता प्रमाणित करनेके लिए यह कटिबद्ध रहते है और उनके छोडे हुए रोगी ले-लेकर उन्हे स्वस्थ करते और उनके पूर्व डाक्टरोंके पास भेजते रहते है। दर्जनो किताबे लिखी है और एक छोटा-सा मासिक-पत्र भी निकालते है, जिसके अधिकाश पृष्ठ इन्हीके लेखो अथवा वाद-विवादसे भरे रहते है। इसका प्रत्येक अक साधारण पाठककी अपेक्षा प्राकृतिक चिकित्सकोंके अधिक कामका होता है। पत्रका नाम है 'रूड हेल्थ'।

मेरा डा० थामसनसे पत्र-व्यवहार पहलेसे चल रहा था। मैंने इन्हे

अपने आनेकी सूचना देकर मिलनेकी इच्छा प्रकट की और दूसरे दिन इनसे मिलने एडिनबराके लिए चल पड़ा। सुबह नौ बजे गाडी छूटनेवाली थी। मै दौड़ता-भागता स्टेशन पहुचा। टिकटबाबूको एक पौड देकर एडिनबराका टिकट मागा।

"महाशय, एडिनबरा यहासे बडी दूर है। टिकटका दाम है ढाई पौंड।"

मैने एक-एक पौंडके दो नोट और दिये। उसने टिकट बढाया और मै टिकट लेकर प्लैटफार्मकी ओर चला। पचास कदम ही गया होऊगा कि बाबू मेरे पीछे दौडता आया और मेरे हाथपर दस शिलिंग रखता हुआ बोला—"आपकी बची रकम।"

मुझे अपनी भूलपर शर्म आई। मैने लजाते हुए उससे कष्टके लिए क्षमा मागी और वह आधीकी तरह दौडता हुआ टिकटघरमें दाखिल हो गया।

आगे प्लैटफार्मके दरवाजेपर टिकटचेकरने मेरा टिकट देखा।

"आप एडिनबरा जा रहे है?"

"जी हा।"

"छुट्टी मनाने जा रहे है?"

"जी हा, और कुछ लोगोसे मिलना भी है।"

"आपकी यात्रा आनदमय हो।"

यहा छुट्टी मनाने बाहर जानेका लोगोको बडा शौक है। यात्रा जैसे इनके जीवनका अभिन्न अग है। मासिक आयका एक भाग यात्राके लिए तो सुरक्षित रहता ही है, ये लबी-लबी यात्राओंके सपने भी देखा करते हैं—जैसे यात्रा ही जीवनको पूर्णता प्रदान कर सकती है और यात्रा करते भी ये खूब है।

गाडीमे बैठा ही था कि गाडी चल पडी। मेरे छ सीटके खानेमें पाच यात्री थे। गाडी बडी तीव्रगतिसे जा रही थी और रास्तेमे बहुत ही

कम जगहोपर इसे रुकना था। धीरे-धीरे मेरे डब्बेके तीन यात्री उतर गये और हम केवल दो रह गये। इस समय मेरे साथी एक प्रौढ व्यक्ति थे, जो एक कुशल व्यापारी प्रतीत होते थे। अकेले रह जानेपर उन्होंने चुप्पी तोडी।

"आप कहा जा रहे है?"

"एडिनबरा। आप?"

"एडिनबरा ही, वही मेरा घर है। एडिनबरा आप किस कामसे जा रहे है?"

"मुझे वहा कुछ प्राकृतिक चिकित्सकोंसे मिलना है?"

"वहासे कहा जायगे?"

"ब्रिस्टल, किलमोर और स्टेट फोर्ड ऑन एवन।"

"तो आप साहित्यिक है?"

"जी, साहित्यसे मेरा अनुराग अवश्य है, अत मै स्टेट फोर्ड शेक्सपीयरका गाव देखने जाऊगा, पर मै प्राकृतिक चिकित्सक हू और पत्रकार।"

"आपने अपनी यात्राका रास्ता निश्चित कर लिया है?"

"अभीतक तो नही।"

उन्होंने तुरत अपना बैग खोला और ग्रेटब्रिटेनका एक बडा-सा नक्शा निकाला।

"आप इतना बडा नक्शा अपने साथ हर समय रखते है?"

"मै एक कपनीका आर्गेनाइजिग मैनेजर हू। यह नक्शा मेरी कपनीने छापा है, इसपर हमारी सारी एजसियोंके स्थान चिह्नित है।"

उन्होंने मेरे लिए रास्ता निश्चित कर दिया और रेलवे टाइम-टेबुल देखकर गाडीका समय भी लिख दिया। अब तो इन महाशयसे मेरी दोस्ती जुड गई। रास्तेके सारे स्थानोका वह मुझे परिचय कराने लगे, फसलोंके

नाम बताने लगे और बताया कि एडिनवरा बडा सुदर नगर है। उन्होने वहाके दर्शनीय स्थानोका भी परिचय दिया।

"यहा पीनेका पानी मिल सकता है ?"

"जरूर मिलेगा, चलिये डाइनिंग कारमे देखा जाय।"

मै वहा गया।

"एक गिलास पानी चाहिए।"

"चाय, काफी, वियर कुछ नही?"

"नही, मुझे पानी ही चाहिए। वही मुझे देनेकी कृपा करे।"

उसने मुझे तीन छटाक पानीकी एक गिलास दिया। इसपर मैने उससे दूसरा गिलास मागा तो वह हक्का-बक्का मेरा मुंह देखता रह गया।

चार वजे हमारी रेलगाडीने इग्लैडकी सीमा पार की और स्काटलैडमे प्रविष्ट हुई। सीमाका चिह्न क्रासकी तरहकी एक रगी-सजी पत्थर है। यह चिह्न मेरे साथीने मुझे बडे उत्साहसे दिखाया। वह स्काटिश जो थे। जहा पर्वत और समुद्र मनुष्यको नही वाध सके है, वहा मनुष्य-मनुष्यका पार्थक्य स्वय सीमा बनकर खडा हो गया है।

पाच वजे एडिनवरा आ गया। हम लोग स्टेशनके वाहर आये।

"आप कहा ठहरेगे ?"

"वाई० एम० सी० ए० के छात्रावासमे।"

अगले चौराहेके निकट ही वह छात्रावास था। वह मुझे वहातक पहुचाने गये और मुझसे हाथ मिलाकर विदा हुए।

वाई० एम० सी० ए० मे मुझे तुरत कमरा मिल गया। मैने वहा सामान रक्खा और शहर देखने निकला। एडिनवरा हिंदुस्तानके आगरेकी तरहका ऐतिहासिक नगर है, जहा बहुत-सी पुरानी इमारते है, किले है

और महल है। यह स्काटलैंडका सदासे विशेष शहरी रहा है। स्टेशनके सामनेकी सड़क दो मील लबी है और यही एडिनबराकी प्रधान सड़क है। सडककी दाहिनी तरफ इमारतें और बाजार हैं और बायीं तरफ खुला मैदान जो लगभग तीन फर्लांग चौडा है। मैदानके पार पहाड़ियां और बीचकी ऊची पहाडीपर एक पुराना किला है। सड़क और पहाडीके बीच-का मैदान पार्क है—लबा पार्क, बडा ही खूबसूरत। सडकसे यह लगभग
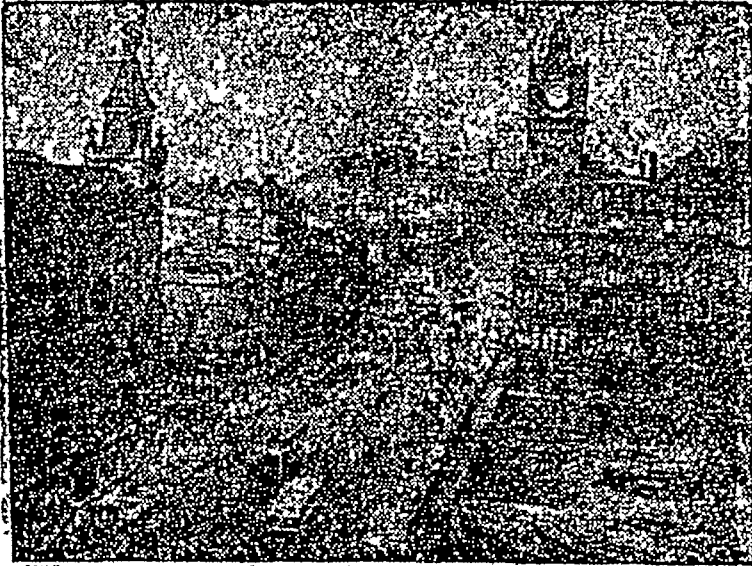
एडिनबराकी एक प्रधान सड़क

पचीस फुटकी निचाईपर है, अतः सडकसे पार्कमें जानेके लिए जगह-जगह सीढियां हैं। पार्ककी हरी घास मखमल-सी लगती है और क्यारियां रग-बिरंगे फूलोंसे सजी हैं। शामका वक्त था। लगता था, सारा शहर ही पार्कमें दौडा जा रहा है। पार्कमें जगह-जगह लोग टोलीमें बैठे बात कर रहे या टहल रहे थे और सर्कसके बीचके ओपेन-एयर थियेटरमें हो रहे गानोंको सुननेके लिए कोई पांच-सात हजार आदमी इकट्ठे थे।

यही सडकके किनारे साहित्यकार सर वाल्टर स्कॉटका लाल पत्थरोका बना स्मृतिगृह है, बहुत ही ऊंचा और खूबसूरत। स्मृतिगृहके बीचमें
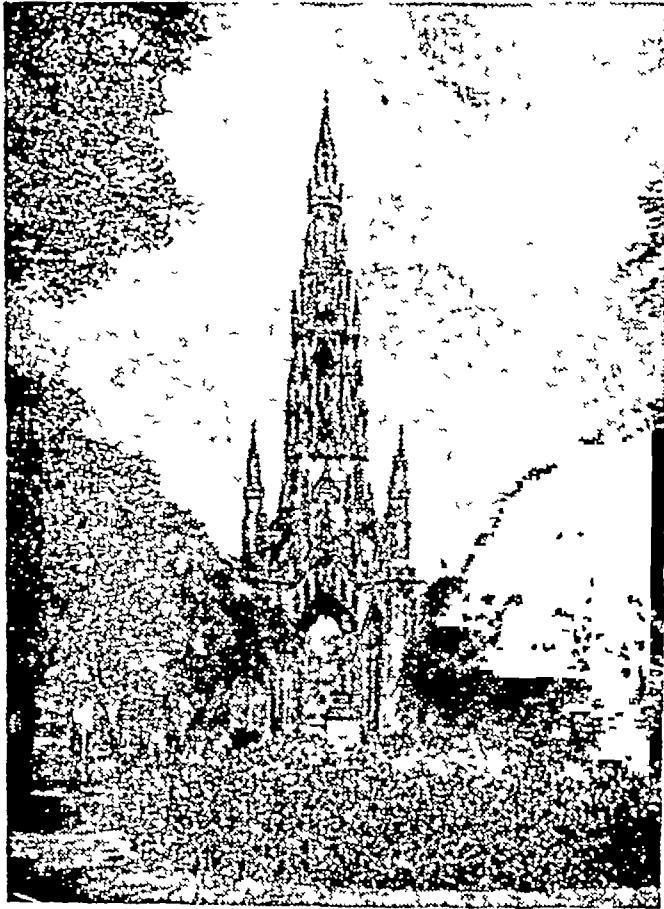
साहित्यकार स्कॉटका स्मृतिगृह

कविवर स्कॉटकी मूर्ति है। स्कॉट एक चबूतरेपर बैठे है और नीचे बैठा उनका कुत्ता उन्हें कृतज्ञतापूर्वक देख रहा है। इस मदिरकी सीढियोद्वारा

ऊपर भी जाया जा सकता है और वहासे सारा एडिनबरा आपके दृष्टि-पथके अंदर आ जाता है।

स्मृतिगृहमें स्कॉटकी मूर्त्ति

आगे बढा तो एक मोडपर दस-बारह बसे खडी दिखाई दी। ये तीन शिलिंग लेकर एडिनबराकी तीन घटे सैर कराती थी। इन्होने सारे एडिन-बराको पाच भागोंमे विभक्त कर रक्खा है। यदि आप इनपर तीन-तीन

घटेकी आठ यात्राएं कर ले तो सारा एडिनवरा देख लेंगे। कुछ अन्य वसे एडिनवराके वाहर भी ले जाती है।

मै एक वसमें जा वैठा। पाच-सात मिनटमे ही वस भर गई। ड्राइवर टिकट वेचने आया। मैंने उसे तीन शिलिंग दिये और टिकट ले लिया। मेरी वगलमें एक सज्जन अपनी पत्नीके साथ वैठे थे। उनके सामने ड्राइवर पहुचा तो उन्होने वहुतसे सिक्के जेवसे निकालकर ड्राइवरके सामने कर दिये। ड्राइवरने सिक्कोमेंसे छ शिलिंग लेकर उन्हे दो टिकट दे दिये।

एडिनवराका समुद्र-तट

"आप कहासे आये है ?"

"हूं मैं ग्रीसका, पर आज ही यहा फ्राससे आया हूं।"

"टिकट खरीदनेकी आपने अच्छी विधि निकाली।"

"देश-दर्शनके लिए यात्रापर हू। जल्द-जल्द देश छोडने पडते है और उतनी जल्दी सिक्कोका हिसाब दिमागमे बैठ नही पाता। फ्रासमे सिर्फ हजारोमे बात होती है, पर यहा तो बात सैकडोतक भी नही पहुचती।"

समुद्रके किनारे

: १५ :
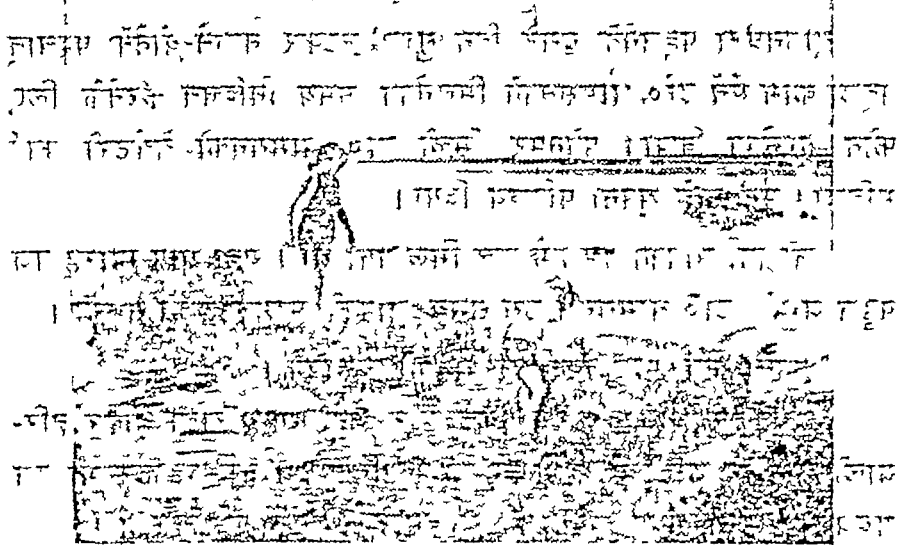
डा० थामसन और उनका चिकित्सालय

एडिनबरा पहुचनेके दूसरे दिन सुबह उठकर नहाने-धोनेके पश्चात् पहला काम मैंने डा० थामसनको मिलनेका समय निश्चित करनेके लिए फोन करनेका किया। फोनपर मिली डा० थामसनकी सेक्रेटरी कोई महिला। मैंने उन्हे अपना परिचय दिया।

"जी हा, आपका पत्र हमें कल मिल गया था। यहा आप ग्यारह बजे पहुच जाय। डा० थामसनसे उस समय आपकी मुलाकात हो सकेगी।"

"अपने यहा पहुचनेका रास्ता भी बताइये।"

"आप तेरह नबरकी बस पकडे और जहा शहर खत्म होकर हरियाली शुरू हो जाती है, वही हमारा क्लीनिक है। बस-कडक्टर भी इस सबधमे आपकी मदद करेगा। वह हमारे स्थानसे परिचित है।"

मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और अपने आनेकी सूचना डा० थामसनको देनेकी प्रार्थना की।

तेरह नबरकी बस पकडनेके लिए मै दस बजे सडकपर बस ठहरनेके अड्डेपर आ गया। बसे पश्चिमकी ओरसे आ रही थी। यह सडक धीरे-धीरे ऊचाईकी ओर गई थी, अत लुढकती हुई आती बसें बच्चोके खिलौनो-सी दिखाई देती थी। सूरजकी रोशनी उनपर पडकर उनके हरे-पीले रगोंको और भी चमकीला बना देती और वे बडी सुहावनी प्रतीत हो रही थी। मेरी बस भी आ गई और उसमे मैंने अपनी जगह ली। बस-कडक्टरसे मैंने अपना गतव्य स्थान बताकर अपना टिकट खरीदा। बस चलती-चलती शहरसे पार हो गई और हरियालीके बीच आ गई।

यहा सडकके दोनो ओर हरी पत्तियोसे लदे वृक्ष थे। थोडी देरमे बस रुकी तो कडक्टरने मेरे पास आकर कहा—"डा० थामसनका चिकित्सालय आ गया।" और उसने सडकके किनारे एक बडे फाटकपर लगे साइनबोर्डकी ओर इशारा किया, जिसपर लिखा था, 'किग्सटन क्लीनिक'। मेरे साथ ही एक अन्य युवक भी उतरे और मेरे साथ ही चलने लगे। मुझे अपने साथ देखकर बोले—"आप डा० थामसनके पास जा रहे है ?"

"जी हा, और आप ?"

"उन्हीके पास।"

"उनसे चिकित्सा करा रहे है ?"

"नही, मै उनका विद्यार्थी हू। इस समय कालेजकी छुट्टी है, पर मै उनकी सहायताके लिए रह गया हू।"

"कालेजमे विद्यार्थी कितने है ?"

"सोलह।"

"और चिकित्सालयमें रोगी कितने है ?"

"तीस।"

मेरा परिचय पाकर विद्यार्थीने मुझसे हिंदुस्तानमें प्राकृतिक चिकित्साके सबधमे बहुत-सी बाते पूछी और चिकित्सालयके सबधमें मेरी हर जिज्ञासाको शात किया।

डा० थामसनका चिकित्सालय एक बहुत बडे बागमें है, जिसके चारो ओर बहुत ऊची-ऊची दीवारें है। यह सारा स्थान पुराने समयमे यहाके किसी छोटे रजवाडेके हाथमे था। चिकित्सालय भी उसीके महलमे है। महलपर ऊचा गुबद है, जो दूरसे ही दिखाई देता है। अहातेमे कुछ और भी इमारतें है। शेष बाग है, जिसमे फूलोकी बहुतायत है। चिकित्सालयके चारो ओर डा० थामसनने रोगियोके लिए तरह- तरहकी तरकारियां भी लगा रखी है।
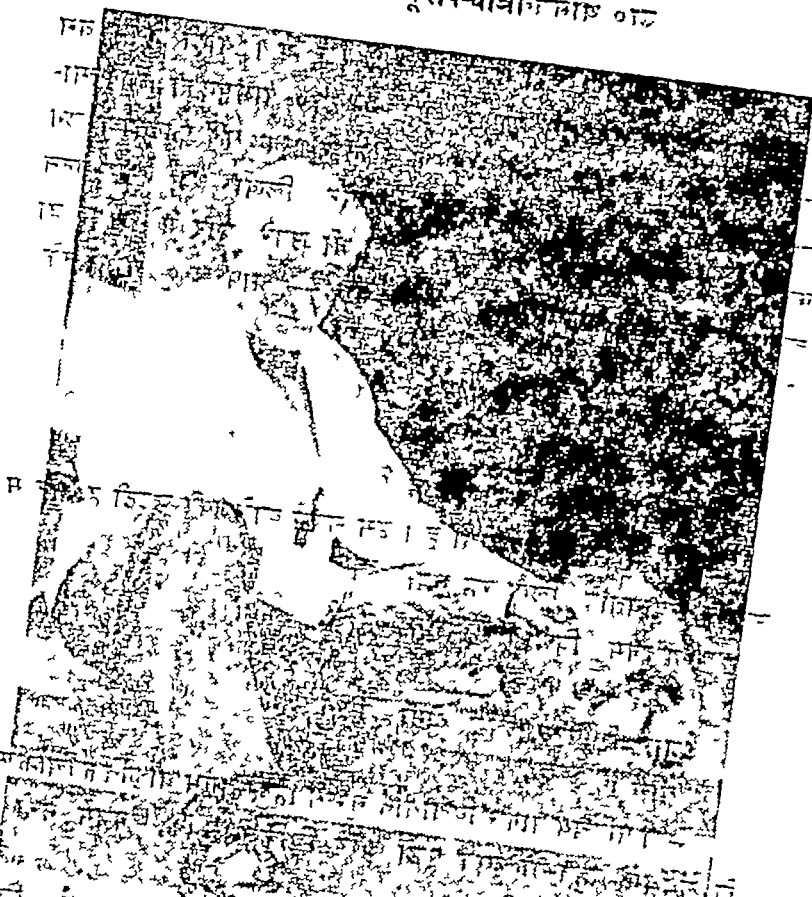
डा० थामसन

चिकित्सालयमें मैं पहुँचा और जल्द ही मुझे डा० थामसन मिल गये। वह दौड़ते-से मेरे पास आये—बूढ़े पर शरीरसे बहुत ही दृढ़, कमर जरा झुकी हुई, पर फिर भी गर्दन ऊँची। आते ही उन्होंने मेरा हाथ पकड़

लिया, "इतने दूर देशसे आये अपने प्राकृतिक चिकित्सक बंधुसे मुझे बडी प्रसन्नता हो रही है।"

डा० वेल्सली थामसन

"आपकी इस आत्मीयताके लिए मैं आपका बहुत कृतज्ञ हूं।"

"वेल्सली," उन्होने अपने चौबीस वर्षीय पुत्रको संबोधित किया, "तुम मिस्टर मोदीको चिकित्सालय दिखलाओ। और मिस्टर मोदी,

अभी मेरे पास दो नये रोगी आ गये है। मै उनसे वात करके निपट लू, तव आपसे फुरसतसे वात करना चाहता हू। मेरा पुत्र वेल्सली मेरे सहकारी-का काम करता है। कालेजका काम इसीके हाथमे है। आप चिकित्सालय देखे, यहा भोजन करें, आराम करे। मै दो वजे वैठकर आपसे वात करूगा। भाग-दौडमे तो मै न आपकी सारी वाते सुन पाऊगा और न कुछ सुना पाऊगा।"

मै श्रीवेल्सली थामसनके साथ हो लिया। उन्होंने मुझे चिकित्सालय दिखलाया, जहा चालीस रोगियोंके रहनेकी जगह है। रोगियोंके रहने और चिकित्सालयका स्थान करीव-करीव डा० लीफके चिकित्सालय-जैसा ही है। वागमे तरकारियोंके खेत भी देखे। ये डा० थामसनको वहुत प्रिय है। लटूस ही अधिक लगी थी, जो शीशोमे वद थी।

चिकित्सालयकी व्यायामशाला विशेषरूपसे उल्लेखनीय है। यह एक वडे कमरेमे है, जहा पच्चीस-तीस आदमी आसानीसे कसरत कर सकते है। यहा तरह-तरहके व्यायाम करनेके साधन रखे हुए है। डाक्टर थामसन-का विश्वास है कि हर रोगीको कुछ-न-कुछ कसरत करनी ही चाहिए। कमजोर-से-कमजोर रोगी भी कुछ कसरत कर सके, ऐसे साधन उन्होंने व्यायामशालामें जुटा रक्खे है।

घासके एक बडे मैदानमे पाच-सात काठकी वडी सुदर-सी झोपडिया वनी थी, जहा वैठकर रोगी धूप-स्नान ले सकते है और पानी वरसने लगे तो झोपडियोमे जाकर वर्षासे वच सकते है।

चिकित्सालयके निकट ही डा० थामसनके कालेजकी इमारत है। थामसनका कालेज ब्रिटेनका पहला प्राकृतिक चिकित्साके शिक्षणका केंद्र है। यह लगभग पच्चीस वर्ष पहले स्थापित हुआ था। यहासे लगभग एकसौ स्नातक कालेजका चार वर्षका कोर्स समाप्त कर डिग्री प्राप्त कर चुके है। मैने श्रीवेल्सलीसे पूछा—"क्या सभी स्नातक चिकित्साका कार्य कर रहे है?"

"हा, अधिकाश कर रहे है।"

"जो नही कर रहे है वे कौन है ?"

"ऐसोमें अधिकाश लडकिया है, जिन्होने शादीके वाद चिकित्साका काम वद कर दिया है, पर कई ऐसी भी है, जिन्होने शादीके पाच-सात वर्ष बाद फिर काम शुरू किया है। कुछ ऐसे भी है, जो चिकित्सा नही चला सके और दूसरा धधा अख्तियार कर लिया। चिकित्सा चलानेके लिए केवल चिकित्साका ज्ञान ही तो काफी नही है।"

एक बजे मैने चिकित्सालयके भोजनालयमे भोजन किया। वहा मेरा टेबुलका साथी एक किशोर था, जो मुझे भारतीय लगा। पूछनेपर पता लगा कि यह दक्षिण अफ्रीकाका है। उसके माता-पिता भारतसे जाकर वहा बस गये थे।

"आप किस रोगसे पीडित है ?"

"मिरगीसे।"

"प्राकृतिक चिकित्साकी ओर आपकी रुचि कैसे हुई ?"

"मेरे वडे भाई यहा लदनमे पढते है। उन्हे मेरे रोगके वारेमें लिखा गया। उन्होने पता लगाया तो उन्हे ज्ञात हुआ कि यह रोग प्राकृतिक चिकित्सासे ही जा सकता है और उन्होने मुझे बुलाकर यहा दाखिल करा दिया।"

"कितने सप्ताह हुए यहा आये ?"

"चार सप्ताह।"

"लाभ है ?"

"मुझे प्रति सप्ताह दौरे आते थे। यहां आनेपर पहले दो सप्ताह तो दौरे आये, इधर दो सप्ताहसे कोई दौरा नही आया है, पर डा० थामसन-का कहना है कि अभी दौरे और आ सकते है।"

"आप निञ्चय कर लीजिये कि दौरे नही आयेगे तो फिर वे नही आयेगे।"

लडकेको बडी तसल्ली हुई। उसका मन चिकित्सामें खूब लग रहा था और यहाकी चिकित्सा और व्यवहारसे वह सतुष्ट था।

दो बजे डा० थामसनसे भेट हुई। वह मुझे अपने परीक्षागृहमे ले गये। हम बैठे तो वह आप-बीती सुनाने लगे, जो कशमकशसे भरी हुई है। उनका सारा काम रोगियोद्वारा दी गई सहायतासे चला है। एक स्त्रीने, जो सब चिकित्सा कराकर निराश हो चुकी थी, अपनी सारी सपत्ति इस चिकित्सालय और प्राकृतिक चिकित्साके अन्वेषणके लिए लिख दी थी। अभी वह मरी है, पर उसकी वसीयतमे उसके भाइयोंके वकीलने खामी निकाल ली और सारी सपत्ति उन्हे मिल गई। उन्होने दो ऐसी और घटनाए सुनाईं, जिनमें डा० थामसनकी आर्थिक समस्या हल होते-होते रह गई।

मै सोच रहा था कि दुनियामें हर जगह प्राकृतिक चिकित्सकोको कितना सघर्ष करना पडता है। यही कारण है कि प्राकृतिक चिकित्साकी ओर बहुत सशक्त व्यक्ति ही आकृष्ट होते है और उन्हे भी खडे रहनेमें कितनी कठिनाई पडती है।

डा० थामसनका प्रवाह रुक ही नही रहा था और समय तेजीसे भागा जा रहा था। मैने उन्हे रोकनेके हिसाबसे पूछा, "डाक्टर, मैने अभी आपके कालेजके श्याम-पट्टपर कुछ अक्षि-विज्ञानके नक्शे देखे है। अक्षि-विज्ञानपर आपका कितना विश्वास है ?"

"अक्षि-विज्ञानका कहना है कि हमारे शरीरमे जो रोग आते है, उनके चिह्न आखोकी पुतलियोपर पड जाते है और रोग जानेकी गतिके साथ मिटते जाते है। अक्षि-विज्ञान रोगके निदानमे बहुत सहायक होता है।"

"अक्षि-विज्ञानमे तो कही गलती नही है, पर रोग किसी अगमे थोडे ही होता है। वह तो सारे शरीरमे होता है, अत किसी अगकी चिकित्सा क्या करनी है, वह तो सारे शरीरकी ही करनी चाहिए।"

डा० थामसनका उत्तर बडा ही प्रकाशपूर्ण था। उनके इस उत्तर-

ने मुझे उनके विचारोके सबधमे अपनी शकाए प्रकट करनेका साहस दिया। मैने कहा, "डाक्टर, आपकी सारी बाते तो समझमे आती है, पर आपका पानी न पीनेका सिद्धात समझमे नही आता।"

"पानीके लिए कुदरतने फल-तरकारिया बनाई है, मनुष्यको उन्ही-से जल प्राप्त करना चाहिए। जो फल-तरकारी न खाय या नमक-मसाले

किंग्सटन क्लीनिक

लें वे ही पानी पीये। मै यहा रोगियोको लटूस (एक पत्तीदार भाजी) खानेको कहता हू जो वे साधारण भोजनके साथ लेते है। मै उन्हे दोपहर और शामको तीन-तीन औंस (डेढ छटाक) मठा भी पीनेको देता हू।"

"विना पानीके उपवास कैसे कारगर हो सकता है ?"

"होगा ही, पर मै एक बारमें दो-तीन दिनके उपवाससे अधिककी आवश्यकता नही समझता ।"

"यहा तो शायद विना पानीके चल सकता है, इतनी ठडक जो पडती है, पर रेगिस्तानमे अथवा गर्म देशमें आपका सिद्धात कैसे चलेगा ? नियम तो सार्वभौम होना चाहिए ।"

"रेगिस्तानकी बात मै नही जानता, पर आपके देशके वबई शहरमे एक ऐलोपैथिक डाक्टर है, जो पानी नही पीते । उन्होने ये विचार मेरे किसी लेखसे लिये और लिखा कि पानी न पीनेसे उनके अनेक रोग गये है और स्वास्थ्य सुधरा है, पर जब मैने उन्हे लिखा कि जिन विचारोंसे आपको लाभ हुआ है, उनका प्रचार करें तो उनका कोई उत्तर नही आया ।"

"और आप एनिमा लेना क्यो मना करते है ?"

"एनिमा लेना मै मना नही करता, पर जबतक लोगोका खयाल रहता है कि एनिमासे ही आते साफ हो सकती है तबतक एनिमा देता हू, पर उसका भी पानी कम करता जाता हू, जिससे उनका एनिमा लेनेका खयाल खतम हो जाय ।"

"यह तो एनिमा छुडानेकी ही बात हुई । फिर तो आप एनिमाके खिलाफ ही है ।"

"है तो कुछ ऐसी ही बात । मेरा अनुभव तो यही कहता है ।"

डाक्टर थामसनको पानी न पीने और एनिमाका प्रयोग न करनेके सबधमे लाख अनुभव हो, पर मै उनके इन विचारोंसे न उनका साहित्य पढकर सहमत हो सका, न उनकी बाते ही मुझे प्रभावित कर सकी । मैने आगे प्रश्न किया ।

"काइरोप्रैक्टिक और आस्टियोपैथी (अस्थिचिकित्सा) के बारेमें आपका क्या खयाल है ? लदनके प्राकृतिक चिकित्सक तो ऐसी बात कहते है, जैसे आस्टियोपैथीके बगैर प्राकृतिक चिकित्सा चल ही नही सकती ।

"काइरोप्रैक्टिकके मैं खिलाफ हू, उसमे शरीरको बहुत जोरके झटके देने पड़ते है, जो बिल्कुल अस्वाभाविक है और उसमे जितनी तेजीसे लाभ होता है, उतनी ही तेजीसे लाभ चला भी जाता है। हा, आस्टियोपैथी कुछ ठीक है, पर वह काम तो व्यायामोद्वारा पूरे तौरपर चल सकता है। आस्टियोपैथी न मैं चिकित्सालयमे चलाता हू और न शिक्षणालयमे ही उसके शिक्षणका प्रबध किया है।"

दो-चार साधारण प्रश्न मैंने डा० थामसनसे और किये और फिर हम उठ खड़े हुए। डा० थामसन मुझे समुद्रके बीचकी उस चट्टानकी तरह लगे, जो अपनेमे दृढ है और जिसकी दृढताको न आधी-तूफान और न उनपर सतत चोट करनेवाली लहरे ही कोई क्षति पहुचा सकी है।

: १६ :

शेक्सपीयरके गांवमें

इग्लेंडमे लोगोकी घूमनेकी प्रवृत्ति इतनी प्रवल है कि लगता है, जैसे ये घूमनेके पीछे पागल हैं। हर शनिवारको अपना घर छोडकर ये सौ-पचास मील दूर अकेले, दुकेले या परिवारके साथ कही-न-कही भाग ही जाते हैं। सालमें एक-दो बार दो-दो तीन-तीन सप्ताहकी यात्रा भी करते हैं। जो जहा जाता है वहासे वहाके चित्रोंके पोस्टकार्ड अपने मित्रोको भेजता है,, जो मित्रोद्वारा वडी शान और अभिमानके साथ रक्खे जाते है और मित्रताके कीमती चिह्न समझे जाते हैं।

जो धनी हैं और जिनके पास मोटर है, वे मोटरके साथ दौडनेवाला एक घर भी खरीदते हैं। वह दो पहियोंपर चलनेवाला वढिया कमरा होता है और सजा-सजाया खरीदा जाता है। सजावटमें एक पलग, दो कुर्सिया, रसोईघरके सारे वर्तन, आलमारी, चित्र आदि होते हैं। मोटरके पीछे इसे जोड लेते हैं और सडकें यहा वढिया होनेके कारण मोटर इसे आरामसे खीचती रहती है। कही चले गये, किसी खुली जगहमें मोटर खडी कर दी, पकाया-खाया, घूमे, तैरे, धूपमे लेटे, रातको कमरेमे सोये और छुट्टी समाप्त होते ही कामपर दौड पडे। इग्लैंडकी किसी भी खूवसूरत और खुली जगहमें ऐसे वीस-तीस मोटरके साथ चलनेवाले कमरे खडे देखे जा सकते हैं।

जिनके पास अधिक पैसे हैं वे फ्रास, जर्मनी, स्विट्जरलैंड, अमरीका आदिकी यात्रा करते हैं। जिनके पास नही है, वे धीरे-धीरे पैसा इकट्ठा करते हैं और ऐसी यात्राए करते हैं। वडी यात्राए, वडी उम्रके लोग ही

मुझे नजदीक जगह इसलिए चाहिए थी कि सामान यहा खुद ढोना पडता है। कुली नही मिलता और थोडी दूरके लिए टैक्सी लेना फिजूल-खर्ची लगती है। मेरा बैग आठ-दस सेरका था और वह भी मुझे ढोते अखर रहा था। कभी बैग इस हाथमे लेता, कभी उसमे। मैने दरवाजेपर पहुच-कर घटी बजाई। एक महिला आ उपस्थित हुई। "मुझे एक रातके लिए जगह चाहिए।"

"दु ख है कि आज मेरे पास कोई कमरा खाली नही है।" दूसरे घर गया, तीसरे घर गया और चौथे घर जानेपर भी जब यही उत्तर मिला तो मुझे लगा कि ये गृहदेविया मेरे काले रगसे भडक रही है। तो क्या मुझे यहा रहनेकी जगह नही मिलेगी? जरा अवसाद-सा आया, तभी एक पुलिसमैन दिखाई दिया। पुलिसमैन यहा बडा सहायक होता है। उसे देखते ही मै समझ गया कि अगर उसे अपनी कठिनाई बताऊ तो वह मेरी कठिनाई दूर होनेपर ही मेरा साथ छोडेगा। उससे जगहोके पते मागे। उसने कहा, "यह बगलमे ही तो है। यहा पूछ देखिये, अन्यथा दूसरे मोडपर पाच-सात घर और है।" उस बगलकी जगहमे मुझे एक कमरा मिल गया। गृहदेवी बोली, "देखिये, कमरेके किराये और नाश्तेके १५ शिलिग (अर्थात् दस रुपये) होगे। मै इसलिए बता रही हू कि सुबह आप बिल देते वक्त झगडा न करें। आपके देशका एक युवक इसी विषयपर मुझसे झगड पडा था।"

"आप दाम तो बहुत वाजिब बता रही है, पर मै नाश्ता आपसे नही लूगा। मै केवल फल-दूध लेता हू।"

"मै आपको फल-दूध दूगी, आपको ताजे फल तो नही, मुरब्बा जरूर मिलेगा, पर आप नाश्ता ले या न ले, खर्च यही होगा।"

"आप नाश्तेकी चिता न करें, मै आपको १५ शिलिग ही दूगा, मुझे आप कल सुबह एक पौड दूधवाली चार बोतले दे और हो तो दो पौड दूध मुझे अभी चाहिए।"

उस वुढ़ियाने मुझे दो पौंड दूधकी एक वोतल तुरत लाकर दे दी और कमरा दिखाने ले चली। मुझे एडिनवरामे साढे सात शिलिंगमे केवल कमरा मिला था, लदनमे १२॥ शिलिंगमे कमरा और नाश्ता, पर यह कमरा उन सवसे ज्यादा अच्छा, साफ और सुदर था। विस्तरमे कवलके साथ एक छोटी-सी रेशमकी वडी ही कलापूर्ण हल्की रजाई थी, नहानघर और पाखाना भी वहुत वढिया था। इस्तेमालके लिए दो सुदर स्वच्छ मोटे तौलिये, सावुनकी नई वट्टी भी थी। मैंने कमरेमे सामान रक्खा, हाथ-मुह धोया, कुछ फल खाये, एक पौंड दूध पीया, कधेपर कैमरा लटकाया और नीचे इन देवीजीकी सेवामे फिर हाजिर हुआ, "शेक्सपीयरके जन्मगृहका पता वता सके तो वडी कृपा होगी।"

"अगले चौराहेसे वढिये, पहले मोडपर दाहिनी तरफ मुडिये, फिर जो चौरास्ता आये, उससे पूरव दिशाको जाइये। सौ गजपर शेक्सपीयर-का जन्मगृह है।"
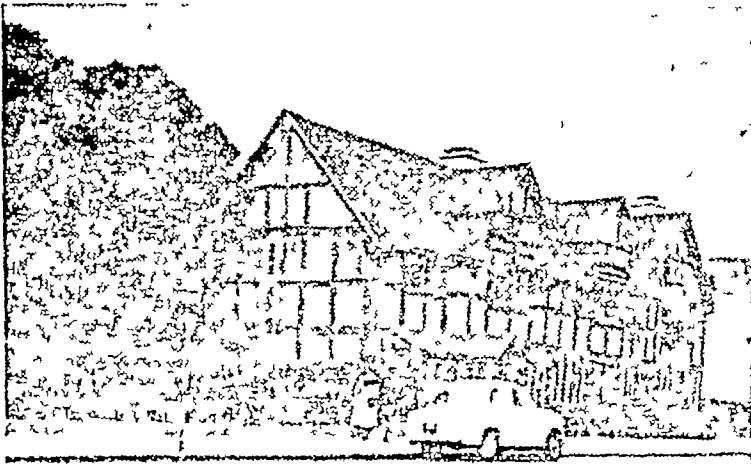
शेक्सपीयरका घर

"कितने मिनटमे मै वहा चलकर पहुच जाऊगा ?"

शानीमे पड गया। अमरीकाकी पत्नी रूसी ! पर वह हमारे आश्चर्यको नहीं समझ पाई, बोली—"मुझे प्राकृतिक जीवनमें विश्वास करनेवाले व्यक्ति बहुत पसद है और भारत-यात्राके बादसे मै भारतको सबसे अच्छा देश मानती हू। मै भारतकी भक्त हू और मुझे भारतीय प्यारे है।"

"क्या आप भारत हो आई है?"

"जी हा, पिछले वर्ष मै और खेलर दोनो बवईमें होनेवाले निरामिष-भोजी सघके विश्व-अधिवेशनकी भूमिका तैयार करनेके लिए भारत-यात्रा-पर गये थे। यात्रासे पूर्व हमने भारत जानेवाले यूरोपीय यात्रियोंके लिए अग्रेजीमें प्रकाशित कुछ साहित्य पढा। पढकर मेरी धारणा थी कि मै एक गर्म जगली देशमें जा रही हू, जहा गदे और असभ्य लोग रहते है, पर सुनिये, मै दुनियामे घूम चुकी हू और मै यह दावेके साथ कह सकती हू कि भारतीय सबसे अधिक साफ होते है। आप चौंकते है। देखिये, मेरा मतलब सडकोकी सफाईसे नही है। मै तो यह कहती हू कि उनके कपडे गदे भले ही हो, पर वे त्वचापर कृत्रिम चीजे लपेट और गदगी छिपाकर साफ नही कहलाते। उनके शरीरसे दुर्गंध नही आती। लीजिये, खेलर आ गये, मेरी गवाही देंगे। मै कहती हू, भारतीयोंके शरीरसे दुर्गंध नही आती।"

"जी हा," खेलरने समर्थन किया, "हम लोग बवईसे दिल्ली रेलमे यात्रा कर रहे थे। सर्दीके कारण डब्बेकी सब खिडकिया बद कर दी गई थी और हमारे डब्बेमें पाच भारतीय और थे। उनकी श्वास-वायु इतनी निर्गंध थी कि सारी रात हम लोग सोये और सुबहतक भी डब्बेमे गध नही थी। आपने शायद महसूस नही किया। खैर, मै आपको बताता हू। अगर भारतीयोकी जगह पाच मास-भक्षी यूरोपीय उस डब्बेमे होते तो दो घटेमें पूरा डब्बा असह्य बदबूसे भर जाता।"

श्रीमती खेलर बोल पडी, "हा, मुझे मांस-भक्षणसे इसलिए घृणा है कि श्वास और त्वचासे बदबू आने लगती है और फिर पाउडर लगाने-की जरूरत पडती है। फिर वह पाउडर भी सडेगा और फिर बदबू। छि-

छि· ।" श्रौर कुछ ऐसा चेहरा उन्होने वनाया कि मांस-भक्ष होनेवाली श्ररुचिकर त्वचा-गध साकार हो उठी।

मै पूछ वैठा, "श्राप भारतसे क्या-क्या लाये हे ?"

"लाया तो पता नही क्या-क्या हू, पर नेहरूजीके साथक चित्र मुझे सवसे अधिक प्रिय लगता है और वह मुझे एशियाकी राज उस पितासे अपनी कुछ देरकी भेटकी याद दिला देता है। हम एव उम्रके हिंदुस्तानी फोटोग्राफरको अपने साथ ले गये थे, श्रौर न जान मै उस दृश्यको नही भूल पाता जव श्रीनेहरूने उस फोटोग्राफरके व हाथ रखकर पूछा था कि तुम भारतके किस स्थानसे आये हो। मै महान् व्यक्तिके इस सौजन्यको कभी नही भूल सका। मै तो यह सो हू कि भारतीयोमें कुछ इस प्रकारकी शक्ति है कि वे अपने हो जाते है अ अपना वना लेते है। दिल्लीके एक समारोहमे मुझे गाधीटोपी भेट द गई। मैने उसे वही पहनकर देखा तो जैसे 'गोरी त्वचामे भारतीय' मेर उपनाम पड गया। मै ऐसा कहे जानेमे गौरव मानता हू। मैने वहा वडा अपनापन पाया। श्रौर ऋषिकेश ! आप गये है कभी वहा ?"

"जी हा, मुझे वह स्थान प्रिय है, अत प्राय वहा जाता रहता हू ।" मैने कहा श्रौर श्रीमती खेलरको जैसे अपना प्रिय विपय मिल गया ! "मै स्वामी शिवानदके श्राश्रमको नही भूल सकती।" श्रौर स्वामी शिवानदजीके ब्रह्मचारी शिष्योंके श्रादर्श सुगठित शरीर तथा ऋपिकेशके तपोमय सात्त्विक वायुमण्डलकी स्मृतियोंके श्रादान-प्रदानके उपरात वार्तालापका वातावरण विलकुल घरेलू वन गया ।

हम श्रीखेलरसे उनसे मागे समयसे कई गुना अधिक समय ले चुके थे, अत. मै उठ खडा हुआ। "इस वार भारत आये तो गोरखपुरमे आरोग्य-मदिर अवश्य आवे।"—मेरा यह निमत्रण पाकर खेलर तो जैसे भावुक हो उठे । वोले, "मै अवश्य आऊगा। भारतीयोंके स्वागतमे जो मधुरता श्रौर आत्मीयता मुझे मिलती है वह मेरी आत्माको सस्कृत करती है। भारत-

यात्राके उपरात मुझमे जो परिवर्तन हुआ है वह ठीकसे मैं आपको नही बता सकता। केवल इतना कह सकता हू कि मेरे जीवनकी अतिम अभिलाषा यह रह गई है कि मेरी मृत्यु भारतमे ऋषिकेशके पुण्य वातावरणमे हो और मैं अगले जन्ममे भारतीय बनू। भारत महान् है।"

खेलरके स्वरमे उनकी आत्माकी गहराई झलक रही थी और वह यह कहते-कहते इतने द्रवित-से हो उठे कि मन-ही-मन मैं अमरीकाके भारत-प्रेमी इस वृद्ध सतको प्रणाम किये बिना न रह सका।

"आप आज सध्याको हमारे ही साथ भोजन करेंगे, तबतक आप मेरी भारत-यात्राका वर्णन पढिये।" और उन्होने मुझे 'वर्ल्ड फोरम'का ग्रीष्माक, जिसमे उनका यात्रा-वर्णन छपा था, भेंट किया।

फोटो सध्याके भोजनपर ही लिये जाय, यह तय कर विदा लेकर हम बाहर आये तो घडीमे साढे ग्यारह बजे थे। मार्टिन एवेन्यूकी चौडी सडकपर मैं और शर्माजी धीमी चालसे वापस आ रहे थे। हम मौन थे, क्योकि सोचनेके लिए जैसे बहुत-कुछ था। रह-रहकर मेरे मनमे यूरोपके प्राकृतिक जीवनके अध्यवसायी प्रचारक इस अमरीकी वृद्धके शब्द गूज रहे थे—"मेरी अभिलाषा है कि मेरी मृत्यु भारतमे ऋषिकेशके पुण्य वातावरणमे हो।"

: २० :

स्विट्ज़रलैंडमें

पेरिस एक सप्ताह रहकर मैं स्विट्जरलैंडके जूरिक शहरके लिए पडा। तीन घंटे फ्रासकी रेल चलकर हमें स्विट्जरलैंडकी सीमामे ले आः यहासे रेल चली तो रास्तेके दृश्य देखकर काश्मीर याद आ गया। लगा। यहा कोई आखोपर पट्टी बाधकर छोड जाता तो भी मैं समझ जाता वि यह स्विट्जरलैंड है। ऊची-नीची पहाडिया, नाले, छोटी-छोटी नदिया, चारो तरफ हरियाली, हरियालीमेंसे झाकते हुए गाव और उनके बगले— सब कुछ बडा सुहावना लग रहा था। कभी-कभी गाव नजदीक आ जाता और हम गावके छोटे-छोटे अहातोमे छोटे-छोटे घर देखते और देखते अहाते फूलोकी क्यारियोसे दबे, घरकी छतपर तथा बरामदोमे फूल, छज्जो-पर लताए और फूलोंके गमले—गोरी-गोरी गुडियोंके घरोदे-जैसे प्रतीत होते थे। चार बज रहे थे और जूरिक आनेवाला था, तभी मेरे निकट बैठी दो वृद्धाए मुझसे बात करने लगी।

"आप कहासे आये है ?'

"हिंदुस्तानसे।"

"यूरोप कैसा लगा ?"

"अपनी कल्पनासे कही अधिक धनवान् मैंने उसे पाया।"

"आध्यात्मिक दृष्टिसे यहाके लोग आपको कैसे लगे ?"

"क्षमा करें, इस सबधमे मैं कुछ कह नही पा रहा हू।'

"बिलकुल अनभिज्ञ और मूर्ख, और यही तो यहाके ऐश्वर्यके आधिक्यमे ो दुखका कारण है। बाहरसे सुखी, पर अदरसे दुखी। लेकिन हमें

आशा है कि भारत यूरोपको शातिके सदेशके साथ-साथ आध्यात्मिकताका भी सदेश देगा। आपके नेता गाधीजीने तो राजनीतिके साथ हिंदुस्तानकी आध्यात्मिकता भी बढाई।"

यहा मैं जरा चौंका, पर कुछ ऐसी ही वाते मुझसे यहा मिले प्राय हर वृद्धने कही थी। फर्क इतना ही था कि वृद्धाकी वाते तीव्र आलोचनात्मक थी। "जी हा, वह साध्यके लिए साधनकी पवित्रतामें विश्वास करते थे, अत राजनीतिमें उन्होने अहिंसाका प्रतिपादन किया।"

"आपके यहा भगवान् बुद्धके वोये अहिंसाके वीज भी तो थे।"

"वीजोंके तो एक देशसे दूसरे देशमें जानेमे देर नही लगती। कोई न ले जाय तो भी वे उडकर चले जाते है।"

मेरी यह उक्ति सुनकर उक्त महिला मुस्करा पडी। तभी पोर्टरने सूचना दी—"जूरिक आनेवाला है।"

मैंने कहा, "यहा पोर्टर सूचना देता है?"

"जी हा, यह स्विट्जरलैंड है। यहाके लोग वडे ही अतिथि-प्रेमी है और उनकी सुविधाका वहुत ध्यान रखते है।"

स्टेशनके निकट ही वढिया होटल मिल गया। यहा होटलोकी कमी नही है। अकेले जूरिकमें ही इतने होटल है कि छ हजार आदमी एक साथ ठहर सके। दस मिनटमे ही होटलका आदमी स्टेशनसे सामान ले आया और हम नहा-धोकर शहर देखने निकले।

आते ही मैंने विर्चर वेनर क्लीनिककी सचालिकाको फोन कर दिया था और उन्होंने मुझे छ बजे क्लीनिक देखने वुलाया था। उनकी इच्छा थी कि मै वहा भोजन भी करू। विर्चर वेनरका क्लीनिक अपने भोजनसवधी अनुसधानोंके लिए प्रसिद्ध है। इन अनुसधानोका असर सारे स्विट्जरलैंडपर पडा है। विर्चर बेनरने भोजनमें पचास प्रतिशत कच्ची तरकारिया और फल रखनेकी सिफारिश की है। उन्होने सेवको बहुत ही महत्त्वपूर्ण फल माना है। परिणाम यह हुआ है कि आपको स्विट्जरलैंडके हर होटलमे भोजनके

साथ कच्ची तरकारिया जरूर मिलेगी और सेवका ताजा रस तो आप कही भी खरीदकर पी सकते है।

मैने टैक्सी ली और सबसे पहले बिर्चर बेनर क्लीनिक गया। वहा मुझे क्लीनिककी सचालिका दरवाजेपर ही मिल गई। उन्हे पहचाननेमे देर नही लगी। उन्होने मुझे घूम-घूमकर क्लीनिक दिखाया। यह चिकित्सालय उनके पिताने स्थापित किया था। उनके देहावसानके बाद यह उनकी सपत्ति हो गई है। इनके पति इस चिकित्सालयके एक डाक्टर है और यहासे निकलनेवाली आहारसबधी जर्मन मासिक पत्रिकाके सपादक है। वह उस समय मौजूद नही थे, अत' सचालिकाने चिकित्सालयके एक अन्य डाक्टरसे मेरी बात कराई। ये केवल जर्मन जानते थे, पर सचालिकाने इनके लिए दुभाषिएका काम किया। सीधी बात न होनेके कारण बहुत बात न हो सकी, पर ज्ञात हुआ कि ये उपवास, जलोपचार और भोजनद्वारा ही अधिकतर रोगियोकी चिकित्सा करते है। कभी-कभी किसी रोगीको शुरूमे दवा भी देते है। कुल पचास रोगी रहते है। तीन डाक्टर है और कई नर्सें।

भोजनशालामे एक भारतीय महिलासे भेट हो गई। वह यहा चिकित्सा करा रही है। वह अपने अन्य रोगकी मुक्तिके साथ-साथ अपना वजन घटाने भी यहा आई है, जिसके लिए उन्हे दो सप्ताहका उपवास कराया गया था और बदन सुडौल बनानेके लिए मालिश की जाती है तथा उपयोगी कसरतें कराई जाती है। भोजन मैने उनके साथ ही किया। भोजनमे फल, मेवे, चोकरसमेत आटेकी रोटी, दूध और सेवसे बनी कोई वस्तु मिली, जिसे यहा मुसली कहते है। तरकारी ये दोपहरको देते है, पर जो भी था, रुचिकर था।

भोजनके बाद श्रीमती मार्टिन—यही उक्त भारतीय महिलाका नाम था—मेरे साथ घूमनेमे भी शरीक हो गई। वह मुझे जूरिक झीलके किनारे ले गई। यह झील तीस मील लबी और औसतन एक मील चौडी है और जूरिकको तीन ओरसे घेरे हुए है—स्वच्छ हरा जल, किनारेपर बड़ी-बड़ी दुकाने, होटल, बेहिसाब चहल-पहल। सैकडो नावे झीलमे दौड रही थी।

काश्मीरकी डल झील याद आ गई, पर डलसे इसकी तुलना यदि की जाय तो डलको भिक्षुणी कहें तो जूरिक झीलको नवविवाहिता दुलहन कहना पडेगा।

दूसरे दिन हमने एक ऐसी बस ली, जिसने हमे दो घटेमें जूरिक दिखा दिया। जूरिक चार लाखकी आबादीवाला यूरोपका अपनी स्वच्छताके

जूरिक झील

लिए प्रसिद्ध शहर है। शहर झीलके इधर-उधर पहाडीपर बसा है, जहा ट्राम, बसें और स्थानीय रेलें जाती है। ये सभी यहा बिजलीसे चलती है। जूरिकमें बडी-बडी यूनिवर्सिटिया है, इजीनियरिंग तथा प्रसिद्ध मेडिकल कालेज भी है। यहा ससारकी सबसे बडी बीमा-कपनिया है, घडियोंके

तथा कई तरहके अन्य व्यवसाय हैं। जूरिकके नजदीक वहुत-सी सुदर जगहे हैं, जिनसे आकृष्ट होकर स्विटजरलैंड आनेवाले दस यात्रियोमेसे नौ यात्री जूरिक जरूर जाते हैं।

तीसरे दिनके लिए प्राकृतिक सौंदर्य दिखानेवाली मोटरमे हमने सीट रिजर्व करा ली। छोटी-सी साफ वस थी, अठारह आदमी वैठ चुके थे। दो हम वैठे और वस चल पडी।

पच्चीस मील चलकर हम वूमन पहुचे। यह छोटी-सी आवादी है। पानीकी छोटी-छोटी वूदे धीमे-धीमे गिर रही थी, तभी हमारी वस एक होटलके सामने रुकी और होटलकी मालकिन छाता लिये दौडकर वसके दरवाजेपर आ गई। वह मुस्करा-मुस्कराकर हमे उतारने लगी और अपने छातेसे हमे भीगनेसे वचानेकी कोशिश करने लगी। उस वृद्धाकी मुस्तैदी देखकर हैरानी होती थी। हर यात्रीको उसने अपने स्नेह और मुस्कराहटकी मिठाससे सराबोर कर दिया। होटलमे आकर हम वैठे ही थे कि एक मुस्कराती हुई लडकीने आकर हमसे नाश्तेका आर्डर मागा। जव वह हमारे लिए फल- दूध लेकर आई, हम साथ लाये हुए भीगे वादाम छील-छीलकर खा रहे थे। मैंने थोडे वादाम उसे भी दिये तो वह कृतज्ञतासे भर उठी। जवतक हमने नाश्ता किया, वह वार-वार निकट आकर हमारी जरूरत पूछती रही और जव हम विदा हुए तो वह देरतक हमें देखती और हाथ हिलाती रही।

यहासे वस चली तो वह प्राकृतिक दृश्योके ही बीच रही—रास्तेके दोनो ओर हरे-भरे वृक्ष, हरियालीसे लदी पहाडिया, चौडी गहरी मीलो लवी घाटिया, वडे-वडे झरने। बीच-बीचमें गाव आते, जो जरा मुझे चुभते। इन प्राकृतिक दृश्योंसे में उनका सामजस्य स्थापित नही कर पा रहा था, पर यहा तो सारे ही पर्वतीय स्थानोमे आधुनिक साधन पहुच गये हैं। सारे पहाडोमें ही नही, उनकी चोटीपर भी रेले जाती हैं। अगम्य चोटियोपर भी केबिल ट्रेने पहुच गई हैं, जो तारोंके रस्सोके सहारे चलती हैं। सडकपर जगह-जगह टेलीफोन था।

दो घटे वाद हमे वर्फ भी दिखाई देने लगी। काश्मीरमे नगे पर्वतोकी चोटियोपर वर्फ देखी थी, पर यहा तो हरे पर्वतोपर वर्फ थी। वर्फ कभी-कभी हमारे नजदीक ग्रा जाती ग्रौर ग्रागे तो बर्फ-ही-वर्फ दिखाई देने लगी।

११ वजे हमारी वस रोन नदीके उद्गमके नजदीक फुरकामे रुक गई। यहा ग्रावादी बिल्कुल नही है, पर यात्रियोंके लिए एक वडेमे कमरेमें वाजार लगा हुग्रा था, ज्हा गावोमे वनी चीजे, खिलौने, घटिया, वच्चोके जूते ग्रादि वहुत-सी वस्तुए विक रही थी। कुछ रग-विरगे पत्थर भी थे, जिनके ये पहाड वने है।

वाजारके पास बैठा एक ग्रादमी एक-एक फ्रैक (ग्रठारह ग्राने) लेकर वाजारसे लोगोको वाहरकी ग्रोर ले जा रहा था। हम भी गये। यहा तो वर्फका पहाड ही था ग्रौर वर्फमें यह गुफा! लोग गुफामे जा रहे थे ग्रौर एक दूसरी गुफासे निकल रहे थे। क्या इस गुफामें जाना ठीक रहेगा?——यह विचार मस्तिष्कमें एक क्षणको ही रुका होगा। जव सव लोग जा रहे है तो डर क्या है? गुफा वर्फका ही एक भाग थी। वर्फ तो सफेद होनी चाहिए, पर यह नीली क्यो? शायद वाहर गुफापर चमकती सूर्यकी किरणे इसे नीला ही नही, पारदर्शक भी वना रही थी। नीले रगकी यह गुफा इतनी सुदर लग रही थी कि शरीरका रोम-रोम ग्राखें हो जाना चाहता था। मस्तिष्क मनकी ग्रनुभूतिया गहराईसे पकडकर ग्रपने ग्रदर सजोकर रखनेके लिए तीव्रतासे क्रियाशील था। क्या इतना स्पदित करनेवाली दूसरी ग्रनुभूति भी दुनियामे होगी? ग्रादमी शरीरको जमा देनेवाली वर्फमेसे गुजर रहा है ग्रौर ग्रानद मना रहा है। डेढसौ गज चलकर हम एक छोटे गोलाकार कमरेमे ग्रा गये। यहा दो दीपक जल रहे थे। यहा ग्राकर प्रेमी ग्रौर प्रेमिकाए एक-दूसरेको चूमने ही लगे। प्यारके स्मृतिचिह्न ग्रकित करनेका इससे वढकर दूसरा उपयुक्त स्थान इस पृथ्वीपर ग्रौर हो भी कौन-सा सकता था? चारो तरफ शिव-ही-शिव व्याप्त था, सुदर भी सजग हो उठा था।

मुड़कर हम वाहर निकलनेवाली गुफासे चले और एक तृप्तिकर आनदा-नुभूति लिये वाहर निकले। वाहर लोग बर्फसे खेल रहे थे। वर्फके गेद

स्विट्ज़रलैंडके पहाड़ोमें अनेक रास्ते दृश्य-दर्शनके लिए बनाये गए हैं।

अपने मित्रोपर फेक रहे थे और उनकी मार खुशी-खुशी सह रहे थे,

पर बस चलनेका समय हो गया था, अत खेल छोडकर बसमें आना पड़ा ।

अब तो बस बर्फकी दीवारोंके बीच चल रही थी । बर्फ कभी सरसे ऊची हो जाती, कभी नीची । बर्फकी अनेक आकृतिया बनी हुई थी ।

बर्फकी यह गुफा समुद्रतलसे केवल २२०० फुटकी ऊचाईपर है । अबतक हमारी बस ऊचाईपर चढती आई थी, उसकी गति बहुत धीमी थी, अब ढाल मिलनेपर उसकी गति तीव्र हो गई। बर्फ कम होने लगी और हरियाली अधिक दिखाई देने लगी । मीलो नीची घाटिया, उनके करार-परसे चलती बस, बडा विचित्र दृश्य था । घाटियोको घेरे गगनचुबी पर्वत घाटियोमें रहनेवाले ग्रामीणोंके सजग प्रहरीसे लगते थे । गुफातक पहुचनेके लिए बस सर्पाकार रास्तोंसे चढती आई थी, अब वैसे ही रास्तोंसे उतरने लगी । ज्यो-ज्यो वह उतरी, घाटीके घर बडे होने लगे और घाटी अधिक स्पष्ट ।

कुहासा तो जैसे जादूगर ही बना बैठा था । कभी रास्ता दिखाई देना कठिन हो जाता तो कभी वह हटकर मीलो लबा दृश्य स्पष्ट कर देता, सूर्य चमकने लगता और मै दौडती बससे ही फोटो लेनेके लिए कैमरा ठीक करने लगता । एक-एक दृश्य देखकर मन नाच उठता था । मै उन्हे कैमरेमें बाध लेना चाहता था, पर कैमरेकी इस अनत सौंदर्यके सामने क्या बिसात !

हमारी बसको देखकर हर गुजरती कार और बसमेंसे हाथ निकलकर हिलने लगते । रास्तेके गावोमे ग्रामीण बालाए और युवक हमें देखकर मुस्करा-मुस्कराकर हाथ हिलाते, हमारा स्वागत करते । उनकी मधुर सरल फूलो-सी मुस्कान हृदयमे उतर जाती, गैर अपने बन जाते ।

यहाके सारे पहाडोको फूलोका बाग कहा जाय तो अत्युक्ति न होगी । हर जगह तेज, हलके, चटकीले रगोके फूल-ही-फूल थे—कोई कमलसे बडे तो कोई सरसोके फूलसे छोटे । हर पडावपर इनके गुलदस्ते बिकते दिखाई

देते और बच्चे हमारी बस रोककर इन फूलोके गुलदस्ते बेचनेकी कोशिश करते। जहा भी बस रुकती, हमारी बसकी पथ-प्रदर्शिका पहाडियोपर दौडती चढ जाती, फूल चुन-चुनकर गुलदस्ते बनानेमे लग जाती और जब हम बसमे चढते तो कभी किसीको और कभी किसीको अपनी तरह हँसते-मुस्कराते फूलोके गुलदस्ते भेट करती।

छ बजे पहाडो और जगलोका चक्कर लगाते, झीलो, झरनो, पर्वतोका दर्शन करते हम सुस्तान वापस आ गये। यहा सुबह जिस होटलमे हमने नाश्ता किया था वही भोजन किया और सात बजे यहासे बस जूरिकके लिए चल पडी। अधेरा होने लगा था। उसने अस्पष्ट और सुबह देखे दृश्योंको फिर देखनेकी उत्सुकता कम कर दी। अत. हमारी बसकी पथ-प्रदर्शिकाने रेकार्ड बजाना शुरू कर दिया। रास्तेभर वह हमें माइक्रोफोनसे रास्तेकी जगहोंके नाम, उनकी विशेषताए बताती आई थी। अब माइक्रोफोनका यह उपयोग हमे बडा अच्छा लगा। वाद्य सगीत ही अधिक था, जो बडा मधुर था जैसे विजय-सगीत हो। बसमे बैठी हुई युवतिया सगीतका लाभ उठाकर गाने लगी। गाना खतम होता और तालियोकी गडगडाहटसे बस गूज उठती।

इस प्रकार गाते-हँसते साढे आठ बजे हम जूरिक पहुचे। बससे उतरकर सबने आपसमे हाथ मिलाया और अपने-अपने होटलके लिए चल पडे।

मैं एक दिनमे ढाईसौ मीलकी यात्रा करके लौटा था और आधे स्विट्जरलैंडकी परिक्रमा मैंने कर ली थी। जितना पद्रह दिनमे कश्मीर-में देखा था उसके कई गुना अधिक एक दिनमें देख सका।

क्या मैं स्विट्जरलैंडको स्वर्ग कह दू और उन पर्यटकोके स्वर-मे-स्वर मिला दूं, जो स्विट्जरलैंडको पृथ्वीका स्वर्ग कहते हैं? यदि स्विट्जरलैंड शेप पृथ्वीका स्वर्ग है तो फिर स्विट्जरलैंडवासियोंके लिए किस स्वर्गकी कल्पना की जायगी?

: २१ :

सुंदर झीलवाला नगर जिनेवा

जूरिकसे सुबह दस बजे चलकर हम लोग—मै और मेरे मित्र श्री-नारायणस्वरूप शर्मा—शामको पाच बजे जिनेवा पहुच गये। स्टेशनपर एक बोर्ड लगा था, जिसमें जिनेवाके सभी होटलोंके नाम थे और वे प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय श्रेणीमें विभक्त थे। हर विभागका एक दिनका मूल्य भी लिखा था। हमने अपना सामान स्टेशनके क्लाकरूममें रक्खा और कुछ होटलोंके नाम लिखकर स्थान देखने निकले। स्टेशनके सामनेकी सडक सीधे जिनेवा झीलकी ओर जा रही थी और उसपर इस समय चहल-पहल भी खूब थी। पाच मिनटमे ही हम जिनेवा झीलके किनारे पहुच गये। यह झील कोई साठ मील लबी है और जिनेवा शहरके निकट यह केवल एक फर्लांग चौडी है। शहर इसकी दाई ओर बसा है। झीलके दोनो किनारोको एक करनेके लिए जगह-जगह पुल है। अधिकाश होटल झीलके किनारे ही है। हमने कई होटल देखे। सभीके कमरे वडे करीनेसे सजे थे—फर्शपर कालीन, दरवाजो और खिडकियोपर रेशमी परदे, दूधके फेन-सरीखे धवल बिछावन, आकर्षक फर्नीचर। प्रथम श्रेणीके होटलोंके कमरोमे टेलीफोनके साथ रेडियो भी था। हमने एक अच्छे होटलमे झीलकी तरफका एक कमरा चुना और स्टेशनसे सामान मगाकर शहर घूमने निकले। इस वक्त सूर्यास्त हो चुका था और झीलके चारो ओरका सारा पथ और इमारतें बिजलीकी रोशनीसे जगमगा रही थी। झीलके चारो ओर बल्वकी दुहरी झालरें थी, जिनकी रग-बिरगी रोशनी बडी ही सुदर लग रही थी। दूसरे किनारेके निकट झीलमें एक चारसौ फुट ऊचा फुहारा उड रहा था,

जैसे झीलका ही वह अग हो। अगल-बगलसे उसपर उज्ज्वल प्रकाश डाला जा रहा था, जो फुहारेके जलपर पडकर इद्र-धनुषी छटा दिखा रहा था।
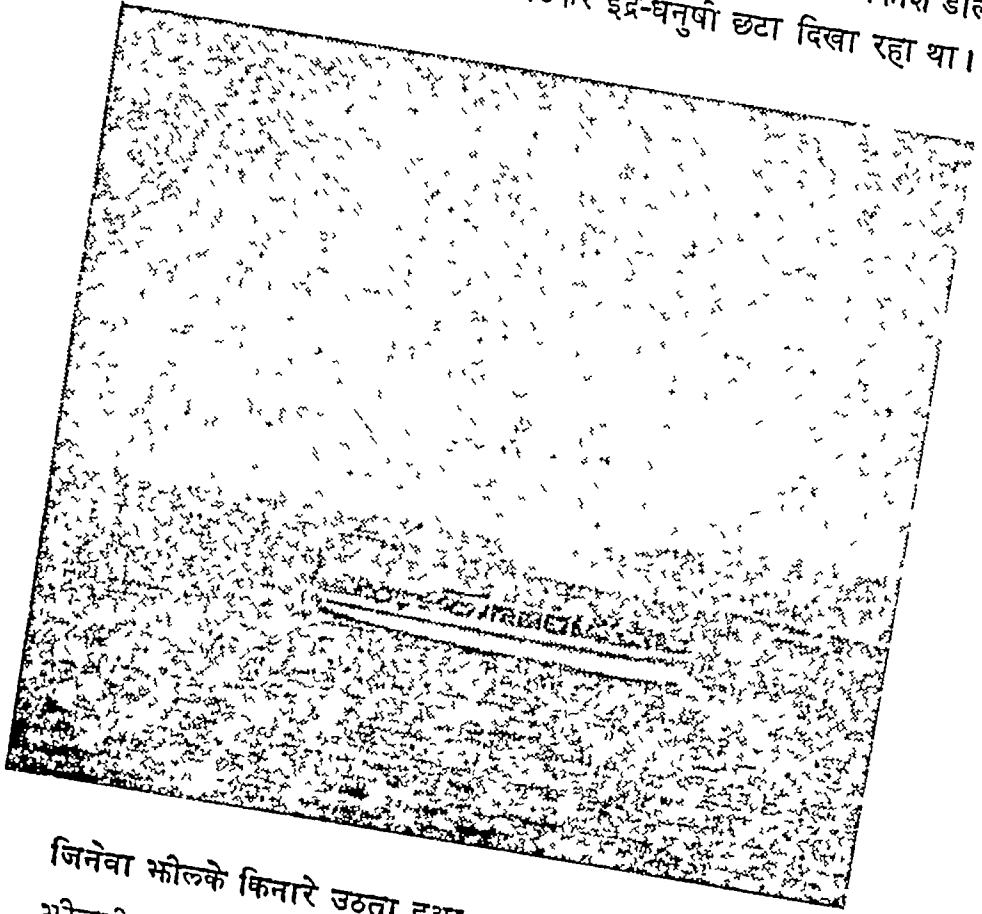
जिनेवा झीलके किनारे उठता हुआ चारसौ फुट ऊचा फुहारा

झीलकी दाहिनी ओर एक बडा पार्क था, जिसके बीचमें एक शामियानेके नीचे गाना हो रहा था। हजारो व्यक्ति इस गानेका रसास्वादन करनेके लिए जमा थे। यहा प्राय प्रतिदिन गायन और वाद्य होता है और इसमे भाग लेते है अपनी कलाको जनतातक पहुचानेको उत्सुक कलाकार। सुननेके लिए कोई टिकट नही लगता, पर कुर्सीपर बैठनेके लिए केवल चार आने देने पडते है।

स्विट्जरलैंड और उसमे भी खास तौरसे जिनेवा दुनियामें अपनी घडियोंके लिए प्रसिद्ध है। जितनी घडीकी कंपनियोंके नाम आपने सुन रक्खे है उन सबकी दुकानें आपको इस झीलके किनारेके रास्तोंपर मिल जायगी। यात्री जिनेवामें ही अपनी घडी खरीदनेका कार्य-क्रम बनाते है।
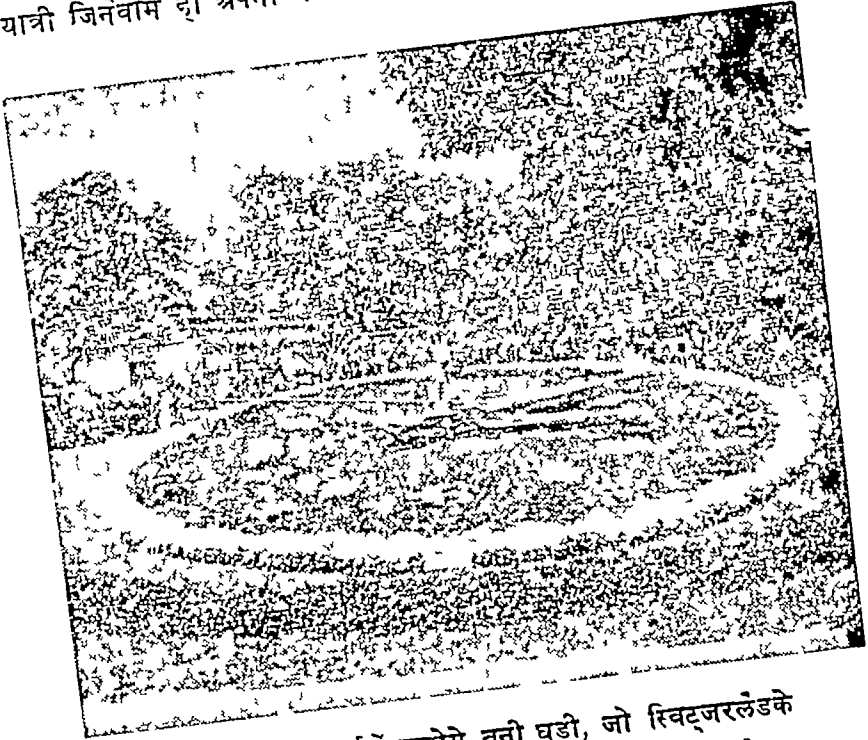
जिनेवाके एक पार्कमें फूलोसे बनी घडी, जो स्विट्जरलैंडके घडियोका देश होनेकी प्रतीक है। यह घडी बहुत ठीक समय बताती है।

हाथ और जेबघडीके अलावा यहा तरह-तरहकी टेबुल वाच और दीवार-घडिया मिलती है। इनमें इतनी विभिन्नता और वैचित्र्य होता है कि आप देखते ही रह जाय।

बडी देरतक घूम-फिरकर हम लोग विश्रामके लिए अपने होटल पहुचे और दूसरे दिन जिनेवा देखनेका प्रोग्राम बनाया।

सुबह दस बजे हम लोग ससारप्रसिद्ध यू० एन० ओ०का दफ्तर देखने पहुचे। वहा तो भीड ही लगी थी। जिनेवा आये हुए दुनियाके हर कोनेके व्यक्ति वहा पहुचे हुए थे। इस इमारतको दिखानेका भी बहुत वढिया इतजाम था। दस-दस मिनटपर गाइड २०–२५ एक भाषी-भाषी दर्शकों-को साथ लेकर इमारत और इसके कमरे दिखाने ले जाते थे।

हमारे पहुचते ही फाटकपर एक व्यक्तिने हमसे पूछा, "इग्लिश, फ्रेच, जर्मन, इटालियन ?" वह हर यात्रीको यू० एन० ओ०के सवधकी जानकारी करानेवाली पुस्तिका दे रहा था।

शर्माजीने कहा—"हिंदी प्लीज।" (हिन्दीकी दीजिये।)

"नो हिंदी प्लीज।" (हिन्दीकी नही है।)

शर्माजी विना कोई पुस्तिका लिये आगे वढ गये। मैंने अग्रेजीकी एक पुस्तिका ली। शर्माजीका यह रुख मुझे पसद नही आया। मैंने कहा, "यह क्या किया, शर्माजी ? क्या आपकी उपेक्षासे उस व्यक्तिका अपमान नही हुआ ?"

"उन्हे मालूम तो हो कि हिंदीकी भी माग ह। हम हिंदीकी माग नही करेंगे तो अग्रेजोंसे स्वतत्र होकर भी अग्रेजीके और इस प्रकार अग्रेजोंके ही खातेमे खतते रहेंगे। हिंदी तो दुनियाके एक पचमाशकी भाषा है। यदि दुनियाकी भाषा बननेकी किसी एक भाषामे शक्ति है तो वह केवल हिंदीमे है।"

शर्माजी दो वर्षमे लदनमें रह रहे है और वैरिस्ट्री पढ रहे है। हमारे प्रधान मत्री श्रीजवाहरलालजीके लदनमे हिंदीमे भाषण करनेपर उन्हे जो प्रतिष्ठा मिली, उसे वह देख चुके है। फिर भी पुस्तिका वाटनेवालेके प्रति उनका रुख मुझे वहुत कठोर लगा और उनकी आशा बहुत सशक्त।

यू० एन० ओ०का दफ्तर हमने देखा। निहायत आलीशान इमारत है।

सैकडो कमरे है, दर्जनो बडे हाल। प्रधान हाल भी देखा, जहा यू० एन० ओ० की मीटिंग होती है। इसकी दीवारें विख्यात कलाकारोने अपने चित्रोसे सुसज्जित की है। एक ओर युद्धकी विभीषिकासे पीडित मानव है, तोप-तलवारें टूटी पडी है और उनके बीच मानवता दबकर कराह रही है। दूसरी ओर शातिका सितारा उदित हो रहा है, जिसे स्त्री, पुरुष, बच्चे आशाभरी निगाहोसे निहार रहे है। सारा वातावरण बडा कलापूर्ण तथा आशादायक है। हर सीटपर रिसीवर लगे है, जिनके द्वारा भाषण चाहे जिस भाषामें हो रहा हो—इग्लिश, फ्रेच, रशियन, जर्मन और इटालियन इन पाचमेंसे किसी भी एक भापामें—सुना जा सकता है। बात यह है कि भाषणका अनुवाद भाषणकर्ताके साथ-साथ होता और प्रसारित किया जाता है।

यू० एन० ओ०के दफ्तरके निकट ही वर्ल्ड लेबर आर्गनाइजेशनका दफ्तर है। यह भी कम बडा नही है। यहा मजदूरोकी समस्यासे सबधित एक बहुत बडा पुस्तकालय भी है। यह सस्था मजदूरोसे सबद्ध विशेष कानूनोका अध्ययन करनेके लिए विद्यार्थियोको छात्र-वृत्ति भी देती है।

इन दोनो सस्थाओको देखते हमे शाम हो गई। सामने ही झीलका किनारा था और किनारेके निकट सुदर सडक। हम पैदल ही शहरकी ओर चले। झीलके किनारे-किनारे बहुतसे चायघर है, जहा इनके बागमें लोग बैठे चाय पी रहे थे और बच्चे वही बागमें किरायेपर मिलनेवाली घोडेकी गाडियोंसे खेल रहे थे। यहा बहुतसे घाट भी है, जहासे मोटर-बोटपर घूमने जाया जा सकता है और कई घाटोंसे कुछ बडे जहाज भी छूटते है, जो झीलके किनारेके स्थानोकी यात्रा एक और दो दिनमें कराते है। हमने भी मोटरबोटकी सवारी की। मोटरबोट उस पार हमें जिनेवा स्विमिंग क्लब ले गई, जहा सैकडो जवान लडके-लडकिया तैरनेकी विशेष पोशाक पहने नहा रहे थे, तैर रहे थे, ऊपरसे झीलमे कूद रहे थे और नाव खेनेका अभ्यास कर रहे थे। सारे वातावरणमे बडी चुहल थी, जैसे खुद जवानीने यह अखाडा जमाया हो।

यहा हमने नाव छोड दी और हम घाटपर कुछ देर बैठे नौकारोहणका दृश्य देखते रहे। इस समय तो सैकडो नावे झीलमे दौड रही थी। आगे बढ़े तो एक लवी चहारदीवारीका अहाता आया, जिसके अदर वहुतसे घर थे, वडा-सा फाटक। शर्माजीने एक राहीसे पूछा—

"यह क्या है ?" सौभाग्यवश वह अग्रेजी जानता था। वोला, "जिनेवाका सवसे सस्ता होटल।" और राही मुस्कराया, "क्यो, इसमें प्रवेश पानेका उपाय जानना चाहते है ?"

हमने कोई जवाव नही दिया तो वह खुद वोला, "मेरा छोडकर किसीका सिर तोड दीजिये, प्रवेश मिल जायगा।"

"तो यह जेल है। महाशय, हम आपका या और किसीका सिर नही तोडेगे, चिंता न करें।"

राहीने हमसे हाथ मिलाया और आगे वढ गया। आगे एक घाटका साइनवोर्ड देखकर हम ठिठक गये। वोर्डपर हिंदीमे लिखा था—"नदीकी सवारी।" इसे देखकर मेरे आश्चर्यका ठिकाना नही था और शर्माजीकी खुशीका।

"मोदीजी, मैंने कहा नही था कि हिंदी वढ रही है।"

मै इस वोर्डका फोटो लेने लगा तो किसीने मेरे कधेपर हाथ रख दिया। वोला, "आप इस वोर्डका फोटो क्यो ले रहे है ?"

"क्योंकि इसपर हमारी राष्ट्र-भाषा लिखी है।"

"आप पाकिस्तानी है ?"

"जी नही, हिंदुस्तानी। पर आप यह क्यों पूछ रहे है ?"

"यह वोर्ड मेरे घाटका है।"

"आप हिंदी जानते है ?"

उसने अपनी जेवसे एक कार्ड निकाला और उसपर कुछ लिखकर वोला, "पढिये।" नागरी अक्षरोमे लिखा था—'जाकी'।

"तो आप हिंदी जानते है ? कहां पढी ?"

"मैं ववईमें रहा हू। वहा मेरे मित्र हैं और उनके प्रेमकी स्मृतिस्वरूप मैंने अपने बोर्डपर भी हिंदी लिखी है।" अब तो वह हमें मुफ्तमें झील घुमानेके लिए तैयार हो गया। हमने अभी-अभी झीलकी सैर की थी, अत उसे धन्यवाद दिया और आगे वढे।
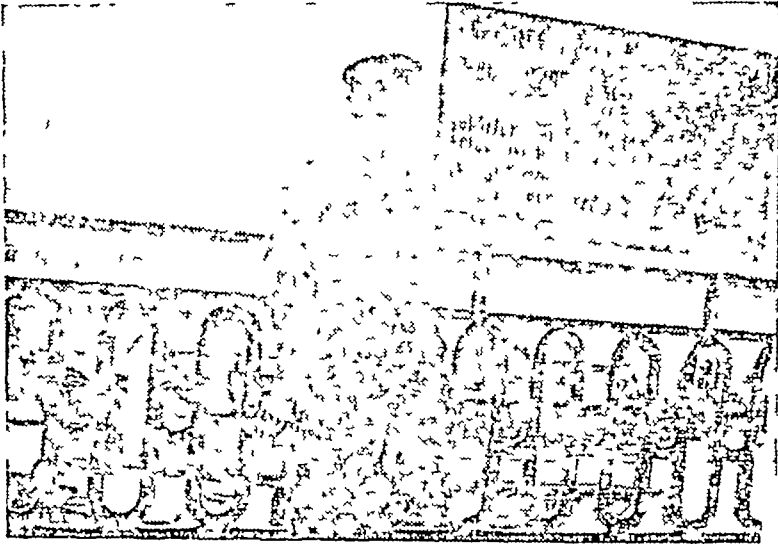
जिनेवा झीलके किनारे एक घाटका साइनवोर्ड—इसपर हिंदीमें 'नदोकी सवार' (सवारी) लिखा है।

झीलके पासकी इमारतोमें जो सबसे ज्यादा खूबसूरत है वह है एक इजीनियरकी कब्रपर बना एक छोटा-सा मकबरा। जिनेवाको खूबसूरत वनानेमें इस इजीनियरका बहुत वडा हाथ रहा है। बहुत-सी सडकें और यहाकी अनेक प्रसिद्ध इमारतें इस इजीनियरने ही बनाई थी। इस कार्यमें उसने धन भी बहुत कमाया। वह नि सतान था और अपनी यह कब्र वह स्वय वनवा गया था। लोगोको उम्मेद थी कि वह अपना सारा धन जिनेवा-

की सार्वजनिक सस्थाओंको दे जायगा, पर उसके मरनेके बाद जब उसकी वसीयत पढी गई तो पता चला कि उसने अपना सारा धन अपने दूरके सबधियोंको दे दिया है। वसीयतमे यह भी लिखा था कि मुझे मेरी बनाई हुई कब्रमें दफनाया जाय और मेरा सिर झीलकी ओर रहे। लोगोने सिरका अर्थ सिर ही लिया और इस प्रकार गाडा कि कब्रकी छतपर बना उसका पुतला झीलकी ओर नहीं, उसकी विपरीत दिशाकी ओर देख रहा है। बदला लेनेके जनताके भी ढंग निराले है!

: २२ :

अंगूरवालोंका मेला

जिनेवासे मै माट्रे एक मित्रसे मिलने रेलसे जा रहा था। दिनमें ह यात्रा की, जिससे रास्तेके दृश्य देखे जा सके। जिनेवासे माट्रेका दो घटेक रास्ता था। ज्यो-ज्यो जिनेवा दूर होता गया, आवादीकी जगहे कम होने लगी और पर्वत-शृखलाए और उपत्यकाए बढने लगी। एकाएक हमारी गाडी खेतोंमेंसे गुजरने लगी—हरे-हरे खेत, सुविस्तृत खेत! आखे जहातक देख सकती थी वहातक खेत-ही-खेत! खेतोमे एकरूपता ऐसी थी, जैसे सारी खेती किसी एक व्यक्तिने ही की हो। मुझे यह खेत मकोयके-से लग रहे थे। डेढ-दो हाथ ऊचे पौधे, पत्तिया खूब हरी। पर स्विट्जरलैंडमें मकोय कहा! पूछनेपर पता चला कि ये अगूरके वाग है और स्विट्जरलैंड-मे ये वाग अपने स्वादिष्ट अगूरोके लिए प्रसिद्ध है। यहाकी सुनहरी शराव वहुत ही स्वादिष्ट समझी जाती है। तभी ट्रेन खेतोंके विल्कुल नजदीक आ गई।

एकाएक एक पहाडी आई और उसकी ओट दूर होते ही जिनेवा झील प्रकट हुई। वायु मद-मद गतिसे वह रही थी। झीलपर उठती निर्मल स्फटिक-सी तरगोंसे सूर्यकी किरणे प्रमुदित खिलवाड कर रही थी। इतना सुदर जल, इतनी सुदर झील देखकर तृप्ति ही नही होती थी। पानीपर वहती इक्की-दुक्की नावे झील सुदरीके मुखपर तिल-सी प्रतीत होती थी।

झीलका दाया किनारा आया और किनारेसे ऊपर ऊचाईकी ओर उठते हुए मीलो लबे अगूरके खेत-ही-खेत थे। हमारी विजलीसे चलती ट्रेन

बिना ठहरे सुदर झीलको छोडती, तेजीसे ऊचाईकी ओर भागी जा रही थी और खेतके सारे अगूरके पौधे झीलकी ओर, झीलतक पहुचनेको आतुर दौडे जा रहे थे। प्राकृतिक सौदर्यमें इतना आकर्षण था कि जड चेतन हो उठा।

तभी गाडी धीरे-धीरे रुकी और लोजान आया। ऐसी भीड तो किसी छोटे स्टेशनपर नही होती—सैकडो युवक-युवतिया, एक-सी पोशाक पहने, सैकडो विद्यार्थी, स्काउट, अपनी माताओके साथ गुडियोकी तरह सजे बच्चे। ट्रेनके रुकते ही सभी धीरे-धीरे गाडीमें सवार हुए। बहुतसे हमारे डब्बेमें आये। मैंने अपने निकट बैठे एक युवकसे पूछा, "यहा इतनी भीड क्यो है ?" वह मेरी बात समझ नही सका। मेरे पुन पूछनेपर वह उठा और डब्बेमें कई व्यक्तियोसे बात करनेके पश्चात् एक युवतीको मेरे निकट बुला लाया। उसे अपनी जगहपर बिठाते हुए मुझे इशारा किया कि "इनसे पूछो।" मैंने युवतीसे वही प्रश्न किया।

"महाशय, अगला स्टेशन वेवे है, वहा यह सारी भीड उतर जायगी। वहा मेला हो रहा है।"

अब समझमे आया कि मेरे पडोसी युवकने स्वय अग्रेजी न जाननेके कारण अग्रेजी जाननेवाली लडकीसे मेरा परिचय कराकर मेरी सहायता की है।

"मेला ! कैसा मेला ?"

"यह अगूरवालोका मेला है। इस प्रदेशमे अगूर बहुत होते है और अगूर पैदा करनेवाले वेवेमे हर पच्चीस वर्षपर अगूर-पक्ष मनानेके लिए मेला लगाते है।"

"ऐसे कितने मेले हो चुके है ?"

"यह तीसरा है। आप पर्यटक प्रतीत होते है। मैं आपसे प्रार्थना करूगी कि आप यह मेला अवश्य देखे। आप मेला देखकर निश्चय ही प्रसन्न होगे।"

मैंने इस सूचना और सलाहके लिए उसे धन्यवाद दिया। तभी वेवे आ गया और भीड उतर पडी।

माट्रे पहुचनेपर ज्ञात हुआ कि हमें मेला दिखानेका कार्यक्रम मेरे मित्रने पहलेसे ही बना रक्खा है। दूसरे दिन आठ बजे हम वेवे पहुचे। छोटा-सा साफ सुथरा गाव, सीधी पक्की सडकें, पक्के मकान। इस समय तो सारा

वेवे गावका अगूरकी लतासे सजा एक चौराहा

गाव, हर सडक और प्रत्येक मकान फूल-पत्तो, झडियो तथा वदनवारोसे सजाया गया था—सजानेमें अगूरोको प्रधानता दी गई थी। गावके चौराहेपर एक विस्तृत लता एक खभेपर चढी हुई थी, जिसके बडे-बडे पत्ते और फुटबाल जितने बडे-बडे अगूर बिल्कुल स्वाभाविक रगके थे। मकान-के दरवाजोपर अगूरके गुच्छे लटक रहे थे। हर दुकानकी 'शो विंडो' में अगूर थे, जिनकी ताजगी और रग देखते ही बनता था। पता नही,

वे नीलमके बने नकली अगूर थे या डालसे तोडे असली, पर लगते असली ही थे।

मेलेकी जगह पहुचनेमे हमे कठिनाई नही हुई। भीड हमे स्वय वहा ले गई। मेला देखनेके लिए जिनेवा झीलके किनारे एक स्टेडियम बना था, जिसमे पचास हजार आदमी बैठ सकते थे। स्टेडियममे प्रवेश पानेके लिए हमने टिकट खरीदे और अपनी जगहपर जा बैठे। स्टेडियम रगमचके
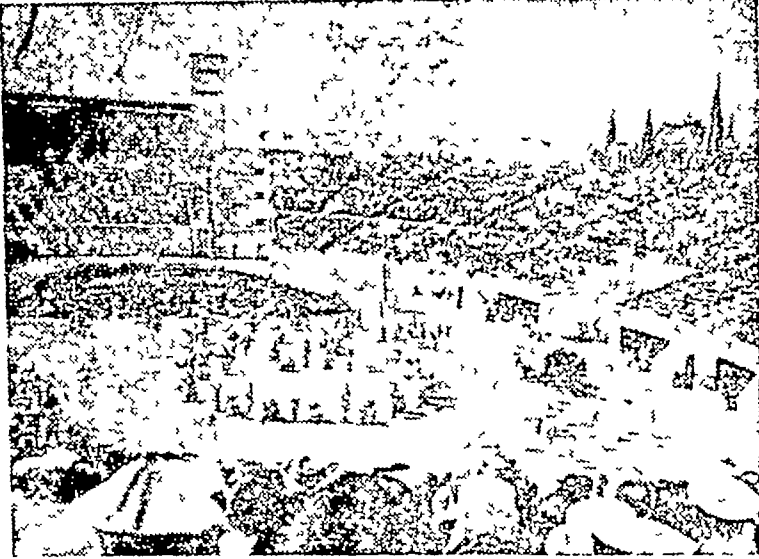
अंगूरवालोंका मेलेका स्टेडियम

इर्द-गिर्द लोहे और काठकी सीढियोका अडाकार बना था। इन सीढियोका उत्तरी और दक्षिणी भाग रगमचका ही भाग था। उत्तरी भागके निकट दोसौ व्यक्तियोका आर्केस्ट्रा था। धीरे-धीरे स्टेडियम खचाखच भर गया और नौ बजे खेल शुरू हुआ। एक ओरसे इस प्रातके हर गावके प्रतिनिधि निकले। उनके हाथोमें अपने-अपने गावके रग-बिरगे झडे थे। उनके पीछे यहाकी राष्ट्रीय पोशाकमे लगभग ढाईसौ महिलाए थी। पीछे वेवेके मेयर एक शानदार घोडेपर सवार थे और उनके पीछे थे बहुत-से घुडसवार

सिपाही। गावोके प्रतिनिधि अपने झडे ऊचे किये ऊपर स्टेडियमपर चढ गये और चारो तरफ फैल गये। स्टेडियममे सौंदर्यकी एक नई छटा फैल गई।

रगमचपर ऋतुओका नृत्य हुआ। पहले शरद् ऋतु आई। दो-ढाई-सौ व्यक्ति इसमें भाग ले रहे थे। उनके टोपका रग सफेद था, जो हिमका प्रतीक था, उसके नीचेका भाग नीला था और उसके नीचेका पहाडोंके रग-का।

इस ऋतुके विभिन्न दृश्य भी दिखाये गये—घोडे-गाडियोसे और पैदल यात्रा करनेवाले यात्री, कटते जगल, चीरी जाती हुई लकडिया। पुरुषोने टगुलिया लेकर नृत्य किया और आरा चलाते समय गाने गाये।

शरद्के बाद वसत आया। सूखे वृक्ष हरे हो गये। वसतके आगमनकी सूचना देनेके लिए फूलोंसे भरी टोकरिया लिये, फूलोंसे रग-बिरगे वस्त्र पहने लडकिया आई। उनके पीछे था वसतकी रानीका रथ—जो फूलो-से सजा था। वसतकी रानी पीत रेशमी वस्त्रका परिधान पहने थी। उनके रथके चारो ओर वैसे ही वस्त्र पहने महिलाओकी टोली चल रही थी।

अब अगूरकी बेलें खेतोमें दिखाई देने लगी। धीरे-धीरे बेले बढी, उनमें अगूर आये।

फिर ग्रीष्म ऋतुकी रानीका आगमन हुआ। उनके और उनकी परिचारिकाओंके वस्त्र गुलाबी थे। उनका चार बैलोका रथ गुलाबी और सफेद फूलोंसे सजा था।

स्त्रिया अगूर चुनने लगी। उन्हे ओखलीमें कूटकर रस निकाला गया और टकीमें भरा गया। बैलगाडिया वह रस लादकर गावोकी ओर चली और पीछे-पीछे खेतोमे काम करनेवाला प्रमुदित जनसमूह।

गायें खेतोमें चरने आ गई। उन्हे सभालनेवाले लाठी लिये गा रहे थे। भेडोंके रेवड आये, जिन्हे रखवालोंके साथ दौड-दौडकर भोकते हुए कुत्ते सभाल रहे थे।

• एक तरफसे हजारोकी तादादमे कबूतर छूटे, जो सारे स्टेडियमपर छा गये। जिधरसे वे निकले, उन्होने सूरजको ओटमे कर लिया।

गावमे लोग पहुच गये। वहा खेतसे आये गेहू पीसे गये। पुरानी पत्थर-की चक्की थी। अगूरसे शराब बनी।

अंगूरवालोके मेलेके कुछ अभिनेता

डेरीका दृश्य उपस्थित हुआ। गाये दुही गई। छेना बना। दूध और छेना टकियोमे भरा गया और उन्हे बैलगाडियोपर लादा गया।

इस प्रकार सारी ऋतुए और उनके दृश्य, गावोंके जन-जीवनपर पडनेवाला उनका प्रभाव, उस समय होनेवाले कार्यकलाप आदि प्रस्तुत किये गए। सारे दृश्य सत्रहवी सदीके थे। आज सारी कार्य-पद्धति वदल गई है, पर अतीतकी स्मृतियोको सुरक्षित रखनेके लिए लाखो रुपये और हजारो स्त्री-पुरुषोका श्रम इस मेलेमे लगता है। केवल रगमचपर भाग लेनेवाले एक हजार स्त्री-पुरुप और वच्चे थे। इस मेलेकी रचनामें पता नही, कितने हजार व्यक्ति उल्लासपूर्वक लगे होगे।

वारह वजे मेला समाप्त हुआ। वाहर अभिनेताओ और अभिनेत्रियोको लोगोने घेर लिया। जिस वेशमें उन्होने मेलेमें भाग लिया था उसी वेशमे ये अपने घर जा रहे थे। जिधरसे ये निकले, एक जलूस-सा वन गया। कैमरेवालोने इनका रास्ता जगह-जगह रोक लिया और लोगोने हजारो चित्र उतारे। कुछ मैने भी लिये।

शामको हम माट्रेमे झीलके किनारे एक भोजनालयमे वैठे भोजन कर रहे थे। अधेरा हो गया था, तभी दूर, वहुत दूर, आतिशवाजी छूटनेके दृश्य दिखाई देने लगे। भोजनालयकी सभी परिचारिकाए वाहर निकल-निकलकर आतिशवाजी देखने लगी। दो मील दूर यहासे वेवे था, जहा यह आतिशवाजी छूट रही थी।

वेवेमें सुवह हमने उल्लासपूर्ण वातावरणमे अगूरवालोका मेला देखा ा। यह आतिशवाजी देखकर लगा, वेवे अपनी खुशीमें अव भी हँस हा है।

: २३ :

स्विट्जरलैंडका गौरव

माट्रेमे हमारे साथ डाक्टर गोपाल कृष्ण सर्राफ आ मिले। उनकी इच्छा 'मैटरहार्न' जानेकी थी। हम तो वहा जानेको उत्सुक थे ही अत मैटरहार्न जानेका पूरा बानक बन गया। दूसरे दिन सुबह ही हमने वहा जानेका प्रोग्राम बनाया।

असलमे स्विट्जरलैंडमे सबसे ऊचा स्थान जहातक जाया जा सकता है 'ग्रोनरग्राड' है। यहाके लिए गाडी माट्रेसे जाती है। माट्रेसे जरमाटतक बडी लाइन है। आगे दो डब्बोकी पहाडी गाडी तीन पटरियोपर चलकर जाती है। गाडीसे ही दृश्य देखनेको मिलते है। काश वहातक बस जाती होती! पर ऐसी सडकोपर बसका चलना मुश्किल है। रेलकी एक बीचकी पटरी और बीचका पहिया दातीवाला होनेके कारण गाडीके रास्तेसे फिसलनेका डर नही रहता, अत रेलगाडीसे यह सीधी चढाई सभव हो सकती है।

जरमाटतक तो दृश्य जैसे हम पहले देख चुके थे करीब-करीब वैसे ही रहे, फिर भी हम इस छोटी लाइनपर कुछ नवीनकी कल्पना कर रहे थे, क्योकि हर जगह हमे कोई-न-कोई रोमाचकारी दृश्य अवश्य देखनेको मिला है, अत. यह आजकी यात्रा उसके विरुद्ध कैसे जाती!

जरमाटसे जो पहाडी गाडी चली तो दृश्य अधिक भव्य हो गये। कुछ तो छोटे-छोटे डब्बोवाली इस गाडीकी सवारी ही बडी अच्छी लग रही थी। उसमे हम अपनेको अधिकारी महसूस कर रहे थे। धीमी वह इतनी थी कि चलती गाडीपरसे आसानीसे उतरकर फिर चढा जा सकता था।

जरमाट छोडते ही बरफ दिखाई देने लगी। आसमानकी ओर जाती

हुई, पहाडकी चोटिया सीधी फिर उनकी शृखलाए और अनत शृखलाए जैसे चुनौती-सी दे रही हो कि हमें गिन लो तो जाने। देखो हमे कितना देखोगे।

जब हम ग्रोनरग्राड पहुचे तो ये चोटिया हमें अपनी-सी लगने लगी—सगी-सी, जैसे हम इन्हे देखने नही, इनसे मिलने आये हो। चोटियोके नीचे मक्खन-सी बरफ फैली थी, जैसे वह चलकर जरा विश्रामके लिए ठहर गई हो।
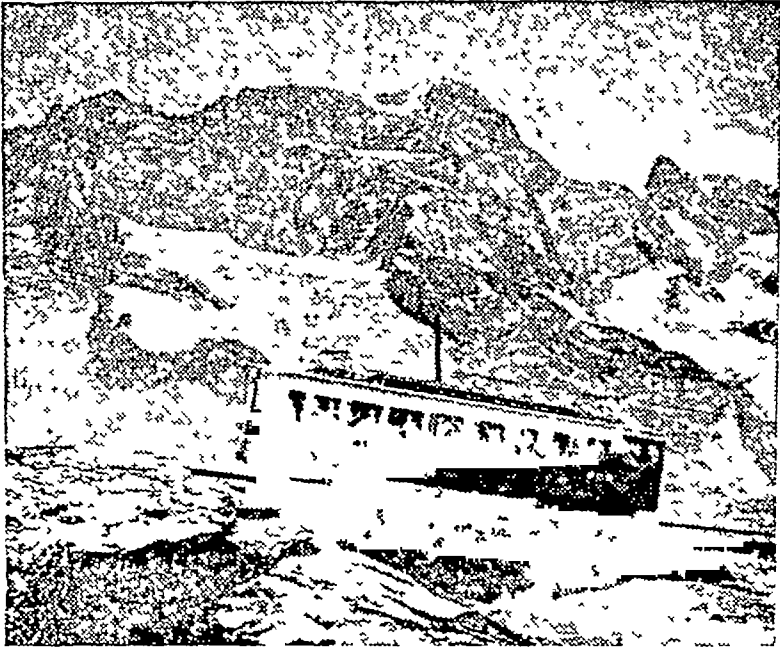
मैटरहार्न जाती हुई एक डब्बेकी गाडी

ग्रोनरग्राडकी ओर हम बढे तो हमारे और इन पहाडोंके बीच मीलो लबी-चौडी एक खाई थी। झाकनेपर वहा भी बरफ-ही-बरफ दिखाई दे रही थी। ऊपरसे बरफकी फूइया गिर रही थी। नीचेकी तरफ देखनेसे जी अघा नही रहा था। कितना आकर्षक निमत्रण था! जी चाहता

था कि अभी नीचे कूद पड़ूं, उड चलू। वहातक पहुचनेमे कितना गतिपूर्ण अनुभव होगा और उस सौंदर्यके निकट पहुचनेपर कितनी रसमय अनुभूति होगी। भावनाए इतनी तीव्र थी कि लग रहा था कि मै शरीरी नही, भावनाए हू, मेरे चारो तरफ, आगे, पीछे, नीचे भावना और कल्पना दोनो ही साकार बनी बैठी थी। हम वहासे आगे पगडडीसे दूसरे पहाड-

मैटरहार्न शृग
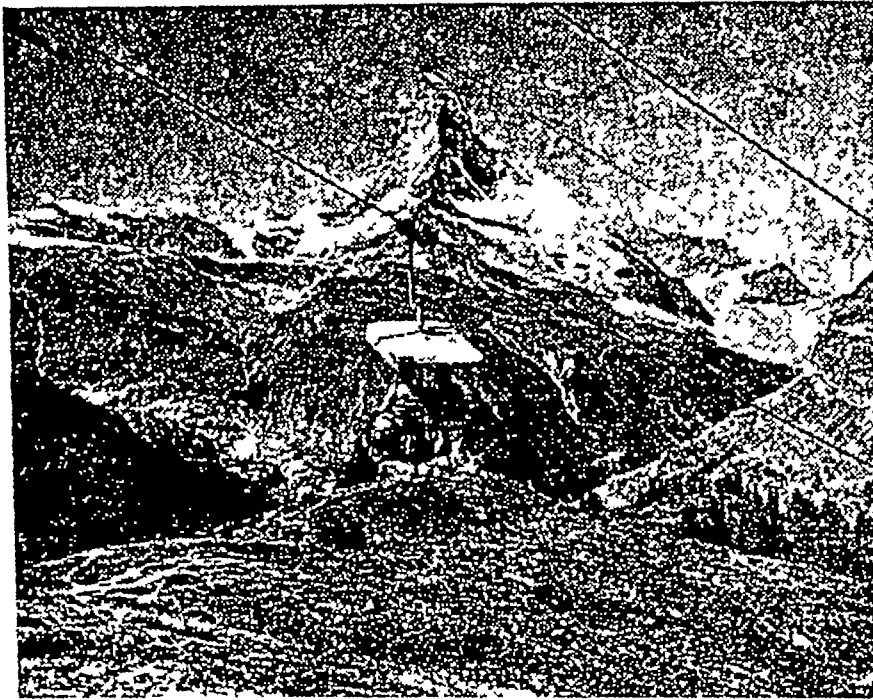
पर गये। सामने तो रास्ता भी बरफपर ही था, जो मैटरहार्नकी ओर जाता था। सामने मैटरहार्न खडा था। कुछ क्षणोके लिए बादल फटे और ऊचाईपर अकेला खड़ा मैटरहार्न चादीकी तरह चमकने लगा। कितना भव्य, कितना विशाल, कितना स्थिर जैसे युग-युगसे हमारी प्रतीक्षा कर रहा हो। लगा कि दौड़कर उसके पास पहुच जाय और अकमें भर लें,

पर मैटरहार्न हमसे बहुत दूर था। हम उसकी ओर चले भी, दौडे भी, पर जितना ही हम उसके निकट पहुचे वह हमसे दूर भागता गया। शिवकी जटापर सुशोभित चद्रकी तरह वह बहुत ही कमनीय लग रहा था। हम थोडी देरमें समझ गये, मैटरहार्न यो हमारे हाथमें आनेवाला नही है। हम उसे

'कुम' होटलके सामनेके मैदानमें दूरतकके
पहाडोंको देखनेके लिए रखी हुई दूरबीन

रुककर देखने लगे। उसे चलते-चलते देखनेसे रुककर देखना अधिक अच्छा लगा। देखकर तृप्ति ही नही होती थी, पैर आगे बढनेको जोर मार रहे थे। पैरो और आखोमें लडाई-सी होने लगी। आखे देख-देखकर अघाती नही थी और पैर इस बरफकी पगडडीपर चलकर अपनी गतिशीलताके गौरवका अनुभव करना चाहते थे। मन विशालसे विशालतर हो जाना चाहता था। कितना विराट् रूप उसके सामने था, जैसे कल्पना-विशालने इस विराट्की कल्पना की हो।

पर मनुष्यकी महत्त्वाकाक्षा भी कितनी विशाल है! वह किसीको सिर

उठाये देरतक देख नही सकता। उसे पददलित करनेकी उसकी इच्छा हो ही उठती है। मैंटरहार्न शृगकी इतनी ऊची अनीपर सन् १८५२ से १८६५ तक पहुचनेके अनेक अभियान हुए और इस १४७४० फुट ऊची चोटीपर सन् १८६५ की १४ जुलाईको विंपर नामक एक अग्रेज पहुच ही गया। अपने निकट ही स्विस आल्प्सकी लगभग १२६०० फुट ऊची पचास चोटियोके बीच खडा मैंटरहार्न बडा गौरवशाली लगता है।

पलोमे दो घटेका समय निकल गया, एक घटेमे वापसी गाडी जायगी—घडीने इस धक्केके साथ इस चोटीपर बने एकमात्र होटल 'कुम'की ओर हमे मोड दिया। होटलके सामनेके मैदानमे लोहेकी तिपाईपर एक बडी दूरबीन लगी थी, जिसमेंसे कुछ यात्री दूरके दृश्य देख रहे थे। जब मै उसके निकट पहुचा तो खटकी आवाज हुई और देखनेवाले दूरबीनसे दूर हट गये। दूरबीनसे दिखाई देना बद हो गया था। मैंने दूरबीनकी जेबमे एक-चौथाई फ्रेंक डाला और दूरबीनसे फिर दिखाई देने लगा। दूर, बहुत दूर तक बरफके पहाड-ही-पहाड दिखाई दे रहे थे, सारी घाटिया बरफसे पटी थी। उनके बीच बहुत दूरीपर कुछ घर दिखाई दिये तो मेरे आश्चर्यका ठिकाना नही रहा। वहा आदमी कैसे रहता है, पर इस सौंदर्यमे रहनेकी कल्पना जब मुझे हुई तो मै रोमाचित हो उठा।

होटलके डाइनिग हॉलमे हम जाकर बैठे तो डा० गोपालने चायका आर्डर दिया। जो लडकी हमारा आर्डर लेने आई थी इस आर्डरपर उसने जो उत्तर दिया वह हमारी समझमे नही आया, इसलिए वह बोलनेके साथ-साथ अपनी बात समझानेके लिए इशारेसे भी कहने लगी। उसका आशय था कि यहा लच मिल सकता है, चाय दूसरे कमरेमे मिलेगी। वह जर्मन भाषामे बोल रही थी। स्विट्जरलैंडके इस हिस्सेमे जर्मन ही बोली जाती है। वस्तुत स्विट्जरलैंडकी अपनी कोई भाषा है ही नही। यहा तीन भाषाए चलती है—फ्रेंच, जर्मन और इटालवी। फ्रासकी तरफके हिस्सेमे लोग फ्रेंच बोलते है, जर्मनीकी तरफके हिस्सेमे

जर्मन और नीचेके हिस्सेमें इटालवी। लडकी आगे-आगे चलकर हमे चायघरमें ले गई। चायघरमे भीड लगी थी। सामने कोनेकी तरफ एक टेबुलपर एक भारतीय महिला बैठी थी। उन्होने हमारी तरफ देखा। उनकी आखोमें निमत्रण था कि यदि हम चाहे तो उनके निकट बैठ सकते है। वहा कुर्सिया खाली थी, हम तीनो जाकर बैठ गये। उक्त महिलासे परिचय हुआ। आप है कुमारी स्वर्ण कौर, दिल्लीकी रहनेवाली। लदनमे रहकर राजनीतिपर अनुसधान कर रही है। जिनेवा लेबर वेलफेयरके वार्षिकोत्सवमे शामिल होने आई थी और वहीसे इस सौंदर्य-स्थलीका दर्शन करने आ गई है। यह जानकर कि यह सारी यात्रा उन्होने हिच-हाइ-किगद्वारा की है, हमारे कौतूहलका ठिकाना नही रहा।

"और आपने यह यात्रा अकेले की ?"

"जी हा, बिल्कुल अकेले।"

"यहा पहुचनेमे कितना समय लगा ?"

"केवल एक दिन—सुबह चली थी, चार जगह गाडी बदलनी पडी और शामको जरमाट पहुच गई।"

हिच-हाइकिग यूरोपकी अपनी चीज है। यात्री सडकके मोडपर अपना थोडा-सा सामान लिये खडा हो जाता है और पाससे जानेवाली कारको यदि उसमे जगह हुई तो रुकनेका इशारा करता है। कार रुक जाती है और यात्रीके गतव्य स्थानकी ओर जाती हुई हो तो उसे बिठा लेती है और जहातक उसे रास्तेपर ले जा सकती है ले जाकर छोड देती है। यात्री वहासे दूसरी कार पकडता है और इस प्रकार अपने गतव्य स्थान-तक पहुच जाता है। यह सेवा यहाके लोग बिल्कुल मुफ्त और खुशी-खुशी करते है और इससे अधिकतर फायदा विद्यार्थी ही उठाते है। यदि समय और थोडा धन हो तो सारे यूरोपकी यात्रा कर लेते है। इनके रहनेके लिए भी जगह-जगह सस्ते स्थान बने हुए है, जिनकी व्यवस्था हिच-हाइकरोकी मदद करनेवाली सस्थाए करती है।

"रास्तेमे आपके साथ कोई अशिष्ट व्यवहार तो नही हुआ ?"

यह प्रश्न मैं कर तो गया, पर फिर मुझे लगा कि इतने थोडे परिचयमे ही मुझे स्वर्णजीसे ऐसा प्रश्न नही करना चाहिए था, पर उन्होंने मेरे प्रश्नके बेढंगेपनका जरा भी खयाल नही किया। बोली—

"यह सब तो अपने यहा ही होता है। यहा तो गाडीमे पीछे बिठा लेनेके बाद लोग प्राय देखते भी नही और न बात करते है और यदि बात करते भी है तो बडी शिष्टतासे और उसका मकसद भी यात्रीकी सूचनाओं-द्वारा मदद करना ही होता है।"

डा० गोपालकी चाय आई और मेरा दूध। दूध ही खाद्य पदार्थोंमें यहा सबसे सस्ता है। दो प्याली चायके यहा जबकि सवा रुपये लगते है एक पौड दूध नौ आनेमे मिल जाता है। दूध एक बोतलमे था और बिल्कुल ठडा। मैंने उसे गरम कराया और उसे पीकर हम होटलके बाहर निकले। स्वर्णजी हमारे साथ थी। तभी एक आदमी दौडता-सा आकर मेरे सामने रुक गया। उसके कधेपर कैमरा लटक रहा था। उसने अपनी जेबसे एक फोटो निकाला और उसे हमारे सामने बढाते हुए बोला—

"यहा आप लोग मुझसे फोटो खिचवाइये। इस पार्श्वभूमिमे आप लोग बहुत सुदर लगेंगे।"

हा, सचमुच हमारे पीछे बरफसे ढकी पहाडिया चमक रही थी। कैमरा मेरे पास भी था, पर यहा फोटो लेनेके लिए हममेंसे जो फोटो लेता, वह चित्रके बाहर रह जाता, अत· मुझे उसका प्रस्ताव जचा।

"मूल्य ?"

"दस फ्रैंक।" (दस रुपया।)

मैंने एक फ्रैंक उसके हाथमे रक्खा और उसे अपना कैमरा देते हुए कहा, "लो उतारो।"

फोटोग्राफर मुस्कराया। उसने फ्रैंक अपनी जेबके हवाले किया और हमारी तस्वीर उतार दी।
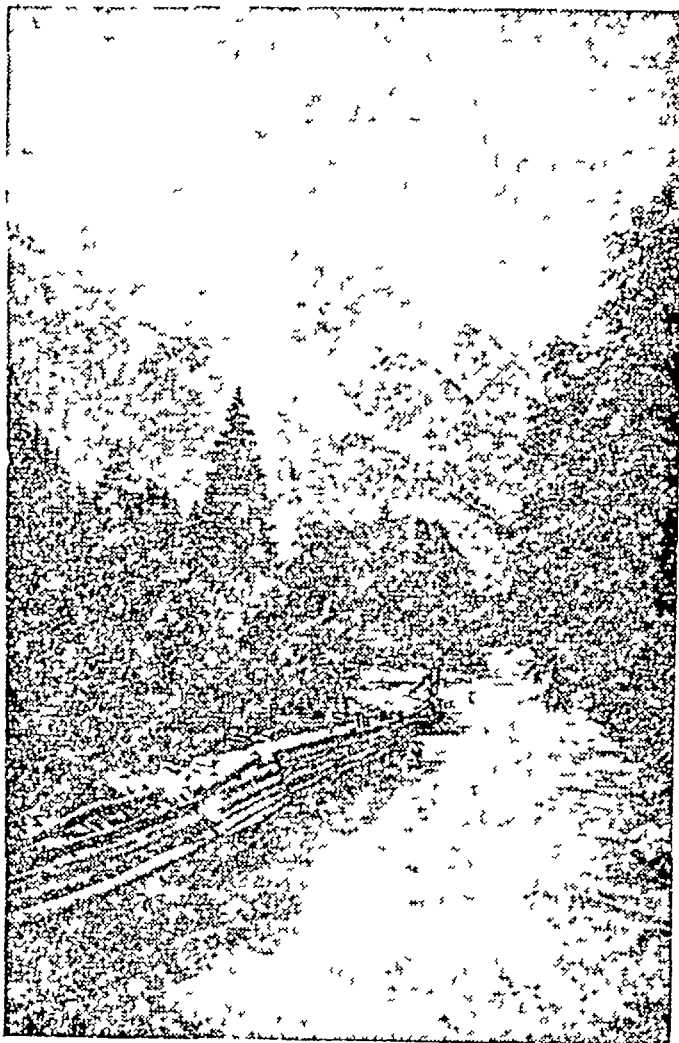
ग्रोनरग्राड नदी

स्टेशनपर गाडी खडी ही थी। हम बैठे और गाडी चल पडी। स्वर्णजी

हमें देरतक देखती और हाथ हिलाती रही।

गाडी जब चलकर ग्रोनरग्राड पहुची तो दिन ढल रहा था। हम यह गांव देखनेके लिए इधर-उधर घूमने लगे।

छोटा-सा गाव। एक ही मुख्य सडक थी, जिसके दोनो ओर थोडी-सी दुकानें थी, बाकी सारा गाव इधर-उधर पहाडियोपर बसा था। जगह जगह दो-दो चार-चार घर बने थे। घर कुल लकडीके बने थे, रगे-सजे दूरसे गुडियाके घरौंदे-से दिखाई दे रहे थे। गावके बीचमे एक छोटी-सी नदी अपने किनारोमें बधी तेजीसे बह रही थी। गावके एक छोरपर रोपवे-का स्टेशन था, जहासे नजदीककी पहाडियोपर पहुचकर मैटरहार्नके दर्शन किये जा सकते थे। गाव बडा ही शात, स्वच्छ और सुदर दृश्यावलीवाला था। लगता था, सारा गाव ही एक भव्य पार्कमे बसा है।

हमारी गाडीके चलनेका समय निकट आया तो हमने गावकी एक दुकानसे कुछ फल और मेवे खरीदे और माटे जानेवाली गाडीमे जा बैठे। गाडी जब चली तो काफी अधेरा हो गया था और बाहर अधकारके सिवा कुछ भी दिखाई नहीं देता था। मुझे काश्मीर याद आया और पहलगावसे अमरनाथकी वह घोडेपर की गई ३० मीलकी यात्रा। रास्ते-मे तीन दिन लग गये थे और दर्जनो बार उन आडे-टेढे, सकरे और पथरीले रास्तेपर मृत्युसे भेट हुई थी। वापस सकुशल लौटनेपर मैने इसे भगवानका अनुग्रह माना। उस रास्तेके दृश्योमे भी सौदर्य कम नहीं था, जो अभी हमने देखा था, उससे तो किसी तरह कम नहीं; पर मैटर-हार्नतक पहुचना कितना आसान था और अमरनाथतक पहुचना कितना कठिन! अमरनाथ पहुचनेके लिए जितना साहस आवश्यक था, मैटरहार्न-तक पहुचनेके लिए केवल धनकी जरूरत। सचमुच [illegible] और उद्योगी-करणमें भी इतना ही अंतर है।

: २४ :

प्राकृतिक चिकित्साकी जन्म-भूमि जर्मनीमें

स्विट्जरलैंडमे मैने केवल एक सप्ताह रहनेका कार्य-क्रम बनाया था, पर वह देश इतना सुदर लगा कि दो सप्ताह लग गये और मेरे भारत वापस आनेकी तिथि बहुत निकट आ गई। फिर भी जर्मनीमें प्राकृतिक चिकित्सा-की स्थिति समझनेकी तीव्र इच्छा थी—वह जर्मनी जहासे प्राकृतिक चिकित्सा चली है और जहा विंसेट प्रिसनिज, क्नाइप, लूई कूने, एडोल्फ जस्ट, आदि प्राकृतिक चिकित्साके सभी उन्नायकोने जन्म लिया और कार्य किया। हिंदुस्तानके कई व्यक्तियोंके जर्मनी जाने और लूई कूनेसे मिलने अथवा उनका कार्य देखनेके प्रयत्नकी कहानिया मै सुन चुका था। मैने राष्ट्रपति डा० राजेन्द्रप्रसादजीकी आत्मकथामे यह भी पढ़ा था कि वह गाधीजीके अनुरोधपर अपनी यूरोप-यात्राके दौरानमे जर्मनी गये थे और कूनेके पुत्रसे अपने दमारोगके निवारणार्थ चिकित्सा-क्रम भी लिखवाकर लाये थे। अत मैने यदि अधिक सभव न हो तो जर्मनीके कम-से-कम एक-दो प्राकृतिक चिकित्सकोंसे मिलनेका कार्य-क्रम बनाया।

इग्लैंड और स्विट्जरलैंडमें यह कई जगह ज्ञात हुआ था कि जर्मनीके बादन-बादन स्थानमे एक बहुत ही योग्य और अनुभवी प्राकृतिक चिकित्सक है और पश्चिमी जर्मनीके जो चिकित्सासबधी नकशे मिले थे, उनमें प्राकृतिक चिकित्साके स्थानोमे बादन-बादनको ही प्रधानता दी गई थी, अत बादन-बादन जाना ही मैने तय किया।

बादन-बादनके लिए जब मै बाजलसे चला तो खयाल था कि जर्मनी-मे इस समय भी सभवत गरीबी दिखाई देगी और मकानात टूटे-फूटे होगे,

पर जर्मनीमें प्रवेश करनेपर वहुत देरतक तो दृश्य स्विट्जरलैंड-जैसे ही रहे—खेतोमे अगूर-ही-अगूरकी लताए, सुदर प्राकृतिक दृश्य, पहाडिया और नदी-नाले। वस्तियोके निकटसे भी हमारी ट्रेन गुजरी। वहुतसे स्टेशनोपर भी वह रुकी, पर कही गरीवी, अवसाद या टूट-फूटका नामोनिशान नही था। जर्मनवासियो और उनकी वस्तियोको देखकर यदि कुछ अनुमान होता था तो यही कि इन लोगोने घोवीसे धुलवाकर कपड़े नही पहने है, वल्कि दर्जीसे नये वनवाकर पहने है। कितने अल्पकालमे इन्होने अपनी क्षति पूरी कर ली; नैराश्य, अवसाद, अपमान और विफलताको अपने दिल और देशसे निकाल फेंका।

वादन-वादन मे रातको आठ वजे पहुचा। पानी वरस रहा था, अत. स्टेशनके निकटके एक होटलमे जाकर ठहर गया। सुवह मैने वादन-वादन देखा। छोटा-सा गाव, इसे थोडी आवादीका आधुनिकतम शहर ही कहिये—दोनो तरफ पहाडिया, पहाडियोके वीचकी जगह सकरी, अतः शहर वहुत लवाईमे वसा हुआ, दो मजिलेसे अधिक ऊची कोई इमारत नही, इमारते दूर-दूर, वाजार भी वहुत घना नही, अत. वडा ही स्वच्छ और सारा शहर वहुत ही सुदर, पार्क इतने कि लगता था, जैसे सारा शहर ही पार्कोका हो।

आदमियोमे भी यूरोपके अन्य देशोके लोगोसे कुछ फर्क लगा। चेहरेसे अधिक विचारशील, अधिक गभीर, दिखावा कम, इग्लैंटकी तरह जवर-दस्तीका गौन नही, वोलते ही कम है।

होटलके मालिकने ही मुझे वादन-वादनके प्राकृतिक चिकित्सक डा० हैंस मारटेनका पता वता दिया और मैं उनके दफ्तरसे उनके मिलनेका समय निश्चित करके उनसे मिलने पहुचा। वैसे तो वादन-वादन ही वागमें वसा एक शहर लगता है, पर डा० हैंसका चिकित्सालय तो कुजोमे ही वना मिला—सडकके दोनो किनारोपर सघन वृक्ष और चारो तरफ हरियाली। टैक्सीसे मैं डा० हैंसके चिकित्सालयके सामने उतरा तो टैक्सी लेना व्यर्थ

लगा। इतनी दूर तो मैं पैदल ही आ सकता था और सभवत रास्तेके दृश्योको अधिक देख भी सकता था।

डा० हैन्स माल्टेन और उनकी पत्नी

डा० माल्टेन मुझसे बडे प्रेमसे मिले। ७० वर्षकी उम्र, ऊचा पहलवान-

सा शरीर, चेहरेपर गभीर अध्ययन, मनन और चिंतनकी रेखाए, होठोपर ऐसी मुस्कराहटकी रोशनी कि जिसपर पडे उसे अपना बना ले। उनकी मुस्कराहटका साथ मेरी मुस्कराहटने भी दिया और डा० माल्टेन मेरा हाथ पकडकर अपने निजी कमरेमे ले गये।

बात शुरू ही हुई थी कि मै समझ गया कि डा० हैन्स माल्टेनका अग्रेजीका ज्ञान इतना अल्प है कि इनसे बात करना मुश्किल है, फिर भी डा० माल्टेनकी कोशिश जारी थी। यूरोपमे मुझे हर जगह लगा और यहा तो विशेप रूपसे कि अग्रेजी सीखनेमे व्यर्थ इतना समय लगाया। यदि इसके बजाय जर्मन या फ्रेच सीखी होती तो अधिक लोगोसे बातचीत हो सकती थी। मैने कहा, "डाक्टर, जिस महिलाने मुझसे फोनपर बात की थी वह तो अच्छी अग्रेजी जानती है। यदि आप उन्हे बुला ले तो उनकी मार्फत हमारी बात मजेमें हो सकती है।"

"वह तो मेरी बहन ही है, पर वह भी अग्रेजीके पारिभापिक शब्दोंसे अपरिचित है, फिर भी उन्हे बुलाता हू।"

उक्त महिला आ गई और हमारी बात शुरू हुई। डा० हैन्स माल्टेन एलोपैथिक डाक्टर है। यह केवल मधुमेह और रक्तसचालनसबधी बीमारियोका इलाज करते है। लगभग पाचसौ रोगी इन्हे सालमे मिलते है और हर रोगी इनसे प्राय आठ सप्ताह चिकित्सा कराता है। ये रोगीको घरपर नही रखते। इनके यहा रोगी सुबह-शाम आते है और जलोपचार कराकर चले जाते है। भोजन इनके बताये अनुसार करते है। भोजनमे ये अपक्वाहारका अश अधिक रखते है, जिसमे फल और तरकारियोको प्रधानता देते है। मास, शराब, सिगरेटके यह विरुद्ध है। चाय, काफी कभी-कभी बता देते है।

मैने विषयपर आनेके लिए उनसे एक सीधा प्रश्न किया—"आप यहा किस चिकित्सककी पद्धति चलाते है ?"

"क्नाइपकी पद्धति।"

"कूने और जस्टका आपकी चिकित्सामें क्या और कितना स्थान है ?"

"हमारे यहा केवल क्नाइपकी पद्धति चलती है। यहा लोग कूनेका नाम भी भूल गये है। जस्टको तो कुछ लोग जानते है।"

फादर क्नाइप

मुझे बडा आश्चर्य हुआ कि जिन कूनेकी पद्धति हिंदुस्तानकी प्राकृतिक चिकित्साका आधार है, उन्हे यहाके लोग भूल गये है और क्नाइप, जिनकी चिकित्सा भारतमें बिल्कुल नही चलती, यहाके सर्वेसर्वा है। मैंने डा० माल्टेनको भारतकी स्थिति बतलाई।

"भारतमें तो कूनेकी ही पद्धति चलती है। केवल उनकी पुस्तकें पढकर लोग रोगियोकी चिकित्सा मजेमें कर लेते है।"

"पर उतना ज्ञान तो काफी नही है।"

"पर उनकी चिकित्सा एक तरहसे पूर्ण है, क्योकि उन्होने भोजनपर भी विचार किया है, जबकि क्नाइपने भोजनपर बिल्कुल विचार नही किया।"

"हा, भोजनपर उन्होने एक शब्द भी नही लिखा।"

"तो क्या विना भोजन-परिवर्तनके केवल जलोपचारसे रोग दूर किया जा सकता है ?"

"हा जरूर, पर भोजन बदलना भी उपयोगी है। जलोपचारके साथ रोगीको उचित भोजन भी मिलना चाहिए और रोगीको भोजनके सबधमें इसलिए भी बताना चाहिए कि वह तदुरुस्त हो जानेके बाद तदुरुस्त रहे।"

अब डाक्टरकी बहनने प्रश्न किया, "भारतमे तो लोग मास-मदिराका प्रयोग ही नही करते, आप भोजन क्या बदलते होगे ?"

मेरे लिए यह प्रश्न आश्चर्यजनक नही था; क्योकि भारतके सबधमे यहाकी यह आम धारणा मैने जान ली थी कि भारतीय पूर्ण शाकाहारी है, पर उन्हे यह कहा पता है कि जो शाकाहारी है वे भी शाकाहारी नही, विशेष रूपसे अन्नाहारी ही है।

"हम चीनी बद करवाते है, नमक कम करवाते है और रोगीके भोजनमे फल-तरकारियोकी मात्रा अधिक करवाते है। डा० हैन्स अपने रोगियोंके लिए भोजनकी कौन-सी पद्धति अपनाते है ?"

अब डाक्टरने ही जवाब दिया, "स्विट्जरलैंडके डाक्टर बिर्चर बेनरकी पद्धति। वह बहुत ही स्वाभाविक और वैज्ञानिक है।"

"डाक्टर केलागकी पुस्तक 'न्यू डाइटेटिक्स' आपने पढी है ? वह अमरीकी लेखक है। उनकी पुस्तक अग्रेजीमे है।"

"मैने उनकी कोई पुस्तक नही पढी। बिर्चर बेनरकी ही पुस्तके पढी है। उनकी सभी पुस्तकें जर्मनमे है। कुछ पुस्तके फ्रेंचमे भी अभी प्रकाशित हुई है। अमरीकी लेखकोमें मैने केवल गाइलाड हासरकी पुस्तकें पढी है, पर उनमें कोई दम नही है।"

बिर्चर बेनरकी भोजन-पद्धतिका परिचय मुझे स्विट्जरलैंडमें उनके चिकित्सालयमे मिल चुका था, अत. अब मेरी जिज्ञासा डा० हैन्ससे उनके

उपवाससवधी विचार जाननेकी हुई । मैंने पूछा, "उपवासको अपना चिकित्सामे आप कोई स्थान नही देते ?"

"उपवास वहुत कठिन चिकित्सा है। हा, हम धूप-चिकित्साको अवश्य स्थान देते है और रोगीको खूब टहलाते है ।"

"प्रतिदिन कितने मील ?"

"एकसे बीस मीलतक । हा, यहासे थोडी दूरपर एक उपवासविशेषज्ञ है। वह केवल उपवासद्वारा रोगियोकी चिकित्सा करते है ।"

डा० हैन्सने मुझे उक्त विशेषज्ञका पता लिखकर दे दिया, पर मैं उनसे मिल नही सका । मैंने उनसे अब जर्मनीमें प्राकृतिक चिकित्साकी स्थिति समझनेके लिए पूछा, "जर्मनीमें कितने प्राकृतिक चिकित्सक है ?"

मेरा यह प्रश्न सुनकर उन्होने एक फाइल निकाली और उसमेंसे मुझे एक कागज दिखाते हुए वोले, "केवल इस सस्थाके छ सौ चिकित्सक सदस्य है। वे सभी मेडिकल डाक्टर है । सभी प्राकृतिक चिकित्सा नही करते, पर उसमे विश्वास करते है। इनकी कान्फरेन्स यहा २८ अगस्तसे ३ सितम्व तक होगी, जिसमें प्राकृतिक चिकित्साके शिक्षणार्थ व्याख्यान होगे। आप उस समय रहे तो वडा अच्छा होगा ।"

"पर मैं तो जर्मन जानता नही, इससे लाभ कैसे उठा सकूगा ?"

मेरा यह जवाव सुनकर डाक्टर चुप हो गये । फिर मैंने अपना प्रश्न वढाया, "आपके यहा प्राकृतिक चिकित्सापर पत्रिकाए निकलती है ?"

"जी हा, कई निकलती है । 'हिपोक्रेटिस' डाक्टरोंके लिए है। साधारण जनताके लिए कई पत्र प्रकाशित होते है ।"

मैंने दो-तीन ऐसी पत्रिकाए उनके प्रतीक्षालयकी मेजपर देखी थी, जिनमें 'कास्मस' भी थी। मुझे लगा कि इसका सबध प्रसिद्ध कास्मोथिरैपिस्ट एडमाड जेकलेसे है, पर पूछनेपर पता चला कि इसका सवध एडमाड जेकलेसे नही है । यहाके लिए यह विषय अपना और पुराना है ।

"जलोपचारपर कोई वृद्धि नही हुई ? कुछ अन्य पुस्तकें लिखी गई ?"

"क्नाइप काफी है ।"

उनकी बहनने बताया कि मेरे भाईने एक लिखी थी, जिसका सस्करण बहुत पहले समाप्त हो चुका है । ये उसका सशोधन कर रहे है, पुस्तक जल्द छपेगी ।

मैने जलोपचारपर डाक्टरसे कई प्रश्न किये, पर भापामे यहा पारिभाषिक शब्द होनेके कारण वह समझ नही सके । इसके जवावकी उन्होने एक बढिया युक्ति निकाली । वह बोले, "एक जलोपचार आप मुझसे लीजिये । वोलिये, तैयार है ?"

मै आज सुवह ही नहाकर आया था । यहा जिस दिन नहाओ, दो रुपये लगते है । फिर भी मैने डाक्टरसे कहा, "जरूर, मै स्नान करूगा ।"

उनकी वात मेरी समझमे वहुत नही आई थी । मेरा कुछ ऐसा भी खयाल हुआ था कि यह जलोपचार लेनेको नही, बल्कि जलोपचार देखनेको कह रहे है । खैर, डाक्टर मुझे नीचे अपने साथ चिकित्सालयमें ले गये । वहा एक व्यक्तिसे उन्होने मुझे जलोपचार देनेको कहा । वह थोड़ी अग्रेजी जानता था । कपडे उतारकर तौलिया पहन लेनेपर वह मुझे एक कमरेमें लिवा गया, जहा उसने मुझे एक टेबुलपर लिटाकर सामने और पीठकी ओर दो वार एक-एक मिनट अल्ट्रावायलेटरेज दी और फिर स्नानागारमें ले गया ।

स्नानागार दस गज लवा, पद्रह गज चौडा बडा कमरा था, जहा क्नाइप-पद्धतिके तीन लंवे टब और कई पैर रखनेके लिए काठकी नादे थी । वहां चार-पांच व्यक्ति नांदमे पैर रक्खे वैठे थे । मुझे एक कुर्सीपर विठाकर एक नादमें पैर रखनेको कहा गया । पानीकी गरमी असह्य थी, अतः उसे सहने लायक वनानेके लिए उसमें दो वार ठडा पानी मिलाना पडा । पैर नांदमें दस मिनट रक्खे होगे । इस समयमे दो वार मेरे पैर वाहर निकल-

वाकर उनपर खूब ठंडा पानी आधा-आधा मिनट डाला गया और नादमें अधिक गरम पानी मिलाया गया।
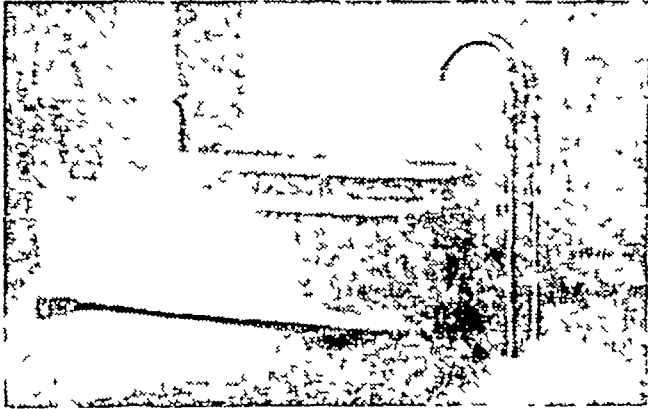
डा० माल्टेनके उपचार-गृहका एक टब

डा० माल्टेनके उपचार-गृहका दूसरा दृश्य

डाक्टर वही मौजूद थे। मैंने कहा, "डाक्टर, क्नाइपने तो गरम जलके अधिक प्रयोगकी बात नही कही है।"

"उस समय गरम जलकी सुविधा अधिक नही थी (अर्थात् इस प्रकार कल दबाते ही गरम-ठडा पानी लेनेकी विधिका प्रचलन नही हुआ था)। हम यहा गरम जलका प्रयोग ठडेकी प्रतिक्रिया अधिक हो, इसलिए करते है।"

दस मिनट बाद मुझे एक चौकीपर खडाकर सामने सहारेके लिए एक कुर्सी रख दी गई। पहले पीठपर हलका गरम पानी फुहारेसे डाला गया, फिर सामने। आधे-आधे मिनटपर मै घूमता रहा। पानी कुल सात-आठ मिनट डाला गया होगा। फिर ठडे पानीका फुहारा दो-तीन मिनट चला और अतमे ठडे पानीकी मोटी धार रीढपर, सिरपर और सामने बडी आतकी जगहपर डालकर नहान समाप्त कर दिया गया।

डाक्टरने कहा, "यह हमारा स्टैंडर्ड ट्रीटमेट है, जो हम रोगीको प्रतिदिन दो बार देते है।"

उसी कमरेमे मैंने नादसे पैर निकाल लेनेपर गरम पानीके टबमें भी एक रोगीको लिटाते देखा था।

मै कपडे बदलकर कमरेसे बाहर निकला तो एक महिला मिली। बोली, "मै श्रीमती हैन्स माल्टेन हू। चलिये, आपको चिकित्सालयका धूप-चिकित्सा-गृह दिखा दू।"

मै उनके पीछे हो लिया। वह मुझे दो मजिलेकी छतपर लिवा गई, वहा चारो ओर आदमीके सिर जितनी ऊची दीवार थी और बीस आदमियोके लेटने जितनी जगह। उन्होने वहा एक गद्दा बिछाकर दिखाया कि इसपर हर रोगी यहा धूप हो तो एक घटा लेटता है। उस समय बदली थी, अत. वहा कोई रोगी नही था। एक तरफ बीच दीवारपर गजभर चौडा तख्ता लगा था, जिसमे रोगीके लेटनेपर धूप सिरपर और छातीपर न लगे।

मै नीचे आया तो डाक्टर फिर मिले। उन्होने मुझे अपनी पुस्तक फैक्टोरिस' भेंट की और मैंने डाक्टर और उनकी पत्नीसे विदा ली।

चिकित्सालयके सामनेकी सघन कुंजोंसे ढकी सड़कपर मैं पैदल ही अपने होटलकी ओर चला। इस समय मैं जलोपचारसे आई ताजगीको तीव्रता-से महसूस कर रहा था और सोच रहा था कि क्नाइपकी पुस्तक 'माई वाटर क्योर' हिंदीको कैसे जल्द-से-जल्द मिल सकती है।

: २५ :

उपसंहार

जर्मनीसे चलते समय मेरा खयाल था कि हम ८–१० घटेमें रोम पहुच जायगे, पर यह यात्रा २२ घटेकी निकली। सुवह ६ वजे चलकर हमने ११ वजे जर्मनी और शामको ७ वजे स्विट्जरलैंड पार किया। वाजलसे हमे इटलीकी ट्रेन पकडनी थी, जो रात १० वजे चलकर सुवह ७॥ वजे रोम पहुच रही थी। रातको सोनेके तिरपन रुपये टिकटके मूल्यसे अतिरिक्त लग रहे थे, पर अव यात्रा शेष हो रही थी और रुपये थोडे रह गये थे। यात्राके अतके पहले ही रुपये समाप्त न हो जाय, इस डरसे हमने रात वैठकर ही काटना तय किया। जगह हमें एक ऐसे डव्वेमे मिली, जिसमे एक युवक, उसकी पत्नी तथा दो वच्चे और दो युवतिया थी, जो आपसमे वहन-सी लगती थी। हम दोके आनेपर पूरे आठ हो गये। वैठते ही शर्माजीको याद आया कि उनके पास मिठाई तो है ही नही। वे मिठाई लेनेको वाहर भागे। मिठाई इस सारी यात्रामे दोस्ती जोडनेका, मुस्कराहट पानेका, अच्छा साधन वनती रही है। किसीको प्रेमसे मुस्कराते थोडी-सी मिठाई दो, वच्चे, जवान, वूढे सभी हँसकर और कृतज्ञतापूर्वक यह उपहार लेते है। मिठाई मिठाईके खयालसे नही, वल्कि उसके पीछे जो सहृदयता रहती है उसके लिए लेते है, मुस्कराते है, धन्यवाद देते है। मिठाई स्वीकार करना वात करनेकी भूमिका भी है। जो वात नही करना चाहता वह मिठाई स्वीकार नही करता, पर ऐसा होता वहुत कम है। शर्माजीने लौटकर आते ही सवको मिठाई दी। सवने ली। सवसे दोस्ती जुड गई। वाते होने लगी, पर वात हो क्या ? हमारे अतिरिक्त कोई भी तो अग्रेजी नही

आनुर्ती था। युवक दस-बीस शब्द अंग्रेजीके जानता होगा, अत. सारी बातें इशारोमें हो रही थी। युवकने बताया, मैं इंजीनियर हू। मैंने उसके बच्चेकी नब्ज पकडकर बताया कि मैं यह अर्थात् चिकित्सक हू। मेरा मित्र बैरिस्टर है, यह बतानेके लिए मैंने दो हाथोमें हथकडिया पहनाकर शर्माजीसे खुलवा दी, पर वे लोग समझ नही सके। समझानेके लिए कोर्ट, जज, ला आदि बहुतसे शब्द कहे, पर वे समझे नही।

दोनो युवतियोने भी अपना परिचय दिया। छोटीने अपना नाम मेरिंडा बतलाया और बतलाया कि वह एक दफ्तरमे काम करती है और उसकी बडी बहन एक पुलिसके अधिकारीसे ब्याही है और ये दोनो रोमा जा रही है। रोमा (रोम) तो हम भी जा रहे थे। इटलीमे रोमको रोमा कहते है और इटलीको इटालिया। अंग्रेजोने सब जगहोंके नाम अपनी सुविधाके लिए बिगाड लिये है और वही हमारे लिए सही हो गये है। बडा सतोष हुआ कि यात्राके अततकके लिए दो साथी मिले।

धीरे-धीरे बारह बजे। लोगोको झपकी आने लगी और अपनी जगहपर बैठे-बैठे सोनेका प्रयत्न करने लगे। जगह गद्देदार, आरामकुर्सी-की तरह बडी ही आरामदेह थी। मुझे भी नीद आ गई। सुबह ६ बजे नीद खुली तो शर्माजीको जगाया। ट्रेनके बाहरके दृश्योको देखकर हमने अनुमान किया कि हम लोग रोम पहुचनेवाले है। सात बजे हम लोग रोमकी सीमामे पहुच गये। मेरिंडा खुशीसे 'रोमा-रोमा' चिल्ला उठी। मेरिंडा एक बच्चेको लेकर खिडकीके पास खडी हो गई और वह उसे खेतोमें चलते हल, कुए, झोपडिया और पशु दिखाने लगी। यह सारा दृश्य यूरोपके अन्य देशोंसे बहुत भिन्न है। यह सब कुछ तो हिंदुस्तान-जैसा ही लगा। रोमका स्टेशन आ गया और मुझे याद आया वह प्रश्न, जो मुझसे स्कूलके पाचवें दरजेकी परीक्षामें भूगोलके प्रश्न-पत्रमें पूछा गया था। उसमें हिंदुस्तान और इटलीकी तुलना करनेको कहा गया था और मैंने लिखा था कि दोनो देशोके उत्तरमे बहुत ऊचे-ऊचे

पहाड है, दोनो देशोके तीन तरफ पानी है, दोनो देशोमे विभिन्न जलवायु-वाले अनेक प्रदेश है, दोनो देशोमे खरबूजे होते है और दोनो देशोके स्त्री-पुरुषोके बाल और आखे काली होती है। अब हमने समझा कि नीली आखे और भूरे बाल हमें कितने अरुचिकर लग रहे थे और काली आखें और काले लबे बालोंके प्रति हमारा कितना स्नेह है, और इटलीके खरबूजे तो हम फ्रासकी सीमामे प्रवेश करनेके बादसे ही खाते आये है। पेरिसमे एक खरबूजा चार रुपयेमे मिलता था, स्विट्जरलैडमे तीन रुपयमे, जर्मनी-मे दो रुपयेमे और अब वही उसके जन्मस्थान इटलीमे एक रुपयेमे मिल रहा था।

रोमका स्टेशन पेरिसके स्टेशनसे भी भव्य था। स्टेशनसे निकलते ही सामान हमने स्टेशनके क्लोक रूममे छोडा और होटल खोजने निकले। एक-दो स्टेशनके सामने ही देखे, पर वे पसद नही आये। हमे डाक देखनेकी जल्दी हो रही थी। पद्रह मिनटके अदर ही हमने एयर इडियाका दफ्तर खोज लिया, जहा हमारी डाक रक्खी थी। वहा यह भी ज्ञात हुआ कि मुझे कल शामको ही हिंदुस्तान जानेवाले जहाजमे जगह मिली है। एयर इडियाके दफ्तरके लोगोकी सहायतासे नजदीकके एक साफ होटलमें हमे कमरा मिल गया और हम दो दिनतक घूम-घूमकर रोम देखते रहे। हमे यह कहावत ठीक ही जान पडी कि 'रोमका निर्माण एक दिनमें नहीं हुआ था।' जरूर ही इसके बननेमे हजारो वर्ष और बहुत अधिक परिश्रम लगा होगा। सचमुच रोम ऐतिहासिक इमारतोका अजायबघर है। सारा रोम ही अजायबघर है। बडे-बडे गिर्जे, सडके, चौराहे, पार्कोमे बडी-बडी मूर्तिया, बडे-बडे थियेटर, फुहारे और अनेक अजायबघर भी है। रोम नगरके बीचमे पोपका नगर, नगरके अदर नगर, नगर ही नही सत्ता भी—पोपकी अपनी पुलिस, अपना डाक-टिकट और अपने कायदे-कानून है। यह सब अजायबघर ही है न!

रोममे इमारते कई तरहकी है, पर लगता है, रोमनोने सैकडो वर्षो-

तक गिर्जोके बनानेमे ही सारी शक्ति लगाये रक्खी और गिर्जे ही रोमकी सारी स्थापत्यकला, मूर्तिकला और चित्रकलाका संगम-स्थल बने। सारी कारीगरीको देखकर लगता है कि रोमनोने कलामे सुकुमारतासे अधिक विशालताको महत्त्व दिया। साम्राज्यवादी थे न रोम-निवासी, कभी सारे यूरोपपर उनका अधिकार था। विस्तारने विशालताका वरण किया और सारी कला शक्तिका प्रतीक बनकर रह गई।

दूसरे दिनकी शाम आई और मै शर्माजीके साथ रोमके हवाई अड्डे-पर पहुचा। शीघ्र ही वह जहाज अड्डेपर पहुचा, जो हिंदुस्तानके लिए उडनेवाला था। जहाजसे यात्री नीचे उतरे और हवाई अड्डेके विश्रामालय और दुकानोमे फैल गये। वहा मैने देखा, एक भारतीय युवक एक दुकानसे इटलीमे बना सामान खरीदनेमे दत्तचित्त है। उसने कुछ सामान खरीदा और थामस कुक ऐंड सनके नोटोकी एक मोटी गड्डीमेसे एक नोट निकाल-कर दाम चुकाये तो मेरे मुहसे निकल ही गया, "ताज्जुब है, आप इतने रुपये यात्राके खर्चसे बचा लाये।"

"मै ऐसी जगह गया था, जहा रुपये खर्च हुए ही नही। रास्तेमे जो मिल जाता, ट्रामका टिकट खरीदता, सैर कराता, नाश्ता कोई कराता और भोजनके लिए कोई पकडता।"

मै सोच ही रहा था कि ऐसा देश रूसके अलावा और कौन हो सकता है कि उक्त युवकने कहा, "इसके अलावा बहुतसे रुपये तो मुझे थोडा-सा लिखनेसे मिल गये।"

"तो आप रूस गये थे, आपका शुभ नाम?"

"जी हा, मै रूस ही गया था। मुझे जाफरी कहते है, सरदार जाफरी, और आप?"

"मै हू विट्ठलदास मोदी।"

"ओहो, मोदीजी!"

हम कभी मिले नही थे, पर नाम सुनते ही हमे ऐसा लगा कि एक-दूसरे-से हम वर्षोसे परिचित है।

"वडा अच्छा है, आपसे भेट हो गई। मेरी सीटकी बगलमे एक जगह खाली है, मै चलकर वह आपके लिए रोकता हू। आप धीरे-धीरे आये। हम लोग जमकर वात करेगे।"

धीरे-धीरे जहाज छूटनेका वक्त आया। मैने शर्माजीसे विदा ली। यूरोपकी सारी यात्रामे वह मेरे साथ रहे, इग्लैडकी यात्रामे वह मेरे वडे-से-वडे मददगार रहे। वडी आनदमय हमारी यात्रा रही, इसका अधिकाश श्रेय शर्माजीकी जिदादिली और उनके स्नेहमय व्यवहारको है। उनसे विछुडते वडी तकलीफ हो रही थी। सोच रहा था कि कितना अच्छा होता कि शर्माजी भी मेरे साथ हिदुस्तान चलते, पर उन्हे तो लदन लौटकर अपनी पढाई पूरी करनी थी। जहाज उडा, मै खिडकीसे शर्माजीको देख रहा था। वह अपना रूमाल हिला रहे थे। मुहपर उनके हृदयकी पीडा प्रतिबिंबित हो रही थी। मेरे मनमे भी इस विछोहकी टीस कम न थी।

रातको ग्यारह वजे काहिरा आया। मै और जाफरीसाहव वातोमे इतने मग्न थे कि पता ही नही चला कि पाच घटे कैसे गुजर गये। जाफरीसाहवने रूसके अपने अनुभव सुनाये और मेरे यूरोपके अनुभव सुने। मुझे उनकी जिदादिली वडी पसद आई। हर प्रसगको वह वडे रसके साथ सुनाते थे और हर चीजको सुनकर उसपर अपनी राय जरूर प्रकट करते थे।

काहिरासे जहाज दो वजे चला। दो घटे तो हमने घडीमें वढाये और एक घटा और जहाज वहा रुका। जहाजके उडते ही हमने सोनेकी तैयारी शुरू की और इस खुशीमे कि सुवह हिदुस्तान पहुचनेवाले है, शीघ्र नीद आ गई। सुवह उठे तो सात वजे थे। एक घटा मुह-हाथ धोने और नाश्ता करनेमे लगा, पर इसके वाद वक्त कटता ही नही था। जहाज-के ववई पहुचनेमे तीन घटेकी देर थी। अपना देश वडी तीव्रतासे याद

आ रहा था, पत्नी, बच्चों, सबंधियो तथा मित्रोंके चित्र बार-बार सामनेसे फिर जाते थे।

"कहिये मोदीजी, मेरी बीबी हवाई अड्डेपर आयेगी या नही?"

"क्यो, आपको शक क्यो हो रहा है?"

"मैने रोमसे आर्डिनरी तार भेजा था, एक्सप्रेस भेजना चाहिए था।"

"रोमसे हिंदुस्तान कितने तार जाते होगे। आपका तार आपके घर रातको ही पहुच गया होगा और आपकी पत्नी हवाई अड्डेपर आपका स्वागत करती आपको जरूर मिलेंगी।"

मैने समझा कि मेरी और जाफरीसाहबकी मानसिक दशा भिन्न नही है।

मैने वक्त काटनेके लिए कागज-कलम निकाला और कुछ लिखनेमें लग गया। लीजिये, जहाजमें लाल बत्ती जल गई, कमरमें पेटी बाधनेकी सूचना मिली और यह लीजिये हमारा जहाज बबईकी जमीनको, हमारे हिंदुस्तानकी पवित्र भूमिको, छू रहा है। जहाज अपने पहियोपर हवाई अड्डेपर दौड रहा है, उसकी गति धीमी हो रही है। लीजिये जहाज रुक गया। मेरे मुहसे निकला—'जय भारत! जय हिंद!'